मध्यप्रदेश स्कूल लीडरशिप अकादमी

(SCERT M.P.)

सफलता की कहानी

प्रधानाध्यापकों के प्रशिक्षण पश्चात विद्यालय में हुये सार्थक बदलाव की कहानियाँ

(संग्रह वर्ष 2021 - 22)

E-FLIP BOOK-2



राज्य शिक्षा केन्द्र, स्कूल शिक्षा विभाग मध्यप्रदेश

निर्देशन

श्री धनराजू एस. (आईएएस),
संचालक
राज्य शिक्षा केन्द्र, स्कूल शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश शासन

मार्गदर्शन

श्री ओ.एल. मण्डलोई
अपर संचालक, राज्य शिक्षा केन्द्र, स्कूल शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश शासन

श्री एफ.ए. जामी
यूनीसेफ शिक्षा विशेषज्ञ, भोपाल

श्री प्रकाश देव, शिक्षा विशेषज्ञ, राज्य शिक्षा केन्द्र, मध्यप्रदेश शासन
श्री अतुल डनायक, नियंत्रक शिक्षक शिक्षा, राज्य शिक्षा केन्द्र, मध्यप्रदेश शासन

समन्वय

श्री उस्मान खान
नोडल अधिकारी, म.प्र. स्कूल लीडरशिप अकादमी एवं नियंत्रक शिक्षक प्रशिक्षण,
राज्य शिक्षा केन्द्र, स्कूल शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश शासन

सम्पादन

डॉ. प्रमिला सिंह
समन्वयक शिक्षक प्रशिक्षण, राज्य शिक्षा केन्द्र, मध्यप्रदेश शासन

सह-सम्पादन

श्री आयुष चौबे, तकनीकी विशेषज्ञ, राज्य शिक्षा केन्द्र, मध्यप्रदेश शासन
श्रीमती नेहा मगरदे, तकनीकी विशेषज्ञ, राज्य शिक्षा केन्द्र, मध्यप्रदेश शासन

फिलिप बुक निर्माण विशेषज्ञ दल

श्री राकेश देवांग, श्री मुन्नालाल शर्मा, श्री अश्विनी त्रिपाठी, ज्योति भाटिया, श्रीमती करिश्मा बाजपेई, श्रीमती शीतल शर्मा, श्री सुरेन्द्र सिंह भदौरिया, श्री शैलेन्द्र आचार्य, श्री सज्जाद अहमद कुरैशी, श्री हरीश मारण, श्री ताज फराज़ खान

सहयोगी सदस्य

सुश्री अजंली, सुश्री ममता, सुश्री साक्षी (पीरामल फाउंडेशन)
श्री फिरोज़ (अजीम प्रेमजी फाउंडेशन)
श्री सुमनदास गुप्ता (पीपल संस्था)

प्रधानाध्यापक - सह - कहानी लेखक

श्री गजेन्द्र नागदौने (बालाघाट), श्री विमल कुमार बचकैया (नरसिंहपुर), श्रीमती गीता जुगनार (भोपाल),
श्री ए.के. पाठक (भोपाल), श्रीमती शबनम खान (भोपाल), श्री केशरी चन्द्र डेहरिया (सिवनी), श्री केशरी प्रसाद तिवारी (रीवा),
श्री कल्याण सिंह परमार (सीहोर), श्री मुकेश चौहान (रायसेन), श्रीमती अनिता जैन (आगर-मालवा), श्री राकेश सिन्नरकर (कटनी),
श्री आर. डी. चौधरी (कटनी), श्री संतोष कुमार विश्वकर्मा (शहडोल), श्री सुरेश कुमार ठाकुर (देवास),
श्री प्रकाश चंद खटीक (हटा दमोह), श्री रामस्वरूप चौरसिया (हटा दमोह), श्री चन्द कुमार जैन (हटा दमोह),
श्री गणेश बारस्कर (बैतूल), श्री दिलीप कुमार साहू (सागर), श्रीमती नलीनी वायलेट, राज (होशंगाबाद), श्री बाबूलाल मालवीय
(शाजापुर), श्री वैभव तिवारी (शाजापुर), श्री मनमोहन विश्वकर्मा (राजगढ़), श्रीमती ममता शर्मा (राजगढ़),
श्री राकेश भटनागर (शिवपुरी), श्री प्रशांत श्रीवास्तव (गुना), श्री राजीव कुमार शर्मा (गुना)

लेआउट एवं ग्राफिक डिज़ाईनिंग

श्री ज़ाकिर हुसैन

संदेश

प्रिय साथियो,

विद्यालय स्तर पर बच्चों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना विभाग का मुख्य उद्देश्य है। इस उद्देश्य की पूर्ति में प्रधानाध्यापकों की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस दिशा में शाला में पदस्थ प्रधानाध्यापक द्वारा विभिन्न आवश्यकताओं के अनुसार बच्चों के शिक्षण अधिगम, समाज एवं पालक से सहसंबंध स्थापित करने एवं मूलभूत आवश्यकताओं, नवाचार में विभिन्न प्रयास किये गये हैं। जिसे सफलता की कहानी के रूप में लिखा गया है।

नीपा (NCSL) द्वारा निर्धारित प्रक्रिया और मापदंडों के आधार पर 27 सफलता की कहानियों को चिन्हांकन उपरांत संकलित करके **डिजिटल फिलिप बुक - 2** तैयार की गई हैं। जो प्रधानाध्यापक नेतृत्वकर्ता के विभिन्न आयामों, विद्यार्थियों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, टीम भावना एवं विद्यालय नेतृत्व में सामंजस्य, विद्यार्थी संकेन्द्रित करना, शिक्षण में नवाचार, अधिगम के लिए समाज, विद्यालय का सहसंबंध, विद्यालय एवं तकनीक के विकास पर आधारित है। जिसके परिणाम स्वरूप इनके विद्यालय में कई सार्थक बदलाव हुए हैं। इन सभी बदलावों को मध्यप्रदेश की जरूरतों के अनुरूप तथा नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में प्रस्तुत करने का एक सार्थक प्रयास हैं।

आशा है कि लीडरशिप आधारित **डिजिटल फिलिप बुक - 2** में संकलित ये कहानियां हमारे शिक्षकों के लिए प्रेरणादायी होंगी। इस उपयोगी दस्तावेज के निर्माण के लिए, श्री ओ.एल.मण्डलोई अपर संचालक के मार्गदर्शन में स्कूल लीडरशिप अकादमी म.प्र. की पूरी टीम, सभी विशेषज्ञ यूनिसेफ एवं सहयोगी अशासकीय संस्थाओं के सभी सदस्यों को धन्यवाद।

शुभकामनाओं सहित !

धनराजू एस.
संचालक
राज्य शिक्षा केन्द्र

आमुख

विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना और उनका सर्वांगीण विकास हमारा लक्ष्य है। इस लक्ष्य पूर्ति में प्रधानाध्यापकों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। मध्यप्रदेश में राज्य शिक्षा केंद्र ने इस दिशा में पिछले कुछ वर्षों में शिक्षा की गुणवत्ता सुधार हेतु कई कदम उठाए हैं। राज्य में शिक्षक शिक्षा प्रणाली को मजबूत करने पर विशेष ध्यान दिया गया है। जिसके तहत राज्य शिक्षा केन्द्र एस.सी.ई.आर.टी, अंतर्गत स्थापित लीडरशिप अकादमी म.प्र.द्वारा राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान दिल्ली, नीपा, राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व विकास केंद्र, एन.सी.एस.एल और राष्ट्रीय लीडरशिप अकादमी के सहयोग से वर्ष 2015 से लगातार सरकारी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को नेतृत्व क्षमता संवर्धन के उद्देश्य से गहन रूप से प्रशिक्षित किया गया है जिससे वे अपने विद्यालयों को उत्कृष्टता के केंद्र में रूपांतरित कर सकें।

पूर्व वर्ष में राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा प्रत्येक जिले से 1700 कहानियां प्राप्त की गई थीं। जिसमें से 70 श्रेष्ठ कहानियों को चयनित किया गया। उनमें से वर्ष 2019-20 में प्रथम चरण में 33 कहानियों को संकलित करके फिलिप बुक - 1 तैयार की गई जिसे एनसीएसएल नीपा द्वारा वेबसाईट पर अपलोड किया गया इसी क्रम में द्वितीय चरण में वर्ष 2021-22 में प्रधानाध्यापक, शिक्षकों द्वारा अपनी शाला में लीडरशिप अंतर्गत विभिन्न आयामों के तहत शिक्षकों के सहयोग से जो बदलाव किये गये चाहे वो विद्यार्थियों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से हो, दलीय भावना एवं विद्यालय नेतृत्व में सामंजस्य, विद्यार्थी संकेन्द्रित करना, शिक्षण में नवाचार, अधिगम के लिए समाज , विद्यालय का सहसंबंध, विद्यालय की आवश्यकता अनुसार तकनीक का विकास। जिसके परिणाम स्वरूप विद्यालय में कई सार्थक बदलाव हुए हैं। इन बदलावों को शिक्षकों द्वारा सफलता की कहानी के रूप में लिखा गया है। ये कहानियां राज्य स्तर पर आयोजित दो कार्यशालाओं में शिक्षकों द्वारा स्वंय किये गये बदलावों को अपनी जुबानी संचालक राज्य शिक्षा केन्द्र श्री धनराजू एस. (आईएएस), शिक्षा विशेषज्ञ श्री प्रकाश देव, शिक्षा विशेषज्ञ यूनिसेफ श्री एफ.ए. जामी, नीपा से राज्य लीडरशिप अकादमी डॉ. चारू स्मिता मलिक, नियंत्रक एससीईआरटी श्री अतुल डनायक एवं नियंत्रक शिक्षक प्रशिक्षण श्री उसमान खान, प्रशिक्षण सलाहकार डॉ. प्रमिला सिंह एवं राज्य लीडरशिप कोर समूह के समस्त सदस्य एवं जिलों से उपस्थित विभिन्न डाईट के सदस्य एवं शिक्षकों के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। इन विद्यालयों में आये सार्थक बदलाव को 27 कहानियों में संकलित करते हुए फिलिप बुक - 2 तैयार की गई है।

कहानियों को नीपा की गाईडलाईन अनुसार डॉ. चारू स्मिता मलिक एवं शिक्षा विशेषज्ञ श्री प्रकाश देव के मार्गदर्शन में लीडरशिप अकादमी की कोर टीम के सदस्यों द्वारा कोविड-19 महामारी जैसी विषम परिस्थितियों में अथक परिश्रम से शिक्षकों से सतत् संवाद/संपर्क बनाते हुए अंतिम रूप प्रदान किया गया है।

ये 27 कहानियाँ डिजिटल फार्म में फिलिप बुक-2 के रूप में तैयार हैं। इन कहानियों को मूर्त रूप प्रदान करने में श्रीमती नेहा मगरदे एवं श्री आयुष चौबे तकनीकी सलाहकार, पीरामल फाउंडेशन से अंजली, ममता, साक्षी के विशेष सहयोग से सार्थक प्रयास कर अंतिम रूप प्रदान किया गया। उपरोक्त समस्त कार्य में यूनिसेफ का विशेष सहयोग प्राप्त किया गया है। जिसमें शिक्षा अधिकारी यूनिसेफ श्री एफ.ए. जामी धन्यवाद के पात्र हैं।

आशा है कि ये सफलता की कहानियाँ शालाओं में कार्य करने वाले शिक्षकों/प्रधानाध्यापकों के लिए प्रेरणास्त्रोत होंगी एवं हिन्दी भाषी राज्यों के लिए भी उपयोगी होंगी।

शुभकामनाओं सहित !

ओ. एल. मण्डलोई
अपर संचालक
राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

अनुक्रमणिका

सत्र	विषय	पृष्ठ संख्या
	अकादमिक संवर्धन	
1.	**शाला नेतृत्व से अकादमिक बदलाव** शासकीय माध्यमिक शाला, टेमनी, विकासखंड-लांजी, जिला-बालाघाट	09
2.	**बगिया से बदलाव** शासकीय माध्यमिक विद्यालय, हर्राखेड़ा, विकासखंड-बैरसिया, जिला-भोपाल	15
3.	**सशक्त विद्यालय के प्रेरणा स्रोत** शासकीय माध्यमिक शाला, सिमरोदा, विकासखंड-औबेदुल्लागंज, जिला-रायसेन	22
4.	**ज्योमिति का जादू** शासकीय सरदार पटेल उ. मा. वि., दमोह, विकासखंड-दमोह, जिला-दमोह	27
	नामांकन में वृद्धि एवं ठहराव	
5.	**बच्चों के बढ़ते कदम सरकारी स्कूल की ओर** शासकीय प्राथमिक शाला, कड़वी, विकासखंड-छपारा, जिला-सिवनी	36
6.	**प्रोत्साहन से मिली सफलता** शासकीय माध्यमिक शाला मार्तण्ड क्रमांक 1, रीवा, विकासखंड-रीवा, जिला-रीवा	42
7.	**आनंददायी वातावरण** शासकीय माध्यमिक विद्यालय, सलैया, विकासखंड-फंदा नया शहर, जिला-भोपाल	48
8.	**शिक्षक का जादुई सामंजस्य** शासकीय माध्यमिक विद्यालय, सुईगांव, विकासखंड-नलखेड़ा, जिला-आगर मालवा	56
9.	**अभिव्यक्ति विकास की पहल** शासकीय माध्यमिक विद्यालय, खड़ौला, विकासखंड-कटनी, जिला-कटनी	62
10.	**टीम वर्कके साथ विद्यालय में बढ़ी उपस्थिति** शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या उ.मा. विद्यालय, विकासखंड-हटा, जिला-दमोह	66
11.	**बाल कैबिनेट से विद्यालय में अभूतपूर्व सुधार** एकीकृत शासकीय माध्यमिक शाला, जमुनिया गौड़, विकासखंड-जैसीनगर, जिला-सागर	71

विद्यालय में सामुदायिक सहभगिता से बदलाव

12. **सामाजिक समरस्ता** 79
शासकीय माध्यमिक विद्यालय, अटठ्ायसा, विकासखंड-चावरपाठा, जिला-नरसिंहपुर

13. **समुदाय की सहभागिता** 84
शासकीय माध्यमिक विद्यालय, बावड़ियाकला, विकासखंड-फंदा नया शहर, जिला-भोपाल

14. **समुदाय के सहयोग से उपस्थिति में वृद्वि** 90
शासकीय माध्यमिक विद्यालय, टीकर, विकासखंड-विजयराघवगढ़, जिला-कटनी

15. **समुदाय की सक्रिय सहभागिता** 95
शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय, जमुई, विकासखंड-सेहागपुर, जिला-शहडोल

16. **सहयोग से बदलाव** 101
एकीकृत शासकीय माध्यमिक विद्यालय, सामरसिंगा, विकासखंड-बमौरी, जिला-गुना

विद्यालय में वातावरण बदलाव से आनंददायी शिक्षण

17. **शाला की बदलती तस्वीर** 108
शासकीय प्राथमिक शाला, समरतढाना, विकासखंड-आमला, जिला-बैतूल

18. **विद्यालय का बदलता हुआ परिवेश** 116
एकीकृत शासकीय उमावि, तानपुर प्राथमिक (खंड), विकासखंड-शिवपुरी, जिला-शिवपुरी

19. **सबसे सार्थक बदलाव** 121
शासकीय माध्यमिक विद्यालय, भोपालखेड़ी, विकासखंड-मो. बड़ोदिया, जिला-शाजापुर

विद्यालय में तकनीकी का प्रयोग

20. **तकनीक बनी शिक्षा की सीढ़ी** 129
शासकीय माध्यमिक विद्यालय, गेहूंखेड़ी, विकासखंड-नरसिंहगढ़, जिला-राजगढ़

बालिका शिक्षा से सशक्तिकरण

21 **बेटी पढ़ाओ** 139
शासकीय माध्यमिक विद्यालय, तारारोड़ा, विकासखंड-होशंगाबाद, जिला-होशंगाबाद

22 **शिक्षा से मिली समानता** 146
शासकीय माध्यमिक विद्यालय, रघुनाथपुरा, विकासखंड-खिलचीपुर, जिला-राजगढ़

एसएमसी की सहभागिता से बदलाव

23. **समुदाय के सहयोग से बढ़ा नामांकन** 154
शासकीय उत्कृष्ट माध्यमिक शाला, नावघाट, विकासखंड-हटा, जिला-दमोह

विद्यालय में सी डब्लूएसएन विद्यार्थियों का समावेशन

24. **दिव्यांग विद्यार्थियों का समावेशन** 159
शासकीय माध्यमिक विद्यालय क्र.-3, देवास, विकासखंड-देवास, जिला-देवास

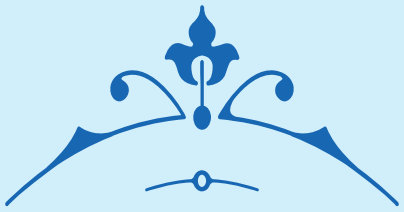
नवाचार

25. **म्यूजियम एवं अन्य नवाचारी शिक्षण** 166
शासकीय माध्यमिक शाला, फूडरा, विकासखंड-आष्ठा, जिला-सीहोर

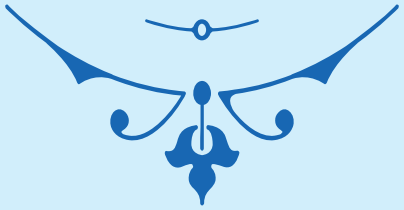
26. **शून्य निवेश पर आधारित, नवाचार के अंतर्गत** 170
शासकीय माध्यमिक विद्यालय, नांदासुरा, विकासखंड-शुजालपुर, जिला-शाजापुर

आस पास की खोज योजना अंतर्गत शिक्षण

27. **आसपास की खोज द्वारा शिक्षण में सुधार** 182
शासकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय, बजरंगगढ़, विकासखंड-गुना, जिला-गुना



अकादमिक संवर्धन



शाला नेतृत्व से अकादमिक बदलाव

शासकीय माध्यमिक शाला, टेमनी

यू-डाईस कोड : 23450807204

- विकासखंड : लांजी
- जिला : बालाघाट
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 1 - विद्यार्थियों के लिए शिक्षण, अधिगम प्रक्रिया

उप डोमेन क्र. 1 - विद्यालय की समस्त प्रक्रिया में शिक्षक की सहभागिता

इस विद्यालय की समस्त प्रक्रिया में शिक्षक, समुदाय एवं विद्यार्थियों की सहभागिता से बच्चों की उपस्थिति तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बदलाव को जानने व समझने के लिए किए गए विभिन्न प्रयासों को हम अगले पृष्ठों पर पढ़ेंगे....

पृष्ठभूमि :

मध्यप्रदेश राज्य के जिला मुख्यालय बालाघाट से 53 कि.मी. एवं विकासखण्ड मुख्यालय लांजी से 14 कि.मी. दूरी पर ग्रामीण अंचल ग्राम टेमनी में स्थित है 'शासकीय माध्यमिक शाला टेमनी'। शाला का प्रांरभ वर्ष 1885 है। शाला भवन अक्षांश 21.55 एवं देशांतर 80.88 पर स्थित है। ग्राम की कुल जनसंख्या 5370 है, जिसमें पुरूष 2655 व महिला 2715 हैं। इस गांव के मध्य से बहती है जीवनदायिनी 'सोन नदी'। सोन झारिया जाति समुदाय के लोग पत्थरों को छानकर सोना निकालते हैं। ग्राम के उत्तरी छोर से वनांचल लगा हुआ है। नदी के किनारे कछारी भाग होने से सब्जी एवं गन्ने की खेती की जाती है। यहां की मुख्य फसल धान और गन्ना है। अधिकांश लोगों की कृषि पर निर्भरता एवं मजदूरी के कारण आर्थिक स्थिति कमजोर है। आय के साधन ज्यादा नहीं होने से अधिकांश लोग कृषि कार्य समाप्त होने के पश्चात रोजी रोटी की तलाश में शहरों की ओर पलायन कर जाते हैं। लोगों की वार्षिक आय अनुमानित पचास हजार से डेढ़ लाख तक ही है। ग्राम में अन्य पिछड़ा वर्ग के 90 प्रतिशत तथा अनु. जाति, अनु. जनजाति, सामान्य वर्ग के 10 प्रतिश्त लोग निवास करते हैं। ग्राम के निवासियों द्वारा होली, दीपावली, पोला, भुजलियां आदि पर्व मनाये जाते हैं।

सत्र 2019-20 में शाला में कक्षा 6वीं से 8वीं तक अध्ययनरत विद्यार्थियों की दर्ज संख्या 230 है, जिसमें 131 बालक एवं 99 बालिकाएँ हैं और यहाँ 6 शिक्षक हैं । ग्राम में 8 शासकीय प्राथमिक शालाएं, 1 शासकीय माध्यमिक शाला, 6 आंगनवाड़ी केन्द्र, 2 के जी वन से लेकर आठवीं कक्षा तक अशासकीय माध्यमिक शालाएं, 1 अशासकीय प्राथमिक शाला, 1 शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला कक्षा 9 से 12 तक संचालित है। ग्राम में उपडाकघर, उपस्वास्थ्य केन्द्र, आयुर्वेदिक औषधालय एवं ग्राम पंचायत भी है ।

समस्या :

- विद्यार्थियों के शिक्षण अधिगम स्तर में कमी के कारण विद्यार्थियों की दक्षताओं का पर्याप्त विकास न हो पाना।

समस्या समाधान की प्रक्रिया :

विद्यालय नेतृत्वकर्ता गजेन्द्र कुमार नागदौने द्वारा यूनिसेफ के सहयोग से राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा आयोजित 'प्रधानाध्यापकों का नेतृत्व क्षमता विकास प्रशिक्षण'में भाग लिया गया। प्रशिक्षण नीपा (NIEPA) द्वारा विकसित लीडरशिप करिकुलम पर आधारित था। श्री नागदौने ने प्रशिक्षण में सीखे ज्ञान और कौशलों को अपनी शाला की समस्याओं के समाधान हेतु इस्तेमाल किया । जिसमें प्रमुखता से मजबूत व श्रेष्ठ पक्षों को और मजबूती प्रदान करना तथा सुधार के क्षेत्र में बदलाव के लिए निरंतर पहल करना शामिल था । जिसके लिए हर समस्या पर योजनाबद्ध तरीके से काम किया गया।

- **समस्या : विद्यार्थियों के शिक्षण अधिगम स्तर में कमी के कारण दक्षताओं का पर्याप्त विकास न हो पाना -**

विद्यालय द्वारा कक्षा 6वीं से 8वीं तक के विद्यार्थियों का ग्रेड परीक्षण (बेसलाइन टेस्ट) किया गया।

A ग्रेड - 81 - 100 प्रतिशत	**B ग्रेड - 61 - 80 प्रतिशत**	**C ग्रेड - 46 - 60 प्रतिशत**
D ग्रेड - 33 - 45 प्रतिशत	**E ग्रेड - 33 - से कम**	

जिससे पता चला कि शाला में A ग्रेड 20, B ग्रेड 32, C ग्रेड 50, D ग्रेड 62 और E ग्रेड 66 विद्यार्थी थे। यहाँ विद्यार्थियों में अधिकांश विद्यार्थी D एवं E ग्रेड में थे जिनके सीखने का स्तर बहुत ही कम था। जिस कारण विद्यार्थियों के अधिगम

स्तर में जो बदलाव आना चाहिए वह बदलाव नहीं आ रहा था। इसके कारणों के विश्लेषण से पता चला कि इसका प्रमुख कारण शाला में बच्चों का नियमित उपस्थित न होना तथा पर्याप्त संख्या में गणित और अंग्रेजी विषय के शिक्षकों का उपलब्ध न होना था। साथ ही शिक्षक नवीन प्रविधि से अध्यापन कार्य में प्रशिक्षित भी नहीं थे।

इसके लिए इस शाला के अंतर्गत आने वाली समस्त प्राथमिक शालाओं के शाला प्रभारी तथा शिक्षकों से शैक्षणिक संवाद स्थापित कर समय-समय पर शालाओं में भ्रमण किया गया। शिक्षण कार्य में विभिन्न प्रविधियों का प्रयोग करने एवं समूह में कार्य करने तथा ' D ' एवं ' E ' ग्रेड के छात्रों पर विशेष ध्यान देने के लिए प्रोत्साहित किया गया ।



कौन बनेगा विजेता कार्यक्रम में पुरस्कार प्राप्त करती छात्र।

विद्यार्थियों की दक्षताएं बढ़ाने के लिए विषयगत शिक्षकों के सहयोग से एक विशिष्ट कार्यक्रम 'कौन बनेगा विजेता' का आयोजन प्रत्येक शनिवार को 1 घंटे के लिए निश्चित किया गया। जिसमें विषयों की कठिन दक्षताओं को ध्यान में रखते हुए विषय शिक्षकों को प्रश्नों को बनाने के लिए कहा गया। जिसमें कक्षा स्तर के अनुरूप विद्यार्थियों को शामिल कर सभी विषय शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों से प्रश्न पूछे जाते, तथा जो विद्यार्थी प्रथम, द्वितीय, तृतीय आता उन्हें जरूरत के अनुरूप कम्पास बॉक्स, कॉपी, पेन, पेंसिल पुरस्कार के रूप में दिए जाते। इस सार्थक बदलाव से विद्यार्थियों में पढ़ने-लिखने की रुचि जागृत हुई एवं प्रतिस्पर्धा भी बढ़ी।

कुछ विद्यार्थी आयु एवं कक्षा के अनुरूप दक्षताएं कम होने के कारण अपने आप को कमजोर महसूस करते थे। ऐसी परिस्थिति में सभी शिक्षक साथियों एवं बाल कैबिनेट से विचार विमर्श करने के बाद निम्नांकित बिन्दुओं को शामिल कर इन्हें क्रियान्वित किया गया -

1. विषयों को रोचक तरीके से खेल गतिविधियों से जोड़कर पढ़ाया जाए।
2. रेमेडियल कक्षाएं संचालित की जाए।
3. विद्यार्थियों के सीखने के स्तरानुसार समूह बनाकर अध्यापन कार्य कराया जाए।
4. सेवानिवृत्त शिक्षकों एवं भूतपूर्व विद्यार्थियों से अध्यापन कार्य में सहयोग लिया जाए।
5. विद्यार्थियों से स्कूल में और घर पर भी पढ़ने, दोहराने हेतु अभ्यास कार्य कराया जाए।
6. माध्यमिक शाला के अंतर्गत आने वाले समस्त पोषक प्राथमिक शालाओं के प्रधान पाठक तथा शिक्षकों से प्रधान पाठक, माध्यमिक शाला द्वारा शैक्षिक संवाद स्थापित कर समय-समय पर शालाओं में भ्रमण किया जाए।

चूँकि विद्यालय का खेल परिसर छोटा है, इसलिए इनडोर तथा आउटडोर खेलों को महत्व देना उचित प्रतीत हुआ। विद्यालय में सभी विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के खेलकूद जैसे- कुर्सी दौड़, जलेबी दौड़, रस्सी कूद, आलू चम्मच, सुई धागा, खो-खो, कबड्डी, शतरंज, कैरम, सांप सीढ़ी आदि से जोड़कर उनका शारीरिक एवं मानसिक विकास किया जा सके। इसलिए विद्यालय भवन में खेल कक्ष बनाया गया।

इस कक्ष का उपयोग D एवं E ग्रेड के विद्यार्थियों के ठहराव के साथ सभी विद्यार्थियों के लिए किया जाने लगा। **D एवं E ग्रेड के विद्यार्थियों को एक सप्ताह तक पूर्ण समय दिया गया कि वे जितना चाहे खेलें, पढ़ने का मन हो तो पढ़ें या अपनी कक्षा में बैठें।** विद्यार्थी कभी खेलते, कभी पढ़ते। इसका लाभ यह हुआ कि ये विद्यार्थी विद्यालय में नियमित रूप से आने



रस्सी कूद खेलते हुए छात्राएं।



जलेबी दौड़ खेलते हुए छात्र।

लगे। इन विद्यार्थियों की 15 दिनों तक अलग कक्षा लगाई गयी इसके पश्चात इन्हें नियमित कक्षाओं में भेजा जाने लगा । शाला में शिक्षकों के द्वारा रेमेडियल कक्षा संचालित की गई जिससे इन विद्यार्थियों को शाला समय से 1 घण्टा पूर्व अध्यापन कार्य कराया जाने लगा। प्रतिफल स्वरूप इन विद्यार्थियों में विषयगत दक्षताओं का विकास होने लगा। पढ़ना-लिखना आने लगा। अब तक ये विद्यार्थी विद्यालय आने से डरते एवं जी चुराते थे पर अब विद्यालय नियमित रूप से आने लगे।

कक्षा में A और B ग्रेड के विद्यार्थियों के साथ D और E ग्रेड के विद्यार्थियों को शामिल कर समूह बनाया गया। जिससे उनका पठन पाठन के माध्यम से दक्षताओं का विकास किया जा सके।

विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में बदलाव के लिए सेवानिवृत शिक्षकों एवं भूतपूर्व विद्यार्थियों का शाला में उपस्थित होकर अपने पूर्व शैक्षणिक अनुभव को विद्यार्थियों के साथ साझा करके शैक्षणिक कार्य के लिए प्रोत्साहित किया गया। जिसके कारण उनकी रूचि अध्यापन कार्य में बढ़ी। विद्यार्थियों से स्कूल में और घर पर भी पढ़ने, दोहराने हेतु अभ्यास कार्य करवाया जाने लगा।

इतना ही नहीं शाला में एक स्मार्ट क्लास का निर्माण भी किया गया जिसके लिए एक LED TV क्रय किया गया। जिसमें विषय आधारित एक कालखण्ड निर्धारित किया गया। स्मार्ट क्लास में विद्यार्थियों के विभिन्न विषयों के कठिन बिंदुओं पर यूट्यूब एवं ICT के माध्यम से समाधान किया जाता है।



स्मार्ट क्लास।

इन सभी प्रयासों के कारण विद्यार्थियों के अधिगम स्तर का उन्नयन तीव्र गति से हुआ। कठिन अवधारणाओं की समझ विकसित हुई जिससे 6 विद्यार्थियों का सत्र 2018-19 में हिन्दी ओलम्पियाड में चयन हुआ। विद्यार्थियों के स्तर में बदलाव निरंतर हो रहा है। विषयगत विद्यार्थियों का अधिगम स्तर के उन्नयन का प्रयास शाला स्तर पर किया जाता रहा है।

शाला का नवाचार :

सभी विषयों की साप्ताहिक मूल्यांकन प्रक्रिया :-

शाला के सभी छात्र-छात्राओं को समस्त कक्षाओं के सभी विषयो में साप्ताहिक मूल्यांकन में सम्मिलित होना अनिवार्य है।

साप्ताहिक मूल्यांकन में सप्ताह में पढ़ाए गए एक या दो अध्याय का मूल्यांकन किया जाता है। प्रत्येक प्रश्न पत्र 15 अंक व समय 45 मिनट होता है। इसी कालखंड में प्रश्न पत्र लिखना, जांच करना एवं परिणाम देना होता है ।

विद्यार्थियों को 60 प्रतिशत अंक लाना अनिवार्य होता है । इससे कम अंक लाने वाले विद्यार्थी के लिए अलग से प्रयास किए जाते हैं। सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले दो विद्यार्थियों को विषय शिक्षक द्वारा पुरस्कृत किया जाता है ।

प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करने वाले चिन्हित विद्यार्थियों की वास्तविक जाँच परख हेतु कक्षा के कोई भी विद्यार्थी प्रश्न पत्र में दिए गए प्रश्नों के उत्तर पूछते हैं । इनके सवालों का जवाब मौखिक रूप से देना होता है। यदि वे सही उत्तर देते हैं तभी पूर्ण रूप से पुरस्कार के लिए पात्र माने जाते हैं । ऐसे विद्यार्थी जिन्हें एक बार पुरस्कार प्राप्त हो जाता है उन्हें पुन अवसर नहीं दिया जाता और अगले सप्ताह दूसरे विद्यार्थियों को अवसर देकर सभी की भागीदारी सुनिश्चित की जाती है ।

इस प्रक्रिया से विद्यार्थी अधिगम स्तर में सुधार होता है छात्रों में प्रतिस्पर्धा की भावना, विषय में अध्ययन के प्रति रुचि, नियमित उपस्थिति, ईमानदारी की भावना जागृत होती है। विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में सुधार के साथ सभी विषयों के साप्ताहिक मूल्यांकन कार्य से सबसे सार्थक बदलाव हुआ।



साप्ताहिक मूल्यांकन देते विद्यार्थी।

विद्यार्थी केंद्रित कार्य :-

विद्यार्थियों द्वारा शाला में आयोजित कार्यक्रम जैसे- बालसभा, प्रश्नमंच, तात्कालिक भाषण, गीत-कहानियाँ, विभिन्न महापुरुषों की जयंतियों में सभी ग्रेड के विद्यार्थियों की सहभागिता सुनिश्चित कर इन्हें पाठ्यक्रम के साथ जोड़ा जाता है।

विद्यार्थी अधिगम के लिए समुदाय-विद्यालय सम्बन्ध :-

समुदाय की विद्यालय में सहभागिता से समाज के व्यक्ति विद्यार्थियों की शैक्षणिक आवश्यकता की जानकारी से अवगत होते हैं और समाधान के लिए सहयोग प्राप्त होता है। विद्यालय परिवार पालकों के साथ ऐसे कार्यों के लिए सतत संपर्क बनाए रखते हैं।



बैठक में अभिभावकों की उपस्थिति।



पालकों को बच्चों की जानकारी देते हुए।

बदलाव :

- अभिभावकों से सतत संपर्क, उनके घरेलू कार्यक्रमों में सहभागिता एवं रूचिकर मध्यान्ह भोजन से विद्यार्थियों की उपस्थिति में 20 प्रतिशत वृद्धि हुई। अब अशासकीय विद्यालयों से भी 20 - 22 विद्यार्थी प्रतिवर्ष शाला में नामांकित हो रहे हैं।
- रेमेडियल क्लास लगाने एवं विविध शालेय कार्यक्रमों के संचालन से विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति में वृद्धि हुई एवं 'D' एवं 'E' ग्रेड की दक्षता वाले विद्यार्थी अब 'C' ,'B', 'A' ग्रेड की दक्षता प्राप्त कर चुकें हैं। इस प्रकार उनके अधिगम स्तर में गुणात्मक सुधार हुआ है ।
- बिजली की उपलब्धता होने से अब बच्चे स्मार्ट क्लास में स्वयं ICT के माध्यम से अध्यापन कार्य में रुचि लेते हैं। जिससे उनके शैक्षणिक स्तर में वृद्धि हुई एवं कठिन अवधारणाओं की समझ विकसित हुई।

आगामी कार्य योजना :

- आई.सी.टी. एवं टीएलएम के प्रयोग से तथा खेल गतिविधियों के माध्यम से 70 प्रतिशत विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर को कक्षा के स्तर पर लाना।
- शिक्षकों के विषयवार कठिन बिन्दुओं पर उन्मुखीकरण शाला/संकुल स्तर पर आपसी चर्चा द्वारा करना।
- बाउंड्रीवाल का निर्माण कराया जाना।

गजेन्द्र कुमार नागदौने
(प्रधानाध्यापक)
मोबाईल : 9424366475
Email : gknagdaune1965@gmail.com

बगिया से बदलाव

शासकीय माध्यमिक विद्यालय, हर्राखेड़ा

यू-डाईस कोड : 23320110206

- विकासखंड : बैरसिया
- जिला : भोपाल
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 2 - विद्यार्थियों के लिए शिक्षण, अधिगम प्रक्रिया

उप डोमेन क्र. 2 - शिक्षण में नवाचार

शिक्षक द्वारा शाला में बगिया (पेड़-पौधों) के माध्यम से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को रूचिकर एवं अंतर्विषयक बनाना और पुस्तकालय के उपयोग से बच्चों में अपनी बात को प्रभावी ढंग से लिखने की कला विकसित करना।

पृष्ठभूमि :

यह कहानी है भोपाल शहर से 30 किलोमीटर दूर बैरसिया तहसील के एक हरेभरे, शांत छोटे से गाँव हर्राखेड़ा की, जिसकी आबादी तकरीबन 2421 है। 452 घरों के इस गाँव के लोगों की आजीविका का साधन मुख्यतः खेती या मजदूरी करना है। यहाँ की बोली बुंदेली है। यहाँ से कुछ ही दूरी पर प्रसिद्ध हरसिद्धि माता मंदिर भी है।

5 एकड़ में फैले इस विद्यालय में आसपास के 5 गाँवों के विद्यार्थी पढ़ने आते हैं। विद्यालय में पढ़ने वाले माध्यमिक विभाग के विद्यार्थी का आँकड़ा हमेशा 200 से ऊपर है। कभी-कभी यह 300 के आसपास भी पहुँच जाता है, जिसमें लड़कियों की संख्या लड़कों से ज्यादा ही रहती है। इस विद्यालय में प्राचार्य सहित सात प्राध्यापक, सात शिक्षक/शिक्षिकाओं का स्टॉफ है। विद्यालय में एक बड़ा सा खेल का मैदान है, खेल के कमरे में विभिन्न इनडोर और आउटडोर खेलों का सामान है। विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए पुस्तकालय, कम्प्यूटर लैब, प्रोजेक्टर रूम, टीवी आदि सुविधाएं हैं। विद्यालय में विभिन्न अवसरों पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं का भी आयोजन होता है। समस्त शिक्षक उत्साही और कर्मठ हैं। यही कारण है कि आसपास के क्षेत्रों के प्राइवेट स्कूल के मुकाबले बच्चे इस विद्यालय में आना ज्यादा पसंद करते हैं।

समस्या :

- बच्चे हिंदी पढ़ और लिख तो लेते हैं परन्तु अपनी बात प्रभावी ढंग से व्यक्त नहीं कर पाते हैं।

समस्या समाधान की प्रक्रिया :

प्रधानाध्यापक ने समस्या अपने शिक्षकों के सामने रखी और मिलजुलकर समस्या का समाधान निकालने को कहा। समस्या की गंभीरता को सभी ने महसूस किया। चर्चा में यह बात सामने आई की विद्यार्थी उस समय सबसे अच्छे ढंग से सीखते हैं जब वो शिक्षण के अनुभव से सक्रिय रूप से जुड़े होते हैं। दूसरे के साथ परस्पर संवाद और अपने विचारों को साझा करने से विद्यार्थी अपनी समझ की गहराई बढ़ा सकते हैं। कथा वाचन, गीत, भूमिका अदा करना और नाटक लिखना कुछ ऐसी विधियां हैं जिनका उपयोग पाठ्यक्रम के कई क्षेत्रों में किया जा सकता है। जिनमें गणित और विज्ञान भी शामिल हैं। यह तय हुआ कि सिर्फ हिंदी भाषा की शिक्षिका नहीं बल्कि समस्त विषयों के शिक्षक अपना योगदान इस कार्य में देंगे और सुनिश्चित करेंगे कि विद्यार्थी के हिंदी भाषा के ज्ञान और लेखन शैली में विकास हो।

समस्या समाधान की रणनीति -

- बच्चों को बगिया में पेड़-पौधे लगाने हेतु प्रेरित करना।
- विद्यार्थियों को अपनी राय साझा करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।
- पुस्तकालय की पुस्तकों का उपयोग करेंगे।
- बच्चे अपनी पसंद के विषय में लिखेंगे।
- बच्चे तनाव को कम करने के लिए लिखेंगे।
- सभी शिक्षकों को इन गतिविधियों का हिस्सा बनाएंगे।
- हिंदी भाषा अध्यापन शैली में उचित बदलाव करेंगे।
- समय सारणी में यथोचित बदलाव करेंगे।
- समुदाय को विद्यालय से जोड़ने की कोशिश करेंगे।

विद्यार्थी वैसे तो शनिवार के दिन ज्यादा प्रसन्न रहते हैं, क्योंकि लंच के बाद बाल सभा होती है। इस शनिवार के दिन लंच के बाद बाल सभा में सभी शिक्षक एक साथ मौजूद थे। तय अनुसार विद्यार्थियों से कहा गया कि अपने सपनों का विद्यालय कैसा हो या कोई ऐसा बदलाव जो आप अपने विद्यालय में चाहते हो, लिख कर बताओ। बच्चे खुश थे कि हमारी राय पूछी जा रही है। शिक्षक ने विद्यार्थियों को लिखने के लिए कागज़ और पेन दिए। फिर विद्यार्थियों ने पहले तो आपस में बातचीत की फिर लिखने में मग्न हो गए। कुछ विद्यार्थियों ने चित्र भी बनाए।

विद्यार्थियों के लेख सभी ने पढ़े और जो बात सामने निकल कर आई कि ज्यादातर विद्यार्थियों के सपनों के विद्यालय में बगीचा था। विद्यालय में कई बड़े वृक्ष थे, परन्तु बगीचा नहीं था। विद्यार्थियों के लेख और चित्रों को सराहा गया और किसी की व्यक्तिगत गलती न निकालते हुए यह समझाया गया कि अपना लेख किस तरह लिखें जिससे विद्यालय में जो बदलाव वह चाहते हैं ठीक वैसे ही पढ़ने वाले को समझ में आए। चाहें तो इसके लिए पुस्तकालय की पुस्तकों की मदद भी ले सकते हैं।



चित्र बनाते हुए बच्चे।

इस बार तीर निशाने पर लगा। कुछ विद्यार्थियों ने पुस्तकालय जाने की इच्छा जताई और पुस्तक पढ़ी। दूसरे लेख में उन विद्यार्थियों की शिक्षकों ने तारीफ की जो पुस्तकालय गए और उनके लेखन में अच्छे बदलाव पाए। इस बार दूसरे विद्यार्थियों ने भी पुस्तकालय जाने की इच्छा जाहिर की। शिक्षकों ने विद्यार्थियों के बीच सही लिखने को लेकर हो रही प्रतिस्पर्धा को महसूस किया। इसके लिए पुस्तकालय की समय सारणी को लचीला बनाया गया। जिन विद्यार्थियों ने अपनी बात चित्रकारी के माध्यम से व्यक्त की, उनकी तारीफ भी की गयी, पर जब उन विद्यार्थियों को यह भी बताया गया कि चित्रकारी के माध्यम से हम अपनी भावनाओं को पूरी तरह से अभिव्यक्त नहीं कर सकते हैं और इसलिए शब्दों का उपयोग बहुत आवश्यक है तब वे विद्यार्थी भी अच्छा लिखने के लिए प्रेरित हुए।

विद्यार्थियों से पूछा गया कि आपको किस तरह का बगीचा चाहिए, लिखकर बताइए। इस बार विद्यार्थियों ने लिखा और चित्र भी बनाये। शिक्षकों ने पढ़ा और विद्यार्थियों को बताया कि वो लेख को किस तरह से अच्छा बना सकते हैं। पुस्तकालय में विद्यार्थियों की संख्या अब और बढ़ रही थी। यहाँ गौरतलब यह कि विद्यार्थियों में पुस्तकालय जाने का दबाव न था। कोशिश यही थी कि बच्चे खुद पुस्तकालय जाने के लिए प्रेरित हों। इसके लिए पुस्तकालय में विद्यार्थियों की पसंद की कहानियों की पुस्तकें भी शामिल की गयीं।

अगले चरण में कहा गया कि आप पूरे कैंपस में बगीचा कहाँ चाहते हैं? विद्यार्थियों ने यह भी लिखकर बताया। शिक्षकों ने महसूस किया कि विद्यार्थियों के लेखन में बदलाव आया है। इस चरण में विद्यार्थियों को कैंपस में उस जगह ले जाया गया जहाँ वह अपना बगीचा चाहते थे। विद्यार्थी बड़े उत्साहित थे कि उनकी बात सुनी गयी और अब पूरी होने जा रही है।

बदलाव :

- विद्यार्थियों से पूछा गया कि सबसे पहले क्या करना होगा, यह लिख कर बताएं। सभी विद्यार्थियों ने आपस में चर्चा की और पुस्तकालय से बागवानी की पुस्तक पढ़ी एवं अपने - अपने लेख लिखे जिसमें यह बात कही गयी कि सबसे पहले चुने हुए क्षेत्र में फेंसिंग की जाए जिससे बगीचा सुरक्षित रहे। इन लेखों में विद्यार्थियों ने बगीचे की फेंसिंग करने के फायदे भी बताये।

- इस चरण में गणित की शिक्षिका विद्यार्थियों को बगीचे के लिए चिन्हित क्षेत्र में लेकर गयीं और विद्यार्थियों से पूछा कि नाप के बताओ की कितना तार चाहिए फेंसिंग के लिए। विद्यार्थियों ने नापा और कक्षा में आकर शिक्षिका की सहायता से बगीचे का क्षेत्रफल और परिमाप निकला और उसे अपने लेख के साथ जोड़ा। अगले चरण में गणित शिक्षिका ने कहा कि लिखकर बताइए कि बगीचे को कितनी बार तार से घेरोगे और यदि एक मीटर तार की कीमत इतनी है तो पूरे बगीचे को घेरने के लिए लगने वाली तार की कीमत ज्ञात कीजिए।



सवाल हल करते हुए छात्र।

- यहाँ विद्यार्थियों ने खेल - खेल में गणित की दो अवधारणाएं क्षेत्रमिति और एकिक नियम भी सीख लिया। यह सभी विषय के शिक्षकों की सफलता की आहट थी और विद्यार्थियों में बढ़ता आत्मविश्वास दिखा।

- विद्यार्थियों के साथ जाकर ही फेंसिंग के तार की खरीदारी की गयी साथ ही पैसों का लेन-देन विद्यार्थियों ने ही किया। विद्यालय वापस आकर विद्यार्थियों ने किए गए लेनदेन को अपने लेख में व्यक्त किया और लेन-देन का हिसाब भी लिखा। बगीचे की फेंसिंग कर दी गयी। विद्यार्थी भी खुश थे और शिक्षक भी।

- अगले चरण में विद्यार्थियों से पूछा गया कि बगीचे में क्या लगाया जाए? विद्यार्थियों ने अपने लेख में अलग - अलग बातें लिखी। तब यह तय किया गया की सामाजिक विज्ञान की शिक्षक के साथ विद्यार्थी बगीचे की मिट्टी की पहचान करेंगे और उस पर एक लेख लिखेंगे। इसी बीच विद्यार्थियों के लेखों के परीक्षण का काम चालू था।

- सामाजिक विज्ञान और विज्ञान के शिक्षकों ने मिट्टी के प्रकार और किस मिट्टी में कौन-सा पौधा लगाया जाता है इस पर विद्यार्थियों से चर्चा की। विद्यार्थियों ने इस पर नोट्स बना कर चेक करवाए।

- अब विद्यार्थियों ने कौन-कौन से पौधे लगाने हैं इस पर लेख लिखा। किसी ने फल वाले पौधे, किसी ने सब्जी - फल लगाने का प्रस्ताव दिया। यहाँ के समुदाय से भी संपर्क कर उनसे पौधे उपलब्ध करने की पहल भी विद्यार्थियों ने ही

की। समुदाय भी इन नन्हें विद्यार्थियों की बात को नहीं टाल पाए और उनका सहयोग किया। बहुत सारे पौधे वन विभाग द्वारा भी प्रदान किए गए। विद्यार्थियों ने इन पौधों के गुण और उनकी आवश्यकताओं के बारे में विज्ञान शिक्षिका से बात की और नोट्स बनाये।



पौधे रोपते हुए बच्चे।

- विद्यार्थियों ने अपनी टीम बनायी। पौधों को पानी देना, देखभाल और सुरक्षा की जिम्मेदारी आपस में बांटी। आज वह पौधे बड़े हो गए हैं। विद्यार्थी उनके फलों को देखकर बहुत खुश होते हैं और आज तो उनके द्वारा उगाई गयी सब्जियां उन्हीं ने तोड़ी और मध्यान्ह भोजन में पकाई। जिससे वहां के रसोइए भी बहुत खुश हैं। आज की तारीख़ में इस बगीचे में नीम, पीपल, आंवला, अमरुद, बेर, अनार, कड़ी पत्ता के पौधों के अलावा किचन गार्डन में प्याज, लहसुन पालक, मक्का, गिलकी, लौकी, मूली आदि सब्जियां उगाई जा रही हैं।



विद्यार्थियों द्वारा उगाई गयी सब्जियां और फल।

- इस चरणबद्ध प्रक्रिया से विद्यार्थियों के लेखन में सुधार आया। सभी विद्यार्थियों की लेखन में रूचि बढ़ी। यह कार्य उन पर थोपा नहीं गया था परन्तु उनकी अपनी पसंद का था। अपनी पसंद के कार्य को करने की लिए मनुष्य अपनी सुविधा क्षेत्र से निकल कर कार्य करता है। विद्यार्थियों को उनके उद्देश्य में सफलता मिली और उनके सपनों का विद्यालय और सुन्दर बगीचा सब उनके पास था।

- विद्यार्थियों ने पुस्तकालय निरंतर जाना शुरू कर दिया। प्रधान अध्यापक और सभी शिक्षकों ने पुस्तक उपलब्ध करवाई। एक गैर सरकारी संस्थान जो विद्यार्थियों की शिक्षा के क्षेत्र में काम करती है, उन्होनें भी पुस्तकें उपलब्ध कराई। अब पुस्तकालय एक शिक्षक की जिम्मेदारी नहीं रहा, सभी शिक्षक विद्यार्थियों को पुस्तकालय की उपयोग के लिए प्रोत्साहित करते हैं और हर विषय की पुस्तक पढ़ने और अपनी समस्या को पुस्तकों में ढूंढ़ने के लिए उन्हें प्रेरित करते हैं।

- यह कवायद हिंदी भाषा में सुधार से शुरू हुई परन्तु धीरे - धीरे सभी विषयों पर भी विद्यार्थियों की पकड़ मजबूत हुई। यह बात विद्यार्थियों को भी न पता चली कि सफलता असल में शिक्षकों को हासिल हुई। यह हिंदी लेखन कार्य न होकर अंतर्विषयक (interdisciplinary) कार्य हो गया और सभी विषयों के जुड़ाव के साथ सभी विषय शिक्षकों का जुड़ाव हुआ। यह एक ऐसी शिक्षा पद्धति थी जिसमें विज्ञान, तकनीक गणित, आर्ट, इंजीनियरिंग (STEAM) सभी का समावेश था विद्यार्थियों की शिक्षा को उनके परिवेश से जोड़ा गया और शायद उन्हें पता भी न चला कि खेल-खेल में उन्होंने क्या सीख लिया। विद्यार्थियों में विद्यालय संपत्ति के प्रति लगाव बढ़ा है।

- विद्यार्थियों की इस सफलता से समुदाय भी खुश हुआ। समुदाय ने न सिर्फ पौधे उपलब्ध कराये बल्कि ग्रीष्म कालीन अवकाश के दौरान पेड़ों में पानी डालना और उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी भी ली। कई शिक्षकों ने फल वाले पेड़ के पौधे घर से लाकर लगाए। इस दौरान विद्यार्थियों ने कई निबंध प्रतियोगिताएं भी जीतीं। कुमारी रूचि नागर ने इंस्पायर अवार्ड राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी में ब्लॉक स्तर पुरस्कार, जिला स्तर पुरस्कार, राज्य स्तर पुरस्कार और राष्ट्रीय स्तर के लिए चयनित हुई और आईआईटी, दिल्ली में विज्ञान प्रदर्शनी में सम्मिलित हुई। रूचि नागर ने प्रोटोटाइप मॉडल इसी बगीचे से प्रेरित होकर बनाया जिसमें घरेलू कचरे से खाद किचन में ही बना सकते हैं और उसे बगीचे में इस्तेमाल कर सकते हैं।



आईआईटी दिल्ली में विज्ञान प्रदर्शनी में सम्मिलित रूचि नागर।

- इन सब कोशिशों से विद्यालय में विद्यार्थियों के नामांकन में बढ़ोतरी हुई है। प्राइवेट स्कूल से निकलवाकर अभिभावक अपने बच्चों को इस विद्यालय में प्रवेश दिला रहे हैं। इस विद्यालय की 5 प्राथमिक पोषक विद्यालयों के अलावा भी अन्य ग्रामों के प्राथमिक विद्यालयों से पढ़कर आये विद्यार्थी यहाँ छटवीं कक्षा में प्रवेश लेते हैं।

- इस वैश्विक महामारी के दौरान जब कि स्कूल बंद हैं तब भी शिक्षकों ने मोबाइल के माध्यम से विद्यार्थियों का पठन कार्य जारी रखा। विद्यार्थियों ने दिया गया कार्य पूर्ण कर मोबाइल के माध्यम से ही भेजा जिसे शिक्षकों ने चेक किया और सुधार हेतु टिप्पणियां भी लिखीं।

आगामी योजना :

हमारे सभी उद्देश्यों को अपेक्षा से अधिक सफलता हासिल हुई। इसके हकदार विद्यार्थियों के साथ-साथ प्रधान अध्यापक का कुशल नेतृत्व, शिक्षकों की मेहनत और समुदाय का सहयोग भी है। भविष्य में इसी तरह से प्रयोग करके विद्यार्थियों की अलग-अलग क्षमताओं को उभारने और निखारने का प्रयास रहेगा। विद्यार्थियों को वह समस्त सुविधाएं और मौके उपलब्ध कराना उद्देश्य रहेगा जिनके वे हकदार हैं।

- शिक्षा जिसमें (STEAM) विज्ञान, तकनीकी, इंजीनियरिंग, आर्ट, गणित का समावेश हो।
- ऐसी शिक्षा तकनीक का इस्तेमाल करना होगा जो अतंर्विषयक हो और जिसमें अच्छा कुछ नया बनाते हुए या अभिव्यक्त करते हुए सहज महसूस करें और अपनी कक्षा के दायरे से बाहर निकल कर शिक्षा को अपने परिवेश से जोड़ सकें।
- समुदाय को भी पुस्तकालय के इस्तेमाल के लिए प्रेरित करना उद्देश्य रहेगा।

सैयद मोहम्मद फैज़ल
(प्रधानाध्यापक)
मोबाईल : 9893165519
संकलनकर्ता
शबनम खान
(माध्यमिक शिक्षक)
मोबाईल : 9407811669
Email : shabnam59@gmail.com

सशक्त विद्यालय के प्रेरणा स्रोत

शासकीय माध्यमिक शाला, सिमरोदा

यू-डाईस कोड : 23340422502

- विकासखंड : औबेदुल्लागंज
- जिला : रायसेन
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 3 - विद्यार्थी संकेंद्रित करना

उप डोमेन क्र. 1 - बालकों की आवश्यकताओं पर ध्यान केन्द्रित करना

यह कहानी एक ऐसे शिक्षक की है जिन्होंने विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन्हें सीखने-सिखाने से जोड़ने के अनेक प्रयास अपने विद्यालय में किए।

पृष्ठभूमि :

यह कहानी है एक छोटे से गांव के सरकारी स्कूल के एक शिक्षक और उसकी टीम की, जिन्होंने तमाम चुनौतियों से लड़ते हुए खुद अपना भविष्य गढ़ा और हौंसलो के बूते अपने अरमानों का आसमां हासिल किया। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से करीब 25 किलोमीटर दूर, रायसेन जिले के औबेदुल्लागंज विकासखण्ड में एक गाँव है सिमरोदा । इस गाँव के शासकीय माध्यमिक विद्यालय सिमरोदा की जिला कार्यालय से दूरी 40 कि.मी. है। यहाँ वर्तमान में 96 बच्चे दर्ज हैं, जिसमें से 60 बालक हैं और 36 बालिकाएँ।

सात साल पहले तक 400 लोगों की आबादी वाले इस गांव में न तो पक्की सड़क थी और न ही स्वच्छ जल की पर्याप्त व्यवस्था। यहाँ पथरीली बंजर भूमि, आदिवासी बाहुल्य इलाका और पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण ज्यादातर समुदाय मजदूरी, बकरी पालन किया करते हैं जिसके कारण बच्चों के लिए न तो पढ़ाई का माहौल था और न ही वे स्कूल आया करते थे।

वर्तमान में सिमरोदा की तस्वीर और तकदीर दोनों बदल गई है। गाँव में पक्की सड़कें हैं, नल जल योजना से हर घर पीने का पानी पहुंच गया है। न केवल बच्चे स्कूल आते हैं बल्कि आईसीटी मॉडल क्लास के जरिए गणित और विज्ञान की कठिन अवधारणाओं को भी सीख रहे हैं और यह सब कुछ संभव हो सका है यहां के शिक्षक और उनकी टीम की लगन और मेहनत की बदौलत।

समस्या :

- शिक्षण प्रक्रियाओं में नयापन न होने के कारण विद्यार्थियों की सीखने-सिखाने की प्रक्रिया से दूरी।

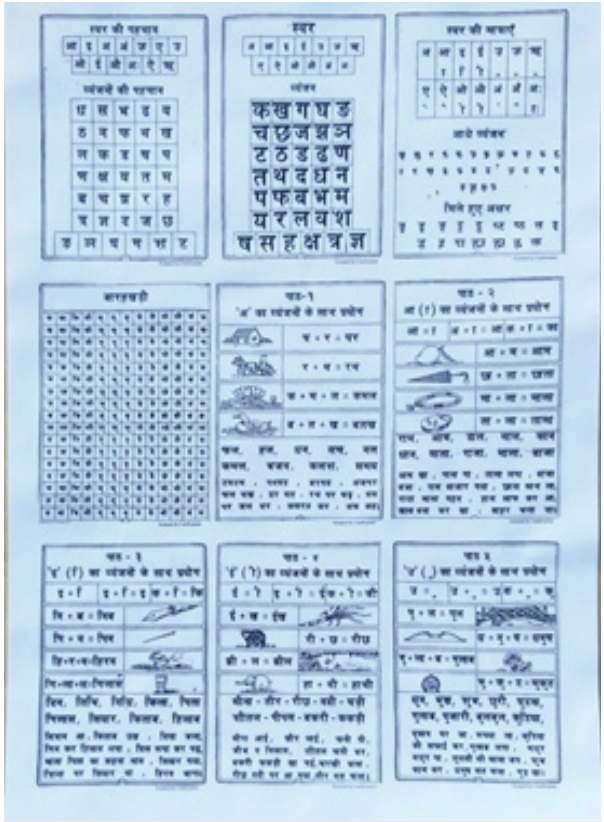
समस्या समाधान की प्रक्रिया :

ग्रामीण परिवेश, आदिवासी इलाका व पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण शुरू से ही यहां के विद्यार्थियों की रुचि पढ़ाई की अपेक्षा विभिन्न कार्य जैसे बकरी चराना, जंगल से लकड़ी लाना, मजदूरी करना आदि में अधिक रही। इसके परिणाम स्वरुप यहाँ के विद्यार्थियों का न केवल बौद्धिक स्तर कम था बल्कि विद्यालय में उपस्थिति भी 45 प्रतिशत से 50 प्रतिशत के बीच ही रहती थी। एक ऐसा क्षेत्र जहाँ दो वक्त की रोटी जुटाने के लिए भी बड़ी जद्दोजहद करनी पड़ती है उस क्षेत्र में विद्यार्थियों की उपस्थिति बढ़ाना और उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देना इनके लिए एक कठिन कार्य था, लेकिन इस कार्य को संभव बनाने में शिक्षक ने हार नहीं मानी।

यहीं से इनके संघर्ष की कहानी प्रारंभ होती है। इन्होंने इसके लिए अपने शिक्षक साथी के साथ मिलकर काफी सोच विचार और प्लानिंग करने के बाद एक बाल कैबिनेट का गठन किया जिसमें ज्यादा से ज्यादा छात्रों को विभिन्न जिम्मेदारी सौंपी गई ताकि उनमें नेतृत्व क्षमता का विकास हो सके और विद्यालय के प्रति एक अपनत्व की भावना आ सके। शुरुआत में तो इस काम को करने के लिए शिक्षक को सभी विद्यार्थियों जिन्हें जिम्मेदारी दी गई थी, उनकी मदद करनी पड़ी, लेकिन बाद में धीरे-धीरे परिवर्तन दिखने लगा। इसका परिणाम यह रहा कि विद्यार्थियों में विद्यालय के प्रति और अपने साथियों के प्रति जिम्मेदारी की भावना पनपने लगी। विद्यार्थी अपने कार्यों को पूरा करने के लिए स्वयं पहल करने लगे, खुद से प्रार्थना सभा संचालित करने का प्रयास, अपने साथियों की साफ - सफाई पर ध्यान देना और अनियमित छात्रों को शाला आने के लिए प्रोत्साहित करने जैसे छोटे - छोटे कार्य करने लगे। विद्यार्थियों को जिम्मेदारी देने और अलग-अलग प्रक्रियाओं में जोड़ने से उनकी उपस्थिति में 15 प्रतिशत तक का सुधार आने लगा।

विद्यार्थियों की उपस्थिति और बेहतर हो इसके लिए शिक्षक ने पालकों को भी साथ जोड़ने की रणनीति बनाई। उन्होंने सभी विद्यार्थियों का व्हाट्सएप ग्रुप जिस पर अनुपस्थित रहने वाले प्रत्येक विद्यार्थी की जानकारी मांगी गई, उनके पालकों से संपर्क किया गया और स्कूल में ऐसा माहौल बनाने का प्रयास किया गया जिससे पालकों और बच्चों दोनों को ही विद्यालय आना शिक्षा ग्रहण करना महत्त्वपूर्ण लगे।

इससे आगे बढ़कर जब विद्यार्थियों की अनुपस्थिति के कारणों को जानने का प्रयास किया तो सामने आया कि बहुत से विद्यार्थी इसलिए विद्यालय नहीं आते क्योंकि उन्हें किताब पढ़ना नहीं आता। किताब न पढ़ पाने के कारण उन्हें कक्षा में बैठने में शर्म आती थी। बहुत प्रयास करने के बाद भी यह कार्य संभव नहीं हो पा रहा था। क्योंकि बच्चे माध्यमिक विद्यालय के थे तो उनके साथ इस कार्य को बहुत ध्यान रख कर करने की आवश्यकता थी जिससे उनके आत्मसम्मान को ठेस न पहुँचे। इसके लिए सबसे पहले शिक्षक ने बच्चों से चर्चा की कि लगभग एक महीना हम किताब पर कार्य करेंगें । और इस एक महीने में जो कार्य करेंगें उससे सभी विद्यार्थी किताब पढ़ने में सक्षम हो जाएंगे। ऐसा उन्होंने विश्वास दिलाया। ऐसा करने के लिए शिक्षक ने भाषा का उच्चारण करने में आवश्यक सभी चरणों को समेकित कर एक बाल-पोथी का निर्माण किया जिसमें 12 दिन के 12 पाठ थे। शिक्षक ने हिंदी न पढ़ पाने वाले बच्चों की पहचान कर उनकी संख्या के मान से इस पेज की प्रतियां बनवाई और हर विद्यार्थी को एक पेज दिया । इन 12 पाठों पर बच्चों को लगातार अभ्यास करवाकर शिक्षक ने उन्हें इतना सक्षम कर दिया कि वे भाषा डिकोड करने के स्तर पर आ गए। इस प्रक्रिया के बहुत ही आश्चर्यजनक परिणाम विद्यालय में देखने को मिले, मात्र 20 दिनों में ही 85 प्रतिशत बच्चे हिंदी पढ़ना सीख गए और शिक्षक का विश्वास खुद पर लौट आया।



बालपोथी पेज का अगला पृष्ठ

बालपोथी पेज को डाउनलोड करने के लिए नीचे दी गई लिंक पर क्लिक करें

https://drive.google.com/file/d/1iEoHPJNvgWrmOHahjQuvpZBJp3BDaAJk/view?usp=drivesdk



बालपोथी पेज का पिछला पृष्ठ

बालपोथी पेज को डाउनलोड करने के लिए नीचे दी गई लिंक पर क्लिक करें

https://drive.google.com/file/d/1iEQRS-WP1807hzE7HoHjDULt_ikhHj8T/view?usp=drivesdk

ऐसा नहीं है कि इस एक महीने में शिक्षक ने उस कक्षा की किसी अवधारणा पर कार्य नहीं किया। उन्होंने इस कार्य के साथ-साथ उस कक्षा से जुड़ी महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं पर बच्चों की समझ इन्टरनेट पर उपलब्ध वीडियो को अपनी शाला में विकसित मॉडल कक्ष में किया। उदाहरण के तौर पर सौर मंडल पर आधारित वीडियो, प्रकाश संश्लेषण पर आधारित विडियो इत्यादि। वीडियो दिखाने के बाद शिक्षक ने उस अवधारणा पर विद्यार्थियों की समझ को पक्का करने के लिए बच्चों से मौखिक सवाल-जवाब के माध्यम से उनकी समझ का आंकलन किया। इसके साथ-साथ बच्चों से विभिन्न गतिविधियाँ भी करवाई।



आईसीटी मॉडल क्लास का एक दृश्य।

बदलाव :

- धीरे-धीरे जब बच्चे किताब पढ़ने और पढ़कर समझने में सक्षम होने लगे तो बच्चों के स्तर और उपस्थिति दोनों में ही बहुत सुधार आया। जो उपस्थिति लगभग 50 प्रतिशत रहती थी वह बढ़कर लगभग 80 प्रतिशत होने लगी।
- आज इस स्कूल में न केवल आईसीटी मॉडल क्लास के जरिए विज्ञान और गणित की कठिन अवधारणाओं को सुलझाया जा रहा है बल्कि देश और विदेश की खास हस्तियों के साथ बालसभा मनाई जा रही है।



विशेष बालसभा इंग्लैंड की बेस्ट इंडियन टीचर वैशाली मैम के साथ।

वीडियो देखने के लिए दी गई लिंक पर क्लिक करें - **https://youtu.be/QsCmJHD&nlY**

- यहाँ न केवल बाल सभा होती है, बल्कि बेहतर बाल इवेंट्स (बाल मेला, विज्ञान मेला) और सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होते हैं और हर साल एजुकेशनल टूर का भी आयोजन किया जाता है। जिसकी रूपरेखा किसी शिक्षक के द्वारा नहीं बल्कि छात्रों के द्वारा ही तय की जाती है।



एजुकेशनल टूर 11/01/2019

एजुकेशनल टूर का वीडियो देखने के लिए नीचे दी गई लिंक पर क्लिक करें
https://youtu.be/OmqwlX_AxKc या दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

स्थायित्व :

विद्यालय में आये बदलाव, जैसे विद्यार्थियों की उपस्थिति, बच्चों की पाठ्यपुस्तकों को पढ़ने और सीखने-सिखाने के प्रति रुचि सतत रूप से जारी है। शिक्षक बच्चों को अभी भी विभिन्न माध्यमों से उनकी आवश्यकता अनुसार सिखाने में मदद कर रहे हैं।

आगामी योजना :

- शासकीय माध्यमिक शाला सिमरोदा में ई-लाइब्रेरी की स्थापना करना है ताकि इस विद्यालय में आने वाला हर विद्यार्थी अपने मन में उठने वाले हर प्रश्न का समाधान खुद खोज सके और अपने सपनों को पूरा कर सके।
- विज्ञान टेक्नोलॉजी और सॉफ्टवेयर लैब का निर्माण करवाना है जिससे वैज्ञानिक प्रतिभा से संपन्न विद्यार्थी भी अपनी प्रतिभा का विकास कर सकें और आगे चलकर वैज्ञानिक बनकर देश के विकास में अपना योगदान दे सकें।

गेंदालाल मेश्राम
(प्रधानाध्यापक)
मोबाईल : 9424926366
संकलनकर्ता
मुकेश चौहान
(माध्यमिक शिक्षक)
मोबाईल : 9755447648
Email : mukeshchouhan645@gmail.com

❑ ❑ ❑

ज्यामिति का जादू

शासकीय सरदार पटेल उ.मा. विद्यालय, दमोह

यू-डाईस कोड : 23120318209

- विकासखंड : दमोह
- जिला : दमोह
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 3 - विद्यार्थी संकेंद्रित करना

उप डोमेन क्र. 1 - बालकों की आवश्यकताओं पर ध्यान केन्द्रित करना

यह कहानी है एक ऐसे विद्यालय की जहां पर कक्षा शिक्षण में अवलोकन के समय विद्यार्थियों में विषय में ज्यामिति के ज्ञान में कमी देखी गई। विद्यार्थियों की इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, ज्यामिति की शिक्षण सामग्री के माध्यम से खेल-खेल में विद्यार्थियों को ज्यामिति को समझाया गया जैसे - बिंदु, रेखा, कोण त्रिभुज, चतुर्भुज, पंचभुज, षटभुज, अष्टभुज इत्यादि। जिससे विद्यार्थियों में ज्यामिति के प्रति रुचि उत्पन्न होने लगी और विद्यार्थियों में सीखा गया ज्ञान स्थाई हो गया।

पृष्ठभूमि :

नरवर की रानी दमयंती के नाम से विख्यात दमोह शहर के मुख्य मार्ग से 50 मीटर की दूरी पर हिंडोरिया सड़क पर एकीकृत सरदार पटेल शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्थित है। इस स्कूल की स्थापना 1953 में हुई थी। वर्तमान में यह क्षेत्र पृथ्वीराज वार्ड 39 के नाम से जाना जाता है। आकांक्षी जिले के इस वार्ड में मुस्लिम एवं अनुसूचित जाति की बहुलता है। इस वार्ड के अधिकांश व्यक्ति मजदूरी, मैकेनिक एवं भवन निर्माण आदि कार्यों में संलग्न हैं। इनकी आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर है, जिसके कारण विद्यार्थियों को भी अपने माता-पिता के साथ सहयोग करना पड़ता है, जिससे विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति अनियमित एवं शिक्षा के प्रति अरुचिकर रहती थी।

समस्या :

पिछड़े क्षेत्र में स्थित इस विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के अभिभावक शिक्षा के अभाव व आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण अपने विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति जागरूक नहीं है। अवलोकन, अनुभव के आधार पर निम्नलिखित समस्या चिन्हित की गई।

- गणित विषय में ज्यामिती के ज्ञान में कमी।

समस्या समाधान की प्रक्रिया :

गणित विषय में ज्यामिती के ज्ञान में कमी एवं विषय के प्रति निष्क्रियता। ज्यामिती को लेकर कार्य योजना तैयार की क्योंकि गणित में ज्यामिती विद्यार्थियों को कठिन लगती है। उसे रुचिकर एवं स्थायी ज्ञान प्रदान करने के लिए नेतृत्व क्षमता और विकास प्रशिक्षण में दिए गए मार्गदर्शन के अनुसार विभिन्न गतिविधियों, नवाचारों और कौशलों के विकास का उपयोग कर ज्यामिती में विद्यार्थियों की रुचि जगाने तथा विषय को सरल बनाने एवं स्थायित्व प्रदान करने के लिए निम्न चरणों में कार्य योजना बनायी -

1. प्रथम चरण में ज्यामितिय अवधारणाएं जैसे बिंदु, रेखा, कोण आदि की समझ विकसित करना।
2. द्वितीय चरण में ज्यामितिय आकृतियों का ज्ञान कराना जैसे त्रिभुज, चतुर्भुज, पंचभुज, षटभुज, अष्टभुज आदि।
3. तृतीय चरण में वृत्त एवं वृत्त से संबंधित अवधारणा विकसित करना।
4. चतुर्थ चरण में त्रिविमीय आकृतियों घन - घनाभ, बेलन, शंकु आदि की अवधारणा विकसित करना।

1. प्रथम चरण- ज्यामितिय अवधारणाओं का ज्ञान :

- विद्यार्थियों का शैक्षणिक स्तर कमजोर होने के कारण उनको ज्यामिती अवधारणा समझाना चुनौतीपूर्ण कार्य था। प्रशिक्षण के अनुभव से शून्य निवेश नवाचार का उपयोग करते हुए जियो बोर्ड (जियो बोर्ड एक फिजिकल बोर्ड होता हैं, जिसके माध्यम से ज्यामिती की आधारभूत अवधारणाओं को आसान तरीके से समझाया जाता हैं), कार्ड, घड़ी आदि सहायक सामग्री का निर्माण किया। जियो बोर्ड के निर्माण हेतु एक प्लाई बोर्ड पर 9 कीलों को एक वृत्ताकार आकृति में इस प्रकार लगाया गया, जिससे विभिन्न आकृतियों को बनाया जा सके। प्रत्येक कील एक बिन्दु को प्रदर्शित करती है एवं किन्हीं दो कीलों के बीच धागे की सहायता से मिलाने पर रेखा एवं विभिन्न कोण, जैसे अधिक कोण, न्यूनकोण, समकोण, ऋजुकोण आदि बनाये जा सकते हैं। इसी प्रकार इस बोर्ड पर विभिन्न, चतुर्भज, पंचभुज आदि

आकृतियों को धागे की सहायता से बनाया जा सकता है। इस प्रकार बोर्ड निर्माण के पश्चात विद्यार्थियों द्वारा गतिविधियों के माध्यम से बिन्दु, रेखा, कार्ड और ज्यामितिय आकृतियों का ज्ञान आसानी से कराया गया।



सरल रेखा, कोण संबंधी अवधारणा समझाते हुए।

- कोण संबंधी सीखे गये ज्ञान को घड़ी की सहायता से स्थायित्व प्रदान किया गया, जिसके लिये घड़ी में घण्टे व मिनिट की सुई द्वारा अलग -अलग समयों पर जैसे 2 बजे न्यूनकोण 3 बजे समकोण 6 बजे ऋजु कोण, 8 बजे अधिक कोण आदि को समझाया गया। विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न समयों पर बनने वाले कोणों की तालिका बनवाकर उनके ज्ञान को सुदृढ़ किया गया। इसी प्रकार दैनिक जीवन में उपयोग आने वाली वस्तुओं के माध्यम से कोण संबंधी अवधारणा को स्थायी बनाया गया।

2. **द्वितीय चरण- ज्यामितिय आकृतियों का ज्ञान :**

- त्रिभुज, चतुर्भुज, पंचभुज आदि ज्यामितिय आकृतियों के ज्ञान हेतु जियो बोर्ड पर एवं कार्ड द्वारा आकृतियों को बनाकर विद्यार्थियों को दिखाया गया। तत्पश्चात 'करके सीखे' इस संकल्पना के आधार पर विद्यार्थियों द्वारा माचिस स्टिक, शादी

के पुराने कार्ड, थर्माकोल शीट आदि द्वारा बनाई गई सहायक सामग्री के द्वारा इन आकृतियों में शीर्ष, भुजाएं, परिमाप की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए खेल-खेल में रोचक गतिविधियां कराई गई।



विद्यार्थी ज्यामितिय आकृतियों को समझाते हुए।

- विद्यार्थियों के ज्ञान को सुदृढ़ करने के लिए चकरी के माध्यम से मेल-मिलाप जैसी गतिविधियां कराई गई। बच्चे स्वयं करके सीखें, इस संकल्पना को सार्थक करने लिये विद्यार्थियों को बोर्ड पर एक आकृति बनाकर (घर आदि) समूह में 4-4 विद्यार्थियों को बैठाकर अपने अनुसार चित्र में दिखाई देने वाली आकृतियों से कोई एक आकृति जैसे त्रिभुज, चतुर्भुज आदि का निर्माण माचिस तीली स्केच पेन आदि की सहायता से करने को कहा गया। इस प्रकार खेल-खेल में विद्यार्थियों को स्थायी ज्ञान प्राप्त हुआ।

3. **तृतीय चरण- वृत्त संबंधी अवधारणाओं का ज्ञान :**

- इसके लिए जियो बोर्ड एवं थर्माकोल शीट द्वारा तैयार मॉडल के आधार पर विद्यार्थियों में केंद्र, जीवा, त्रिज्या, व्यास, परिधि संबंधी अवधारणा को समझाया गया। उनके द्वारा सीखे गए ज्ञान को सुदृढ़ करने के लिए व्यावहारिक जीवन में

उपयोग आने वाली वृत्ताकार वस्तुएं जैसे थाली रिंग आदि की सूची तैयार कराई गई।

- विद्यार्थियों को समूह में बिठाकर निर्मित आकृतियों से उनके द्वारा व्यास, त्रिज्या, परिधि आदि ज्ञात कराई गई। जिससे खेल-खेल में रोचक गतिविधि के माध्यम से विद्यार्थियों में सीखने की प्रवृत्ति विकसित हुई।



वृत्त संबंधी अवधारणाएं समझाते हुए।

4. चतुर्थ चरण - ज्यामितिय आकृतियों का ज्ञान :

- इस अवधारणा के अंतर्गत विद्यार्थियों को घन, घनाभ, शंकु बेलन गोला आदि आकृतियों का परिचय अपने दैनिक जीवन में उपयोग आने वाली वस्तुएं जैसे डस्टर, चॉक, पानी बॉटल, सिलेण्डर, टोपी, कीप आदि वस्तुओं से कराया गया। इसके लिए स्वयं निर्मित मॉडलों का उपयोग किया गया। विद्यार्थियों के द्वारा भी मॉडल बनवाये गये तथा घन- घनाभ में फलकों की आवधारणा को मॉडल की सहायता से समझाया गया। उन्हें बेलन, शंकु, गोला, आदि के बारे में विस्तृत जानकारी मॉडलों की सहायता से प्रदान की गई तथा समूह में कार्य कराकर उनके ज्ञान को सुदृढ़ किया गया।



विद्यार्थी घन, घनाभ, शंकु बेलन गोला आदि अवधारणाएं समझाते हुए।

शिक्षण- सामग्री का प्रदर्शन :

इस प्रकार निर्मित सहायक सामग्री का विभिन्न प्रशिक्षणों में (जनपद शिक्षा केन्द्र, डाइट आदि) एवं विद्यार्थी स्तर पर प्रदर्शनी लगाकर विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों को गणित संबधी विभिन्न अवधारणाओं को समझाया गया एवं गणित विषय के ज्ञान को व्यावहारिक रूप से जोड़ा गया।

बदलाव :

- उपरोक्त किए गए, नवाचारों से विद्यार्थियों में ज्यामिती के प्रति रुचि उत्पन्न होनी लगी। विद्यार्थियों में सीखने की क्षमता का विकास हुआ। ज्यामिती के प्रति विद्यार्थियों की उदासीनता को जिज्ञासा में परिवर्तित करने में सफलता प्राप्त हुई। विद्यार्थियों मे पूछने की क्षमता में वृद्धि हुई जिससे उनकी जिज्ञासा का समाधान हुआ।
- कक्षा शिक्षण को खेल-खेल में गतिविधियों के माध्यम से सहज और सरल बनाया गया।



विद्यार्थी शिक्षक की सहायता से शिक्षण सामग्री का निर्माण करते हुए।

स्थायित्व :

- उपरोक्त संकल्पनाओं के ज्ञान को स्थायित्व प्रदान करने के लिए पोस्टकार्ड सजाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यार्थियों ने समूह में कार्य किया तथा इस प्रकार समस्त अवधारणाओं का ज्ञान विद्यार्थियों को आसानी से प्राप्त हुआ। गणित विषय के प्रति विद्यार्थियों की रुचि में सतत विकास हुआ।
- उपरोक्त सभी किए गए कार्यों के बाद विद्यार्थियों में सीखा गया ज्ञान स्थाई हो गया एवं सीखने की प्रक्रिया में निरंतरता बनी रहेगी। विद्यार्थियों की उपस्थिति नियमित बनी रहेगी तथा गणित विषय के प्रति विद्यार्थियों की रुचि बनी रहेगी।

पुरस्कार एवं उपलब्धियां :

प्रधानाध्यापक नेतृत्व क्षमता एवं विकास प्रशिक्षण में दिए गए मार्गदर्शन के आधार पर विभिन्न गतिविधियों एवं नवाचारों का क्रियान्वयन समस्त शिक्षकों के सहयोग से किया गया, जिससे विद्यालय को नीचे दिए गए पुरस्कार प्राप्त हुए।

- राज्य स्तरीय विज्ञान मेला 2019 में गणितीय अवधारणा के प्रारूप अंतर्गत शाला को द्वितीय पुरस्कार।
- प्रधानाध्यापक को नवाचार के लिए 15 अगस्त 2019 में मुख्य समारोह में पुरस्कार।
- विद्यालय के प्रधान अध्यापक को शिक्षा ज्योति अवार्ड 2019 एवं न्यू दिल्ली एवं प्रेरणा अवार्ड 2019 मुंबई द्वारा।



- विद्यालय को प्राप्त उपलब्धियां।

संस्था की उपलब्धियां एवं नवाचार को जानने के लिए निम्नलिखित लिंक के माध्यम से अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

facebook **Sardar patel school damoh page**

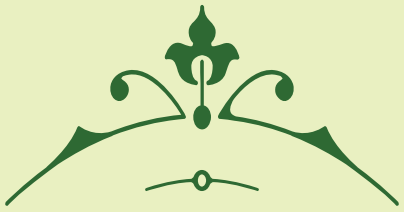
YouTube **c.k. jain**

आगामी योजना :

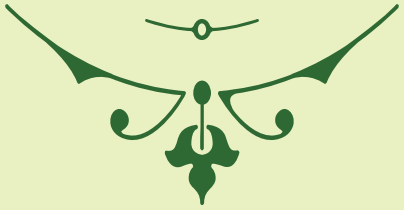
- कक्षा- कक्ष को पर्याप्त सहायक सामग्री के द्वारा सुसज्जित करना।
- मैथ्स गार्डन की संकल्पना को साकार रूप में परिणित करना।
- अन्य विषयों के शिक्षकों की सहायता से आवश्यक शिक्षण सामग्री का निर्माण कर अध्यापन कार्य कराना।

चन्द्रकुमार जैन
(प्रधानाध्यापक)
मोबाईल : 9893228234

❑ ❑ ❑



नामांकन में वृद्धि एवं ठहराव



बच्चों के बढ़ते कदम सरकारी स्कूल की ओर

शासकीय प्राथमिक शाला, कड़वी

यू-डाईस कोड : 23440517801

- विकासखंड : छपारा
- जिला : सिवनी
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 2 - विद्यार्थियों के लिए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया

उप डोमेन क्र. 1 - विद्यालय की समस्त प्रक्रिया में शिक्षक की सहभागिता

यह सफलता की कहानी एक प्रोन्नत प्राथमिक शाला की है। जिसमें 2014-2015 में 29 बच्चे दर्ज थे। जो शिक्षकों के प्रयास से 2021-2022 में बढ़कर 64 हो गये। शिक्षकों के प्रयास से गांव के बच्चे, जो बाहर अशासकीय शाला में दर्ज थे वे अब गांव की सरकारी शाला में प्रवेश ले रहे हैं।

पृष्ठभूमि :

मध्यप्रदेश के सिवनी जिले का ग्राम कड़वी जिला मुख्यालय से 45 किलोमीटर उत्तर पूर्व दिशा मे स्थित है। यह ग्राम एशिया महाद्वीप के भारत का सबसे बड़ा मिट्टी का बांध भीमगड़ बांध के किनारे बसा हुआ है। इस ग्राम में लगभग 80 प्रतिशत अल्पसंख्यक वर्ग तथा शेष अनुसूचित जाति के लोग निवास करते हैं। यहाँ के अधिकांश परिवार गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करते हैं । इनका मुख्य व्यवसाय मुर्गी पालन, पशु पालन एवं कृषि मजदूरी करना है।

कड़वी ग्राम में शासकीय प्राथमिक शाला कड़वी है जिसमें दो शिक्षक पदस्थ हैं और विद्यार्थियों की दर्ज संख्या 64 के आसपास है।

समस्या :

- नामांकन एवं ठहराव दर में कमी की चुनौतियाँ।

समस्या समाधान की प्रक्रिया :

1. नामांकन बढ़ाने हेतु पालकों से संपर्क और चौपाल कार्यक्रम का आयोजन :

विद्यालय में सभी प्रकार की भौतिक व्यवस्थाएं ग्रामवासियों एवं शासन के सहयोग से पूर्ण हो गई और विद्यालय का संचालन भी अच्छा चल रहा था। कुछ पालकों का रुझान अशासकीय विद्यालय की तरफ था। सत्र 2015-16 में लगभग 4-5 विद्यार्थियों ने अशासकीय विद्यालय छपारा में प्रवेश लिया था। विद्यार्थी के पिताजी प्रतिदिन उन्हें तैयार करके छपारा विद्यालय लाना ले जाना करते थे। कभी-कभी विद्यार्थियों को टेम्पो टेक्सी से भी छपारा जाना पड़ता था। हम शिक्षकों ने अशासकीय विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के माता-पिता से संपर्क किया और समझाया कि आप विद्यार्थियों को हमारे प्राथमिक विद्यालय कड़वी में दर्ज कराएँ, लेकिन माता-पिता ने नहीं माना। कुछ महीनों बाद मेरे द्वारा पालक शिक्षक संघ (एस.एम.सी.) की बैठक बुलाई गई। जिसमें अशासकीय विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थी के माता-पिता से भी संपर्क किया गया। हमारे विद्यालय के विद्यार्थियों के साथ में बैठाया एवं श्री उइके जी को शिक्षकगणों के साथ बैठाया गया। इसके उपरांत हमारे विद्यालय के कक्षा पहली से पांचवी तक के विद्यार्थियों ने पहाड़ा, गिनती, अंग्रेजी अक्षर, स्पेलिंग, सवाल, जोड़ना- घटाना, गुणा-भाग, हल करके दिखाया और हिंदी के पाठ पढ़कर सुनाया। इस के बाद अशासकीय विद्यालय वाले बच्चों से भी कुछ पाठ पढ़कर सुनाने को कहा गया जिसमें अशासकीय विद्यालय वाले बच्चों ने हमारे विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में कम पढ़कर बताया। यह देखकर अभिभावकों ने निश्चय किया कि इस सरकारी विद्यालय में पढ़ाई अच्छी है। हम भी अपने बच्चों का इस विद्यालय में नाम लिखवाते हैं।

हमारे विद्यालय की पढ़ाई-लिखाई की चर्चा आस-पास के ग्रामों में फैलने लगी और आसपास के ग्रामों से अनेक शासकीय विद्यालयों एवं अनेक अशासकीय विद्यालयों से छात्र-छात्राओं के माता पिता ने टी सी लेकर हमारे विद्यालय मे दाखिला कराया। हर वर्ष लगभग 8 से 10 बच्चे हमारे विद्यालय कड़वी मे दाखिला लेते हैं।



बच्चों ने अन्य स्कूल से स्थानांतरण लेकर हमारे विद्यालय में प्रवेश किया।

सत्रवार नामांकन दर्ज संख्या उपलब्धि :

सत्र	बालक	बालिका	कुल दर्ज संख्या
2014-15	13	16	29
2015-16	19	12	31
2016-17	22	13	35
2017-18	23	14	37
2018-19	30	12	42
2019-20	36	16	52
2020-21	43	18	61

2. शिक्षकों द्वारा प्रभावी शिक्षा योजना बनाना :

हम शिक्षक-शिक्षिका ने भी संकल्प लिया कि जैसा हमारा विद्यालय का नाम शिक्षा गारण्टी है वैसा ही पूर्ण लगन और अथक परिश्रम के साथ हमारे विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को आयु एवं कक्षा के अनुरूप शिक्षण कार्य कराकर दक्षता हासिल कराना है।

हम शिक्षकों ने मिलकर अतिरिक्त समय देकर शिक्षा के क्षेत्र में विषयवार एवं कक्षावार सहायक शिक्षण सामग्री तैयार कर नए-नए नवाचार कर खेल गतिविधि से शिक्षण कार्य कराया, जिससे बच्चों में विषयवार दक्षता प्राप्त होने लगी।

3. रोचक एवं समूह गतिविधियों के माध्यम से दक्षता का विकास :



शिक्षक बच्चों के साथ समूह गतिविधि करते हुए।

विद्यार्थियों में शिक्षण में रोचकता लाने के लिए हमने कुछ शिक्षण सामग्री, शिक्षण गतिविधियाँ कराई। उनसे पहाड़ा पूछा, जोड़-घटाना, गुणा-भाग की छोटी एवं बड़ी संक्रियाएं कराकर उनसे छोटे-छोटे सवाल मौखिक पूछे जाते हैं और विद्यार्थियों के द्वारा टोली बनाकर आपस में चर्चा करके बताया जाता है। हिंदी में भी अ से लेकर अः की मात्रा तक के छोटे-छोटे शब्द बनवाए जाते हैं। जिसे विद्यार्थियों के द्वारा शब्द बनाकर बताया जाता है। विद्यार्थी गतिविधियों में प्रसन्नता पूर्वक भाग लेते हैं और जो विद्यार्थी नहीं बोलते वे टोली में रहने के बाद स्वतः ही हार-जीत की होड़ में टोली में अपनी भूमिका मानकर जिम्मेदारी से प्रयास कर गतिविधियों में हिस्सा लेते हैं और खेल-खेल में दक्षता ग्रहण करते हैं।

4. समूह में गतिविधि कराना :

ऐसे विद्यार्थी जो पढ़ने लिखने में होशियार थे उनके साथ एक-एक कमजोर विद्यार्थी को बैठाया गया। इस प्रकार से कक्षा पहली से पांचवी तक किया और विद्यार्थियों से कहा गया कि जो उनके साथ विद्यार्थी बैठा हुआ है वह आपका

दोस्त है। इसे भी आपके साथ पढ़ना-लिखना सिखाना है। विद्यार्थियों ने हमारी बात मानी और जो विद्यार्थी होशियार थे उन्होंने साथ में बैठे कमजोर विद्यार्थी को पढ़ने-लिखने में सहयोग प्रदान किया। इस प्रकार हमें विद्यार्थियों में सामूहिक क्षमता एवं दक्षता का विकास करने में सफलता प्राप्त हुई।



शिक्षक बच्चों के साथ समूह गतिविधि करते हुए।

5. प्रभावी शिक्षण हेतु गतिविधि केन्द्र का निर्माण :

विद्यार्थियों में दक्षता के विकास को गतिशील रखने के लिए जनसहयोग से विद्यालय परिसर में एक गतिविधि केंद्र का निर्माण कराया जिसमें पठन-पाठन से संबंधित समस्त विषय के चार्ट, गिनती ,पहाड़ा, हिंदी अक्षर, अंग्रेजी के छोटे-बड़े अक्षर, मात्राएं, जोड़-घटाना, गुणा-भाग के 5-5 सवाल और आ (ा) की मात्रा से अः (:) की मात्रा तक 10-10 शब्द बना कर दीवारों में लिखवाएं। विद्यालय परिसर में विभिन्न मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करना शासन एवं जनसहयोग के द्वारा विद्यालय को आकर्षक बनाया जाएगा और मूलभूत सुविधाएं - पेयजल, शौचालय, खेल का मैदान, झूले, छायादार पौधों का रोपण किया जाएगा।

विद्यालय परिसर में गतिविधि केंद्र द्वारा बच्चों को सीखने में आसानी होगी जिसमें प्रतिदिन सुबह के समय, प्रार्थना के बाद लगभग आधा घंटा बच्चे अभ्यास करते हैं। कक्षा पहली से पांचवी तक के सभी विद्यार्थियों ने गतिविधि केंद्र में पढ़ना लिखना सीखा।



गतिविधि केंद्र में अध्ययन करते हुए विद्यार्थी।

6. विद्यार्थियों को शिक्षकों द्वारा सहायक शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराना :

कुछ विद्यार्थियों के पास कॉपी, पेन, पेंसिल, पहाड़ा आदि नहीं होते थे जिससे कुछ विद्यार्थी कक्षा में शिक्षण कार्य ठीक ढंग से नहीं कर पा रहे थे एवं कक्षा में खाली बैठे रहते थे, जिससे विद्यार्थी पढ़ना-लिखना ठीक ढंग से सीख नहीं पा रहे थे। हम शिक्षणगणों ने मिलकर यह निर्णय किया कि हम विद्यार्थियों को कॉपी, पेन, पेंसिल पहाड़ा आदि उपलब्ध कराएंगे और विद्यालय में कॉपी, पेन, पेन्सिल, पहाड़ा आदि खरीद कर, लाकर रखा गया। विद्यार्थियों को अवगत कराया गया कि जिस विद्यार्थी के पास पेन, कॉपी,पहाड़ा,पेंसिल आदि नहीं होती हैं वे बच्चे निःसंकोच विद्यालय से अपनी आवश्यकता की सामग्री ले सकते हैं।

- विद्यालय की ओर से बच्चों को पर्याप्त पठन-पाठन सामग्री उपलब्ध कराई गई जिससे विद्यार्थियों में हर्ष का माहौल उत्पन्न हुआ और पढ़ने-लिखने की एक नई किरण विद्यार्थियों में नजर आई। अब जिन विद्यार्थियों के पास पेन, कॉपी,

पहाड़ा, पेंसिल आदि नहीं होते वे बिना किसी भय या संकोच के विद्यालय से सामग्री मांग कर उपयोग कर शिक्षा प्राप्त करते हैं। उनमें भाषायी कौशल का विकास प्रतीत हुआ और हमें अच्छी सफलता मिलने लगी।



आवश्यक शिक्षण सामग्री प्राप्त करते हुए विद्यार्थी।

7. अन्य प्रयास :

- **विद्यालय के आसपास बनी पक्की बाउंड्रीबॉल**

  विद्यालय भवन के चारों ओर पक्की बाउण्ड्री वॉल का निर्माण कार्य की अनुमति लेकर ग्रामवासियों के जनसहयोग से पूर्ण कराया गया।

- **पेयजल हेतु नलजल योजना एवं पानी की टंकी बनाई गई**

  ग्रामवासियों के सहयोग से शासन-प्रशासन को अपने विद्यालय में पेयजल व्यवस्था हेतु पानी की टंकी तथा नलजल योजना उपलब्ध कराए जाने की मांग की गई। तदुपरांत नलजल योजना से नल का प्रबंध एवं पानी की टंकी का निर्माण कार्य कराया और विद्यार्थियों एवं विद्यालय परिवार हेतु पीने के पानी की उत्तम व्यवस्था तैयार हो गई।

सुलभ शौचालय व मार्ग निर्माण :

विद्यालय में सुलभ शौचालय का निर्माण जनसहयोग से कराया गया। साथ ही बालक एवं बालिकाओं के लिए अलग-अलग प्रसाधन तैयार किए गए। विद्यालय पहुंचने के मार्ग में व्यवधान उत्पन्न होता था, जिससे कि विद्यार्थियों, शिक्षकगण एवं अन्य सभी को विद्यालय पहुंचने में अत्यंत कष्ट होता था, जिसके लिए जनसहयोग से रास्ते का निर्माण कराया गया।

- **विद्यालय प्रांगण में लगे छायादार पौधे**

  विद्यालय को शोभायमान बनाने एवं प्रागंण में छायादार वृक्षों को लगाने हेतु वृक्षारोपण कार्य विद्यालय शिक्षक-शिक्षिका, विद्यालय प्रबंधन समिति, विद्यार्थियों एवं उनके पालक सभी ने मिलकर योजनाबद्ध तरीके से लगभग 50 से भी अधिक पौधे विद्यालय के आसपास एवं प्रांगण में लगाए। जिनकी प्रतिदिन देखभाल एवं पानी देने हेतु विद्यालय परिवार एवं ग्रामवासियों का पूर्ण सहयोग प्राप्त् हुआ। जिसके तहत लगभग 20 से अधिक छायादार एवं फलदार वृक्ष वर्तमान में विद्यालय प्रांगण में शोभायमान हैं।



झूला झूलते बच्चे।

गाँव के ही एक पालक ने खराब टायर लाकर हमें दिए और हमारे साथ मिलकर विद्यार्थियों के लिए विद्यालय परिसर के अंदर पेड़ों पर झूला बनाने में सहयोग प्रदान किया जिसमें विद्यार्थी हमारी देख-रेख में विद्यालय समय में आपस में मिल जुलकर, खुश होकर झूला झूलते रहते हैं। जिससे हमारे विद्यालय में उपस्थिति ठहराव दर में वृद्धि हुई।

बदलाव :

- विद्यालय में विद्यार्थियों के नामांकन में वृद्धि हुई। ठहराव हुआ। वर्ष 2014-15 मे दर्ज संख्या 29 थी जो बढ़कर 2020-21 में 61 हो गयी। प्रतिवर्ष अशासकीय विद्यालयों से छात्र हमारे स्कूल में दर्ज हो रहे हैं।
- शिक्षकों द्वारा तैयार पाठ योजना एवं गतिविधियों के माध्यम से बच्चों ने कक्षा के स्तर अनुरूप अधिकतम दक्षताएं प्राप्त की।
- गतिविधि केंद्र का निर्माण हुआ। बच्चे स्वयं दीवार पर लिखे गये हिंदी, गणित की अवधारणाओं को समझने लगे।
- शाला परिसर सुविधायुक्त एवं आकर्षक बन गया।

स्थायित्व :

भौतिक सुविधाओं से शाला सुसज्जित हो गई है। विद्यार्थियों हेतु शाला का वातावरण सुविधायुक्त हो गया है। बच्चे गतिविधि केंद्र में अब स्वतः अध्यापन करते हैं, व्यक्तिगत एवं अपने मित्र समूह में शिक्षण करते हैं, शिक्षकों ने भी पढ़ाने हेतु आकर्षक एवं रोचक सामग्री का निर्माण कक्षा एवं विषयवार किया है। इन सबके परिणाम स्वरूप अशासकीय शाला से सरकारी शाला में बच्चे प्रवेश प्राप्त कर रहे हैं।

आगामी कार्य योजना :

- विद्युत व्यवस्था सुनिश्चित करना।
- स्मार्ट क्लासेज के लिए संसाधन जुटाना ।
- शाला परिसर को स्वच्छ भारत की भावना से जोड़कर आकर्षक बनाना ।

केसरी चन्द्र डेहरिया
(प्र. प्रधानाध्यापक)
मोबाईल : 8989483782

प्रोत्साहन से मिली सफलता

शासकीय माध्यमिक शाला मार्तण्ड क्रमांक 1, रीवा

यू-डाईस कोड : 23140126703

- विकासखंड : रीवा
- जिला : रीवा
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 3 - विद्यार्थी संकेन्द्रित करना

उप डोमेन क्र. 4 - विद्यार्थियों की प्रतियोगिताओं में सहभागिता

शासन द्वारा संचालित विभिन्न छात्रवृत्ति हेतु प्रोत्साहन योजनाओं में विद्यालय के छात्र/छात्राओं ने राज्य स्तर पर बेहतर प्रदर्शन किया और शाला के नामांकन मे वृद्धि हुई।

पृष्ठभूमि :

विंध्य प्रदेश की राजधानी एवं सफेद शेरों की धरती रहा रीवा जिला जो संभागीय मुख्यालय भी है, सत्र 2002-03 मे स्वतंत्र अस्तित्व मे आया।

भौतिक संरचना :

प्रधानाध्यापक कक्ष	अध्यापन कक्ष	प्रयोगशाला कक्ष	पुस्तकालय कक्ष	क्रीड़ा कक्ष	स्टाफ रूम
1	7	1	0	0	0

शैक्षणिक सत्र 2021-22 का नामांकन :

शैक्षणिक - सत्र	बालक	बालिका	योग
2021-2022	276	124	400

इस विद्यालय में लगभग 20 किलोमीटर की परिधि से विद्यार्थी अध्ययन करने आते हैं, जिनमें सभी वर्गों के बच्चे हैं। अधिकतर मजदूर , किसान या प्राइवेट नौकरी करने वाले पालकों के बच्चे दर्ज हैं।

विंध्य क्षेत्र हमेशा से लोककलाओं, सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक दृष्टि से समृद्ध रहा है। तुलसीदास की तपोस्थली चित्रकूट, मैहर शारदा माता मंदिर, रानी तालाब, चिरहुला, व्यंकट भवन, धारकुड़ी, महामृत्युंजय मंदिर, देव तालाब, शिव मंदिर, भैरवनाथ मंदिर विन्ध्य क्षेत्र की धरोहर हैं। प्राकृतिक दृष्टि से रीवा का कोई जवाब नहीं। चारों ओर विभिन्न नदियों एवं घाटियों (सोहागी, पपरा, छुहिया, बरदहा, मोहनिया) बांधवगढ़ व्हाइट टाइगर सफारी मुकुन्दपुर, से घिरे रीवा में चार बड़े एवं कुछ छोटे जल प्रपात हैं जो कि दुनिया में कहीं नहीं हैं। यहां की धरती में मूर्धन्य कलाकार एवं साहित्यकार पैदा हुए हैं। यहां के महाराज जू देव विश्वनाथ सिंह ने हिन्दी का पहला नाटक आनन्द रघुनंदन लिखा। शिव मंगल सिंह सुमन, ठा. गोपाल शरण सिंह, सिद्ध विनायक द्विवेदी एवं अन्य साहित्यकारों के साथ ही तानसेन जैसे कलाकार इसी धरती में जन्मे हैं। इस प्रकार विन्ध्य क्षेत्र विभिन्न विभूतियों से भरा पड़ा है। कला के क्षेत्र में सुपाड़ी का खिलौना एक मात्र रीवा में ही बनाया जाता है। यहां की बोली बघेली है।

समस्या :

- शासन द्वारा संचालित विभिन्न मेधावी छात्र चयन योजनाओं में विद्यार्थियों द्वारा सफलता प्राप्त नहीं कर पाना।

समस्या समाधान की प्रक्रिया :

प्रधानाध्यापक द्वारा उक्त समस्या के समाधान के लिए सर्वप्रथम जन भागीदारी एवं विभिन्न संस्थाओं से सहयोग प्राप्त कर बच्चों के बैठने हेतु पर्याप्त स्थान एवं सुविधा युक्त विद्यालय का सुदृढ़ ढांचा तैयार किया और बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा कर आकर्षक विद्यालय का रूप दिया।

विद्यालय और छात्र की उत्कृष्टता के लिए प्रधानाध्यापक एवं शिक्षक स्टाफ ने मिलकर कई कदम उठाए :

1. **विभिन्न छात्र प्रोत्साहन योजनाओं की जानकारी विद्यार्थियों को देना -**

- जूनियर साइंस ओलम्पियाड मध्यप्रदेश राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अधीन राज्य विज्ञान संस्थान, जबलपुर द्वारा आयोजित होती है। इसमें कक्षा 7वीं एवं 8वीं में अध्ययनरत छात्र ही प्रतिभागी हो सकते हैं।
- जूनियर मैथ ओलम्पियाड राज्य शिक्षा केन्द्र के निर्देश पर राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान जबलपुर द्वारा प्रति वर्ष संचालित होती है, जिसमें कक्षा 7वीं एवं 8वीं में अध्ययनरत छात्र ही प्रतिभागी हो सकते हैं।
- राष्ट्रीय मीन्स कम मेरिट छात्र वृत्ति राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा संचालित प्रतियोगी परीक्षा जो केवल कक्षा 8वीं के अध्ययनरत छात्रों के लिए आयोजित होती है।

2. **शैक्षणिक योजना तैयार कर अभ्यास कराना -**

- सहकर्मियों/शिक्षक एवं पी.टी.एम. की नियमित बैठक लेकर शैक्षणिक कार्यों की योजना तैयार करना और छात्रों के कक्षागत पाठ्यक्रम के लिए गतिविधियों की तैयारी कराना। विभिन्न योजनाओं से सम्बंधित पाठ्य सामग्री विद्यार्थियों को उपलब्ध करवाना और शिक्षकों द्वारा सरलतम तरीकों से अध्यापन कराना।
- इस परीक्षा की तैयारी हेतु इसके पाठ्यक्रम का सूक्ष्म अध्ययन कर शिक्षकों एवं छात्रों के साथ बैठक कर योजना बनाई। परीक्षा तिथि से एक माह पूर्व पाठ्यक्रम पूर्ण कर लिया जाएगा ।
- पूर्व वर्षों में आये प्रश्नों का अभ्यास। विषय के जिन अध्यायों से प्रश्न आये हैं उनको शिक्षक एवं छात्रों ने मिलकर अपनी पुस्तकों से छांटा और उनके अनुरूप पाठों से अन्य प्रश्नपत्र तैयार किए। शिक्षकों ने सरलतम तरीकों से छात्रों को पढ़ाया।
- प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों ने मिलकर छात्रों से वस्तुनिष्ठ प्रश्न तैयार करवाए और कक्षा मे अभ्यास कराया गया।
- छात्रों के विभिन्न समूहों का निर्माण कराया गया और उन समूहों में परस्पर प्रश्न मंच के कार्यक्रम का आयोजन किया गया ।

3. **प्रार्थना सभा एवं बालसभा द्वारा की गई तैयारी -**

- बालसभा में विभिन्न विषयों की प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम संचालित कर ज्ञानात्मक विकास करना। प्रतिसप्ताह शिक्षकों एवं बच्चों के साथ शैक्षिक गुणवत्ता के संबंध में समीक्षात्मक बैठक करना।
- प्रार्थना सभा में स्वयं लिखकर एवं पढ़कर सुनाने की परम्परा प्रारम्भ की गयी। जिससे छात्रों में लेखन कौशल एवं आत्म अभिव्यक्ति का विकास हुआ। छात्रों में शैक्षिक अभिरुचि बनी रहे इसके लिए सप्ताह में एक दिन कक्षावार एवं विषयवार स्मार्ट क्लासेस चलाने का निर्णय लिया गया तथा उसका परिपालन भी किया जाने लगा।
- प्रत्येक शनिवार को बालसभा में ज्ञानात्मक विकास हेतु प्रत्येक विषय में प्रश्नोत्तरी के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। गीत, कहानी एवं निबंध लेखन तथा सामान्य ज्ञान से सम्बंधित प्रश्नोत्तर पर चर्चा की जाती है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है, जिसके लिए छात्रों से शारीरिक गतिविधियां- योग, पीटी तथा खेलकूद कराया जाता है और खेलकूद की प्रतियोगिता में प्रथम स्थान अर्जित



बाल सभा में बच्चों द्वारा प्रस्तुतिकरण।

करने वाले छात्रों को पुरस्कृत किया जाता है, जिससे छात्र प्रोत्साहित होकर इन गतिविधियों में भाग लेते रहे।

4. स्मार्ट क्लास का संचालन -

- शाला में कक्षावार एवं विषयवार स्मार्ट क्लास चलाने की योजना एवं क्रियान्वयन। प्रधानाध्यापक द्वारा समय-समय पर कक्षा की मॉनिटरिंग करना और गणित विषय पढ़ाना। विद्यालय में उपलब्ध लेपटाप के माध्यम से विद्यार्थियों ने अभ्यास और उनसे सम्बंधित जानकारियां प्राप्त कर अभ्यास किया। शिक्षकों ने इस कार्य में उनकी मदद की।

5. प्रधानाध्यापक नेतृत्व क्षमता प्रशिक्षण के अनुभव का उपयोग -

- डाइट रीवा द्वारा दिये गये विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षण एवं प्रधानाध्यापक के लीडरशिप क्वालिटी प्रशिक्षण अन्तर्गत शैक्षणिक गुणवत्ता बढ़ाने के साथ ही टीम भावना का विकास कैसे किया जाए, सीखने के उपरान्त शाला में इसका उपयोग किया गया।

बदलाव :

1. जूनियर साइंस ओलिंपियाड में चयनित हुए विद्यार्थी -

- वर्ष 2013-14 मे 2 विद्यार्थी ही इस परीक्षा में चयनित हुए थे जो कि सत्र 2018-19 मे बढ़कर 10 विद्यार्थी सफल हुए। जिला स्तर पर उत्कृष्ट विद्यालय प्रवेश परीक्षा में विद्यालय के सर्वाधिक छात्र मेरिट सूची में चयनित होते हैं।
- जूनियर साइंस ओलंपियाड के चयनित छात्रों को मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा रूपये 2501.00 के चेक, आने जाने का मार्ग व्यय एवं ठहरने एवं भोजन की व्यवस्था की जाती है। यह जानकारी जब अन्य छात्रों को होती है तो छात्र में प्रेरणा का भाव जागृत होता है।



- **जूनियर साइंस ओलिंपियाड के चयनित छात्रों का पुरस्कार वितरण समारोह।**

2. जूनियर गणित ओलंपियाड परीक्षा में विद्यार्थियों का चयन -

एक और प्रतिष्ठित मेधावी छात्र चयन योजना की जो राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान जबलपुर द्वारा आयोजित की जाती है वह है जूनियर गणित ओलम्पियाड परीक्षा। इसमें भी विद्यालय के छात्रों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। परिणामस्वरूप जूनियर गणित ओलम्पियाड में भी छात्रों को सफलता मिली जो इस प्रकार है -

परीक्षा का नाम	सत्र	म.प्र. के चयनित छात्रों की संख्या	इस संस्था के छात्रों की संख्या
म.प्र. गणित ओलंपियाड	2016-17	121	18
म.प्र. गणित ओलंपियाड	2017-18	95	21

सत्र 2017 में इस परीक्षा में मेरी शाला के छात्रों ने प्रदेश में पहला स्थान अर्जित करने के साथ तीसरा, छठवाँ, नौवाँ स्थान अर्जित किया। इन छात्रों को राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान जबलपुर द्वारा सम्मानित किया गया। सत्र 2018 में भी पहला स्थान विकास साहू पिताश्री विनोद साहू को प्राप्त हुआ। राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा श्री विकास साहू को 5000 रू के चेक से प्रोत्साहित किया गया। दूसरे स्थान पर रहे शिवेन्द्र पटेल को 3000 रू एवं तीसरे क्रम के छात्र महेश्वर शुक्ला को 2000 रू के चेक से सम्मानित किया गया। संस्थान के अन्य छात्रों को प्रमाण पत्र एवं अन्य सामग्रियों के माध्यम से सम्मानित किया गया।

3. राष्ट्रीय मीन्स कम मेरिट स्कालरशिप परीक्षा में उत्तम प्रदर्शन -

राष्ट्रीय मीन्स कम मेरिट स्कालरशिप परीक्षा में भी विद्यालय के छात्रों का प्रदर्शन उल्लेखनीय रहा। इन चयनित छात्रों को कक्षा 9वीं से कक्षा 12वीं तक अध्ययन करने हेतु छात्रवृत्ति प्राप्त होती है ।

राष्ट्रीय मीन्स कम मेरिट स्कालरशिप परीक्षा में चयनित छात्रों की सत्रवार सूची -

शिक्षण सत्र	2012-2013	2013-2014	2014-2015	2015-2016	2016-2017	2017-2018	2018-2019	2019-2020	2020
छात्रों की संख्या	18	24	34	44	32	42	43	35	परीक्षा का आयोजन अभी नहीं हुआ।



रीवा जागरण ..... रीवा, 21 फरवरी 2020 5
www.jagranmp.com/epaper

मार्तण्ड एक के छात्र सौरभ सिंह मप्र में टॉप पर

राष्ट्रीय मींस कम मेरिट छात्रवृत्ति परीक्षा में जिले के 168 छात्रों का चयन

जागरण, रीवा

नेशनल मींस कम मेरिट स्कालरशिप परीक्षा मध्य प्रदेश 2019-20 का परिणाम घोषित कर दिया गया है जिसमें शासकीय निर्मित स्कूल मार्तंड क्रमांक 1 रीवा के 35 छात्र चयनित किए गए हैं। इस विद्यालय के कक्षा आठवीं के छात्र सौरभ सिंह ने 136 अंक पाकर मध्यप्रदेश में पहला स्थान प्राप्त किया है। बताया गया है कि मेरिट में चयनित छात्र-छात्राओं को कक्षा नौवीं से बारहवीं तक प्रतिवर्ष 12 हजार रुपए स्कालरशिप दिए जाने का प्रावधान है। उल्लेखनीय है कि विगत 03 नवम्बर 2019 को आयोजित इस चयन परीक्षा में प्रदेश-भर के लगभग 01 लाख 10 हजार नौ सौ उनतीस बच्चे शामिल हुए थे। इनमें से मध्यप्रदेश के लिये निर्धारित कोटे के अनुसार प्रदेश के 6541 विद्यार्थी अंतिम रूप से छात्रवृत्ति के लिये चयनित हुए हैं। राष्ट्रीय मींस कम मेरिट छात्रवृत्ति के तहत चयनित विद्यार्थियों को कक्षा 9वीं से 12वीं तक प्रति वर्ष बारह हजार रुपये की छात्रवृत्ति प्राप्त होती है। जानकारी संबंधी कार्यवाही तत्काल पूर्ण करने के लिये जिला शिक्षा अधिकारियों को निर्देशित किया है। परीक्षा में पात्र पोषित किए विद्यार्थियों को अपनी कक्षा 7 वीं की अंक सूची, माता-पिता का आय प्रमाण पत्र, एसडीआई या राष्ट्रीयकृत बैंक में खोले गए बचत खाते की जानकारी, कक्षा 9 वीं में नियमित रूप से अध्ययनरत होने का विहित प्रमाणीकरण, आवश्यकतानुसार जाति प्रमाण-पत्र तथा निःशक्तता प्रमाण-पत्र जैसे अभिलेख अपनी शाला में उपलब्ध कराने होंगे। स्कूल के प्रधानअध्यापक विद्यार्थियों की जानकारियाँ संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में प्रस्तुत करेंगे। तत्पश्चात विद्यार्थी और संस्था का पंजीयन राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल पर किया जायेगा। राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल पर तत्संबंधी कार्य प्रारंभ होने की तिथि से संबंधित जानकारी पृथक से प्रदान की जायेगी। विद्यालय के चयनित छात्र छात्राओं को विद्यालय के प्रधानाध्यापक केसरी प्रसाद तिवारी गिरीश शुक्ला राजेंद्र दुबे देवराज चतुर्वेदी रमाकांत दुबे श्रीमती रेनू बाजपेई रीना पांडे शारदा सिंह अंजना तिवारी अर्पण मिश्रा व विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष सुरेश चपिल द्वारा बधाई एवं शुभकामनाएं दी गई हैं।

इनका हुआ चयन

सौरभ सिंह मार्तंड क्रमांक एक,आयुष मिश्रा माध्यमिक शाला पैंसाई,नीरज यादव माध्यमिक शाला मार्तंड क्रमांक एक,आयुष गुप्ता मार्तंड नंबर 1,सार्थक शुक्ला माध्यमिक शाला पैंसाई,सौरभ साकेत,माध्यमिक शाला रीठी,पंकज कुशवाहा माध्यमिक शाला मार्तंड नंबर 1,शिवेंद्र साहू माध्यमिक शाला मार्तंड नंबर 1,उत्थम द्विवेदी माध्यमिक शाला मार्तंड नंबर 3,अंशुल सिंह माध्यमिक शाला मार्तंड नंबर 3, देवेश कुमार साकेत माध्यमिक शाला रीठी,नम्रता मिश्रा माध्यमिक शाला पैंसाई,नम्रता मिश्रा सपना पटेल माध्यमिक शाला पैंसाई,महकूब खान,सिद्धार्थ त्रिपाठी,अतुल चुनकर,मोहनी साहू,दीपेंद्र चौरसिया,आंशिक पटेल,शिक्षा मिश्रा,आयुष सेन,कार्तिका दुबे,अमन गुप्ता, साक्षी द्विवेदी,आकाश साहू, बेला पटेल, हिमांशु सिंह, खुशी गौतम, ऋतिक विश्वकर्मा, संजलि मिश्रा, जय प्रकाश पटेल,रितेश द्विवेदी, विजय कुमार रजक, देव मिश्रा, आदित्य विश्वकर्मा, अभिषेक कुमार सोनी, प्रभात कुमार नामदेव,अभिनव शुक्ला, श्रेया पाठक, विपिन चौधरी, प्रेम कुशवाहा, सुजल तिवारी, आरती सोनी, नर्मदा शुक्ला, अमन पाठक, सभी कुमार दहिया,सीता पटेल, हिमांशु सिंह, खुशी गौतम, ऋतिक विश्वकर्मा, अंजली मिश्रा, जयप्रकाश पटेल, अभिषेक कुमार सोनी, आदित्य विश्वकर्मा ,देव मिश्रा, विजय कुमार रजक ,रितेश द्विवेदी, प्रभात नामदेव, अभिनव शुक्ला, विपिन चौधरी, प्रेम कुशवाहा, सुजल तिवारी, रितिका सोनी, अमन पाठक, नीरज यादव, आयुष गुप्ता, पंकज कुशवाहा, शिवम साहू, आयुष जैन, चेतेंद्र मिश्रा, अजय प्रजापति, विनय सोनी, पाल सिंह, अंजली मिश्रा, आदिल, प्रेम कुशवाहा, सुजल तिवारी, नयन गुप्ता, उत्पल नामदेव, शिवांशी सिंह, अकमल मरियम उस्मानी, पलक तिवारी, राकेश कुशवाहा, श्रेयांश सिंह, हर्षित तिवारी, खुशी सिंह, पुष्पा सिंह ,दीपक हरिओम साकेत सहित अन्य विद्यालयों के छात्र एनएमएमएस की परीक्षा में शामिल हुए।

शाला के छात्र द्वारा प्रदेश स्तर पर राष्ट्रीय मीन्स में प्रथम स्थान प्राप्त।

4. विद्यालय नामांकन में सकारात्मक वृद्धि -

जूनियर साइंस ओलम्पियाड, गणित ओलम्पियाड, राष्ट्रीय मीन्स कम मेरिट स्कालरशिप, उत्कृष्ट विद्यालय चयन परीक्षा में छात्र सम्मिलित होकर चयनित होने लगे, जिसके परिणामस्वरूप विद्यालय के नामांकन में सकारात्मक वृद्धि होने लगी। इन सभी योजनाओं को संस्था में संचालित करने में जो परिणाम प्राप्त हुए उससे विद्यालय की छात्र संख्या 471 पहुँच गई थी। किन्तु 2015-16 मे विद्यालय अँग्रेजी माध्यम में परिवर्तित होने के फलस्वरूप सत्र 2019-20 में यह संख्या 251 पर आ गई थी। अब कलेक्टर रीवा की अनुमति पर पुनः विद्यालय दोनों माध्यमों में संचालित होने के कारण यह संख्या 400, 2021-22 पर पहुँच गई है।

स्थायित्व :

- हमारे विद्यालय की सफलता को देखते हुए विभिन्न अशासकीय और कान्वेन्ट विद्यालयों के छात्र अपना नाम हमारे विद्यालय में लिखवा रहे हैं। कई छात्रों ने राज्य स्तर पर भी खेलकूद में सहभागिता की है।
- विद्यालय के शिक्षकों का छात्रों के प्रति लगाव प्रतियोगिताओं में सफलता के साथ छात्रों के कक्षा अनुरूप पाठ्यक्रम की तैयारी एवं शैक्षिक गुणवत्ता को बढ़ाता है। प्रत्येक छात्र से चर्चा कर उसकी व्यक्तिगत समस्याओं पर चर्चा एवं उसका निराकरण स्वयं छात्र एवं शिक्षक मिल कर करते हैं।
- विद्यालय के पास विभिन्न चयन प्रतियोगिताओं की सामग्री एवं शिक्षण योजना आगामी समय के लिए भी उपलब्ध है।

आगामी योजना :

- सभी छात्रों के बैठने के लिए फर्नीचर उपलब्ध हो ऐसा प्रयास होगा ।
- सुसज्जित लाइब्रेरी की स्थापना एवं सुगम संचालन।
- डिजिटल बोर्ड लगवाने का प्रयास।

केशरी प्रसाद तिवारी
(प्रधानाध्यापक)
मोबाईल : 9755779661
Email : tiwarikp789@gmail.com

आनंददायी वातावरण

शासकीय माध्यमिक विद्यालय, सलैया

यू-डाईस कोड : 23320304003

- विकासखंड : फंदा नया शहर
- जिला : भोपाल
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 4 - अधिगम के लिए समाज व विद्यालय का सह-संबंध

उप डोमेन क्र. 1 - समाज एवं विद्यालय प्रबंधन समिति की सहभागिता

विद्यालय परिसर के पास कलियासोत नदी के कारण असुरक्षित वातावरण था और विद्यालय में शिक्षा के लिए आनंददायी वातावरण का अभाव था। जिसे प्रधानाध्यापक द्वारा सक्रिय एवं ऊर्जावान शिक्षकों के साथ विद्यालय परिसर को सुरक्षित करने हेतु प्रयास किये गये एवं खेलों के माध्यम से बच्चों का शाला के प्रति आकर्षण बढ़ा एवं उनकी उपस्थिति में वृद्धि हुई।

पृष्ठभूमि :

यह शासकीय माध्यमिक विद्यालय सलैया, सरदार वल्लभ भाई पटेल फेस-2 बी.डी.ए कॉलोनी के पीछे ग्राम सलैया में स्थित है। विद्यालय के समीप ही कलियासोत नदी बहती है जिसके दोनों ओर सलैया एवम सनखेड़ी ग्राम स्थित हैं। यह पूरा क्षेत्र नगर निगम कोलार के वार्ड न.83 के अंतर्गत आता है।

इस विद्यालय की स्थापना सन् 1951 में 22 छात्रों के साथ पहले कक्षा 1 से 5 तक प्राथमिक विद्यालय के रूप में हुई। सत्र 2006 में इसका उन्नयन माध्यमिक विद्यालय के रूप में 44 छात्र छात्राओं एवं 3 शिक्षकों के साथ हुआ। छात्र केन्द्रित शिक्षा एवं सहज वातावरण के कारण वर्तमान में कक्षा 1 से 8 तक 300 विद्यार्थी व 11 शिक्षक पदस्थ हैं।

विद्यालय के पीछे एक पूर्ण नियोजित आधुनिक सुविधाओं से युक्त कॉलोनी आकृति इको सिटी है। सलैया में उच्च आय वर्ग के लोगों का निवास है जबकि सनखेड़ी ग्राम में अधिकांश मजदूर या छोटे व्यवसायी निवास करते हैं। विद्यालय से 1 किलोमीटर के दायरे में 2 बड़े अशासकीय विद्यालय सागर पब्लिक स्कूल एवं वर्ल्ड वे इंटरनेशनल स्कूल हैं। समीप ही राजीव गांधी कॉलेज, चौहान बी.एड. कॉलेज है।

समस्या :

- विद्यालय में सुरक्षित एवं आनंददाई वातावरण का अभाव।

समस्या समाधान की प्रक्रिया :

- **शाला परिसर को सुरक्षित करने हेतु प्रयास -**

  पालकों से चर्चा के दौरान एक समस्या सामने आई कि हमारा विद्यालय परिसर चारों तरफ से खुला था, पास ही कलियासोत नदी बहती है, इसलिए पालकों को छात्रों की सुरक्षा की चिंता रहती थी। बच्चों के लिए भी शैक्षिक वातावरण बनाने के लिए आवश्यक है कि वे स्वयं को सुरक्षित महसूस करें।

  प्रधानाध्यापक ने अपने ऊर्जावान और सक्रिय रहने वाले शिक्षकों से चर्चा की और विद्यालय परिसर को सुरक्षित करने हेतु प्रयास प्रारंभ कर दिए।



छात्रों को कलियासोत नदी से परिचय करवाते हुए शिक्षक।

छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं व समस्याओं को जानना एवं उनका सहयोग करना -

सबसे पहली आवश्यकता विद्यार्थियों की दक्षताओं को पूर्ण करना था। इसके लिए उन्हें उनके घर के आसपास रहने वाले हमारे भूतपूर्व छात्रों से मिलवाया एवं उनकी मदद से उनकी पढ़ाई में रुचि जाग्रत की। क्योंकि छात्र अपने हम उम्र साथियों से कहीं ज्यादा अच्छे से सीखते हैं। कुछ छात्राएं हमें ऐसी मिली जो कॉलेज में पढ़ रही थीं एवं प्रोजेक्ट के तहत हमारे स्कूल में प्रैक्टिस टीचिंग के लिए आई थीं। उनका प्रोजेक्ट खत्म होने के बाद भी उन्होंने हमें सहयोग किया।

विद्यालय के सामने समस्या बड़ी थी, पैसों की कमी थी। अतः विद्यालय ने पहले कटींली झाड़ियों को लोहे के तार से बांधकर फेंसिंग बनाई, जिसे देखकर एक स्वयंसेवी संस्था इनरव्हील क्लब की महिलाओं के द्वारा सहयोग का आश्वासन मिला और कार्य प्रारंभ हो गया। उन्होंने पूरे परिसर को बंद करने के स्थान पर वाटिका एवं शाला भवन को घेरकर एक गेट एवं दीवार का निर्माण करने का प्रस्ताव स्वीकार किया।

इस प्रकार परिसर के बंद होते ही हमारे विद्यालय में मानो हरितक्रांति आ गई। शिक्षक और छात्र मिलकर अपने-अपने घरों से, नर्सरी से पेड़, खाद, मिट्टी इत्यादि ला रहे थे और लगा रहे थे। सभी छात्रों का पर्यावरण से एक अलग सा नाता बन गया। वे उन पेड़ों की देखभाल भी कर रहे थे और खेल-खेल में बहुत कुछ सीख भी रहे थे।

- जो छात्र अपने माता पिता के साथ काम पर जाते थे उन्हें कैसे रोका जाए ? इसके लिए उनके माता-पिता से कहा कि आप इसके लिए स्कूल के 4 घंटे हमें दे दीजिए। उसके अतिरिक्त यदि मजबूरी हो तो आप उनकी उम्र को देखते हुए उन्हें अपने साथ रखें। कुछ बच्चे जो 14 वर्ष से ऊपर के हैं उन बच्चों को 12 से 4 तक ही केवल विद्यालय आने को कहा गया, क्योंकि कई बच्चे शाम को दुकानों में काम करते थे।

कई बच्चियों से जब बात की तो उन्होंने कहा, हम सुबह मम्मी के साथ जाएंगे एवं 11 बजे तक स्कूल आ जाएंगे। वे जिन आसपास के घरों में जाती थीं, उन लोगों से बात की। जिससे वो घरों की महिलाएं भी बच्चों की पढ़ाई में सहयोग करने लगीं।

सबसे कठिन समस्या उनकी थी जो घर में रहकर घर के काम करती थीं और अपने छोटे भाई बहनों को संभालती थी। इस समस्या के लिए प्रधानाध्यापक ने आँगनवाड़ी की दीदी से बात की। उनसे कहा कि जितनी देर तक ये बच्चियाँ स्कूल में रहेंगी आप इन छोटे बच्चों को संभालेंगे। 3 साल तक के बच्चों को वे स्कूल में ही साथ में लाने लगी और साथ में संभालने लगी।

पालक - शिक्षक बैठक (P.T.M.) -

विद्यालय में आयोजित P.T.M. की बैठक में अधिकांश पालक नहीं आ पाते थे क्योंकि वो अपनी 1 दिन की मजदूरी का नुकसान नहीं कर सकते। इसलिए उनसे मुलाकात करने के लिए रविवार का दिन निश्चित किया गया। छात्रों से चर्चा कर उनसे समय लेकर सभी शिक्षक उनके पालकों से मिले, क्योंकि सामूहिक पालक-शिक्षक बैठक में पालक एवं छात्र अपनी पारिवारिक समस्याओं पर चर्चा नहीं करते थे अतः व्यक्तिगत बैठके की गईं।



पालकों से चर्चा करते हुए अध्यक्ष।



विद्यालय की बगिया में काम करते हुए छात्र। अपने पौधों का प्रदर्शन करती छात्राएं।

- **शाला के वातावरण को आनन्ददायी बनाने के लिए विद्यालय में खेल, चित्रकारी, योग एवं प्राणायाम, जूडो-कराटे, संगीत की व्यवस्था -**

  छात्रों की विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति के उपरांत विद्यालय के वातावरण को आनंददायी बनाने के लिए खेलों को बढ़ावा देना आवश्यक था। अतः इनडोर गेम्स जैसे- लूडो, साँपसीढ़ी, केरम, बेडमिन्टन, पासे इत्यादि की व्यवस्था की गई। शिक्षक भी उनके साथ खेलते हैं, जिससे शिक्षक छात्रों के संबंधों में आत्मीयता आ गई है। सीखने की प्रक्रियाओं को खेल से जोड़ देने से उनकी क्या समस्याएं हैं, ये शिक्षक जान पा रहे थे। छात्राओं को विशेष शिक्षक के द्वारा जूडो कराटे की ट्रेनिंग भी दी गई जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ा।



शिक्षक के मार्गदर्शन में जूडो कराटे का अभ्यास करती छात्राएं।

योगाभ्यास -

छात्रों में एकाग्रता बढ़ाने के लिए योगाभ्यास एक महत्त्वपूर्ण क्रिया है। प्रतिदिन 10 मिनट एवं सप्ताह में एक कालखंड योग का लगाया गया। जिसमें ग्राम के वरिष्ठ नागरिक एवं योग में रुचि रखने वाले व्यक्तियों के द्वारा छात्रों को योगाभ्यास व प्राणायाम सिखाया जाता है। इससे उनके मन की चंचलता दूर हुई एवं एकाग्रता बढ़ गई।



योगाभ्यास करती छात्राएं।

पुस्तकालय -

छात्रों की पढ़ने में रुचि बढ़ने के उद्देश्य से विद्यालय ने इसे प्रति सप्ताह करने का निर्णय लिया। छात्र प्रतिदिन जो कहानियाँ पुस्तकालय में पढ़ते हैं, उन्हें बालसभा में अन्य छात्रों को सुनाते हैं। शिक्षकों के द्वारा उन्हें कुछ शब्द दिए जाते हैं जिनसे वे नई कहानियां बनाते हैं और सुनाते हैं। इसी प्रकार कुछ विद्यार्थियों को सामाजिक मुद्दों, कुप्रथाओं, बुराइयों पर कविताएँ लिखने को दी गई, जिनकी विद्यार्थियों द्वारा आश्चर्यजनक प्रस्तुतियां दी गई।

अब वे बड़ी - बड़ी समस्याओं पर अपने मौलिक विचार बोलते हैं जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ा और उनकी सोच विकसित हुई। दैनिक समाचार पत्रों में आए हुए लेखों का भी विद्यार्थी संकलन करते हैं एवं एक दूसरे से उन पर चर्चा कर अपने विचार साझा करते हैं।

चित्रकारी -

छात्रों की भावनाओं को समझने का एक और माध्यम है चित्रकारी। क्योंकि जब भी उन्हें कोई ऐसा विषय दिया जाता है जो उनके जीवन से सीधा जुड़ा होता है तो वे उसपर चिंतन अवश्य करते हैं। परन्तु कई छात्र बोल नहीं पाते हैं। इसी प्रकार कुछ लिख नहीं पाते हैं। ऐसे छात्र चित्रकारी के माध्यम से भावपूर्ण तरीके से अपनी बात प्रकट करते हैं, उनमें चिंतन की प्रवृत्ति तो है बस माध्यम की आवश्यकता है। इसी प्रकार कुछ छात्र बचपन से ही अंतर्मुखी एवं कलात्मक प्रवृत्ति के होते हैं। चित्रकारी उनके लिए एक सम्पूर्ण माध्यम है।

छात्रों को प्रति सप्ताह एक गंभीर सामाजिक समस्या जैसे - बालिका शिक्षा, भ्रूणहत्या, नशीले पदार्थों का सेवन, जल संरक्षण, वृक्षारोपण इत्यादि दिया जाता है जिस पर वे चित्रों के माध्यम से अपने भाव प्रगट करते हैं।



विद्यार्थियों को प्रोजेक्टर के माध्यम से गणित पढ़ाती हुई शिक्षिका।

हमने कई ऐसे छात्रों को प्रवेश दिया था जिन्होंने कक्षा 3 या 4 के बाद पढ़ाई छोड़ दी। उन्हें इस प्रयास से बहुत फायदा हुआ। भाषा के लिए अंग्रेजी में श्रीमती चारू दीक्षित मैडम एवं संस्कृत विषय में श्रीमती कीर्ति मैडम ने छात्रों को इन भाषाओं का ज्ञान कराने में विशेष प्रयास किये।

विद्यालय ने समावेश संस्था के सहयोग से छात्रों की विज्ञान में रुचि जाग्रत करने एवं सही समझ बनाने के लिए विज्ञान मेले का आयोजन किया। जिसमें छात्रों ने बहुत उत्साह के साथ भागीदारी की। उन्हें इसके माध्यम से कठिन लगने वाली अवधारणाएं भी समझ में आ गई।



विज्ञान मेले में प्रतिभागी छात्र-छात्राएं अपने मॉडल के साथ।



बाल मेले में छात्रों की सहभागिता।

छात्रों की रुचि को जानने के लिए 14 नवम्बर बाल दिवस के दिन बाल मेले का आयोजन किया, जिसमे सभी छात्रों ने भाग लिया एवं अपनी कार्यकुशलता से हम सभी को चकित कर दिया।

बदलाव :

- विद्यालय में सुरक्षित एवं आनंददायी वातावरण के कारण सार्थक बदलाव आया।
- विद्यालय का अंतिम लक्ष्य ऐसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य छात्र तैयार करना है जिन पर देश समय और समाज गर्व कर सके।
- वर्तमान में कोविड -19 के इस कठिन समय में भी पूर्व में किये गए कार्यो के परिणामस्वरूप हमें अपने छात्रों तक पहुँच बनाने में कठिनाई नहीं आई।
- सब कुछ बंद होने के बाद भी 1 माह के अन्दर ही शत प्रतिशत विद्यार्थी विद्यालय से जुड़ गए। विद्यालय के जो छात्र लॉकडाउन के समय अपने मूल निवास को चले गए थे वे भी शिक्षकों से दूरस्थ शिक्षण के माध्यम से जुड़े रहे एवं सभी शिक्षकों के प्रयासों से उनकी पढ़ाई का ज्यादा नुकसान नहीं हुआ है।
- शिक्षकों ने उन्हें प्रति सप्ताह गतिविधियों के माध्यम से एवं पालकों के सहयोग से उनके अधिगम प्रक्रिया में व्यवधान को कम किया।
- कोविड 19 महामारी से बचने के उपायों से विद्यार्थियों व पालकों को अवगत कराया एवं मानसिक रूप से उन्हें कमजोर नहीं होने दिया। विद्यार्थियों के संपर्क में रहे एवं संवाद बनाए रखा।

स्थायित्व :

1. विद्यालय में आनंददायी वातावरण का निर्माण स्थाई रूप से हो गया।
2. विद्यालय में अधिगम प्रक्रिया में स्थायी सुधार हुआ।

इस पूरे क्रियाकलापों एवं घटनाक्रम में एक बात उल्लेखनीय है कि शिक्षकों को और भी प्रोत्साहन मिला जब वरिष्ठ कार्यालय से आये अवलोकनकर्ताओं एवं मूल्यांकनकर्ताओं के द्वारा शिक्षकों की तत्परता, अनुशासन एवं कार्यों के प्रति समझ की प्रशंसा की गई।

विद्यालय की शिक्षिका श्रीमती माधुरी पाण्डेय को क्लस्टर लेवल एवं विकासखंड स्तरीय मास्टर ट्रेनर के रूप में नियुक्त किया गया तथा उनके द्वारा तैयार डिजिटल निष्ठा डायरी को डाइट भोपाल द्वारा सराहा गया।

विद्यालय के शत-प्रतिशत शिक्षकों के द्वारा निष्ठा एवं सी .एम. राइज के सभी कोर्स समय सीमा में पूर्ण किये। वर्तमान महामारी के समय में 90 प्रतिशत छात्रों को शिक्षक वाट्सअप ग्रुप के माध्यम से डिजीलेप में आए हुए वीडियोज से पढ़ा रहे हैं, यहाँ गत 18 माह से शिक्षक मोहल्ला क्लास में पढ़ाई करवा रहे हैं तथा शत-प्रतिशत विद्यार्थियों तक अपनी पहुँच बनाने में सफल रहे हैं।

इस कार्य हेतु विकासखंड स्तरीय समीक्षा बैठक में विद्यालय के प्रयासों का प्रस्तुतीकरण किया गया एवं विद्यालय की सफलता की कहानी को सभी के साथ साझा किया गया।

20 छात्रों का चयन प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से आवासीय विद्यालयों में हुआ। जहाँ वे अपनी उच्च कक्षाओं की पढ़ाई कर रहे हैं एवं प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं। प्रतिवर्ष मेरिट कम मीन्स परीक्षा में भी छात्रों का चयन

हुआ। शिक्षकों के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों ने विकासखण्ड स्तरीय कहानी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा निबंध लेखन, चित्रकला प्रतियोगिता में स्थान प्राप्त किया। स्वयंसेवी संस्थाओं के द्वारा आयोजित शालेय प्रतियोगिता में भी छात्रों ने सहभागिता की एवं स्थान प्राप्त किया।

आगामी योजना :

- पालकों से लगातार संवाद बनाना।
- शाला में स्मार्ट क्लास लगाना।
- विद्यालय अधोसंरचना का विकास
- छात्रों के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए उन्हें पुनः शैक्षणिक वातावरण में ले आएं।
- उनके सीखने के नुकसान को खत्म कर शैक्षिक गतिविधियों से जोड़ना।

गीता जुगनार
(प्रधानाध्यापक)
मोबाईल : 9826074697
संकलनकर्ता
माधुरी पाण्डे
(माध्यमिक शिक्षक)

❑ ❑ ❑

शिक्षक का जादुई सामंजस्य

शासकीय माध्यमिक विद्यालय, सुईगांव

यू-डाईस कोड : 23510200205

- विकासखंड : नलखेड़ा
- जिला : आगर मालवा
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 1 – विद्यालय नेतृत्व का अभ्यास एवं दृष्टिकोण

उप डोमेन क्र. 5 – दलीय भावना एवं विद्यालय में सामंजस्य

सामान्यतः हमारा ध्यान उन बातों या आवश्यकताओं की ओर जाता है जो हमारे पास नहीं हैं। इस कहानी में हम देखेंगे कि कैसे एकल शिक्षिका होते हुए भी इन्होंने अपने विद्यालय की सभी कमियों को पीछे छोड़ते हुए वो सभी गतिविधियाँ की, जो एक विद्यालय में अपेक्षित हैं। साथ ही सभी साझेदारों से सामंजस्य भी बनाया।

पृष्ठभूमि :

यह कहानी एक ऐसे विद्यालय की है जो जिला मुख्यालय से 27 कि.मी. दूर ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है। ग्राम सुईगाँव आगर मालवा के नलखेड़ा विकासखण्ड में स्थित है और यहाँ की आबादी लगभग 2300 है। यहाँ सभी जाति एवं वर्ग के लोग निवास करते हैं। यहाँ रहने वाले समुदाय का मुख्य व्यवसाय - कृषि एवं मजदूरी है। इस ग्राम के अधिकांश व्यक्तियों की अनुमानित वार्षिक आय लगभग 2 लाख रुपये है। यहाँ 5 अशासकीय, 1 शासकीय प्राथमिक, 1 शासकीय माध्यमिक एवं 1 शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय है।

शासकीय माध्यमिक विद्यालय सुईगांव में आसपास के कई गाँव (लालूखेड़ी, बोरखेड़ी, बोरखेड़ी बल्ड़ी, काली कराड़, सुईगाँव, रुपारेल एवं बल्ड़ी) के बच्चे पढ़ने के लिये आते हैं। इस शासकीय विद्यालय को निजी विद्यालयों से बेहतर बनाने के लिये कई सार्थक बदलाव किये, जिसका परिणाम है कि आज माध्यमिक विद्यालय सुईगांव में 105 बच्चे दर्ज हैं (6वी में 32, 7 वीं में 31 और 8 वीं में 42) और अभिभावकों ने अपने बच्चों को निजी विद्यालयों से निकाल कर इस विद्यालय में प्रवेश दिलाया है।

समस्या :

शासकीय माध्यमिक विद्यालय सुईगांव का जो स्वरूप आज नजर आ रहा है वह हमेशा से नहीं था। यहाँ की प्रधानाध्यापिका के सामने बहुत सी समस्याएं थी जिनके कारण विद्यालय में बच्चों का आना कम था और उनकी पढ़ाई में रुचि भी नहीं थी। इन्होंने सबसे पहले समस्याओं की जड़ को खोजने का प्रयास किया, तो उनके सामने निम्न चुनौतियां आई :

- सबसे पहली समस्या तो यही थी कि वे विद्यालय में एकल शिक्षिका हैं साथ ही प्रधानाध्यापिका का भी दायित्व निभा रही हैं।
- बच्चों की विद्यालय में नियमितता एवं रुचि का अभाव तीन चुनौतियों की तरफ इशारा कर रहा था। पहला, विद्यालय में कुछ बच्चे निर्धन परिवारों से थे जो कक्षागत प्रक्रियाओं में इस्तेमाल होने वाली सामग्री का क्रय करने में सक्षम नहीं थे। इस कारण बच्चों में भी विद्यालय आने और प्रक्रियाओं में भाग लेने में झिझक थी। दूसरा, विद्यालय में सम्मानजनक व्यवस्था से मध्यान्ह भोजन न करवाए जाने के कारण। तीसरा, विद्यालय में पीने के पानी की उचित व्यवस्था न होने के कारण।
- शासकीय शालाओं के प्रति अभिभावकों के विश्वास में कमी और जिसके कारण अशासकीय शालाओं की ओर उनका आकर्षण बढ़ रहा था।

समस्या समाधान की प्रक्रिया :

विद्यालय से सम्बंधित चुनौतियों को दूर करने के लिए प्रधानाध्यापिका ने कुछ रणनीतियां अपनाई। क्योंकि प्रधानाध्यापिका शाला में एक मात्र शिक्षिका थी जो शिक्षक एवं प्रधानाध्यापिका दोनों के कर्त्तव्यों का पालन कर रही थी, उन्हें पता था कि यह कार्य वह अकेले नहीं कर पाएंगी। उन्होंने 'प्रधानाध्यापक नेतृत्व विकास प्रशिक्षण' में सीखे दलीय भावना और सामंजस्य (टीम बिल्डिंग) को अपने विद्यालय में क्रियान्वित करने का प्रयास किया और शाला प्रबंधन समिति के सदस्यों, सरपंच तथा अन्य अभिभावकों को विद्यालय में एक बैठक का आयोजन कर सभी चुनौतियों में अपने साथ जोड़ा। सभी साझेदारों के सामने बात राखी गयी कि बच्चे विद्यालय में तभी सीख पाएंगें जब वे नियमित आएंगे, इसलिए सबसे पहले बच्चों की अनियमितता के कारणों को दूर करना होगा उसके बाद हम सभी पढ़ाई कि गुणवत्ता को बढ़ाने का प्रयास करेंगे। उन्होंने विद्यालय को लेकर अपने विजन को उन सभी के समक्ष रखा और निम्न रणनीतियों को विद्यालय में क्रियान्वित किया।

- सबसे पहले विद्यालय में अत्यंत निर्धन छात्रों की सहायता के लिए निर्धन छात्र सहायता कोष की स्थापना कर दान-पेटी विद्यालय में रखी, जिसमें विभिन्न अवसरों पर विद्यालय में आने वाले जन प्रतिनिधियों से, द्वितीय प्रति अंकसूची लेने आने वालों से, जन्म दिनांक का प्रमाणीकरण आदि लेने आने वालों से उनकी स्वेच्छानुसार दान डालने का आग्रह किया गया। दान में आने वाली राशि का उपयोग अत्यंत निर्धन छात्रों के लिये कापियां, पेन, पेंसिल, कम्पास, कपड़े आदि क्रय करने में किया गया। इस प्रक्रिया को अपनाने से बच्चे बेझिझक अपने सहपाठियों के साथ घुलने-मिलने लगे और उनकी नियमितता में भी सुधार हुआ।



- स्व सहायता समूह द्वारा बच्चों को मध्यान्ह भोजन अखबार की रद्दी कागज में करवाए जाने के कारण बच्चे मध्याह्न भोजन में रुचि नहीं लेते थे, भोजन करने से मना करते थे। इसके कारण बच्चे आधी छुट्टी में घर जाते तो फिर वापस विद्यालय लौटते नहीं थे। इस कमी को पूरा करने के लिये शाला की प्रधानाध्यापिका और शाला प्रबंधन समिति ने मिलकर भूतपूर्व छात्रों को विद्यालय में आमंत्रित किया और उन्हें इस विषय से सम्बंधित कुछ समाधान सुझाने के लिए आग्रह किया। प्रेरित होकर पूर्व छात्रों ने बच्चों के भोजन के लिये 100 थालियां विद्यालय को भेंट की। इसके साथ-साथ बच्चों के लिए एक नवीन भवन का निर्माण भी किया गया । अब बच्चे सम्मानपूर्वक, रुचि से उत्तम गुणवत्ता युक्त भोजन (मीनू अनुसार) ग्रहण करते हैं।

- तीसरी जो समस्या थी वह थी विद्यालय में पीने के पानी का अभाव। शुरुआत में इस समस्या से निजात पाने के लिए बच्चों को खुद घर से पानी लाने के लिए बोला जाता था। लेकिन गर्मियों में बच्चों को इस कारण बुहत कठिनाई होती थी। बच्चे पानी के अभाव में बार-बार घर जाते थे, इससे बच्चों कि उपस्थिति पर भी असर होने लगा था, क्योंकि शौचालयों का भी इस्तेमाल इस कारण सही ढंग से नहीं हो पा रहा था। खासतौर पर बच्चियां इस समस्या से ग्रसित थी। फिर स्व-सहायता समूह को यह जिम्मेदारी सौंपी गयी कि वे विद्यालय में एक स्टील की टंकी भर कर रख दिया करें जिससे कम-से-कम बच्चों को पीने का पानी उपलब्ध हो सके। कुछ दिन तो यह कार्य स्व-सहायता समूह ने किया लेकिन बाद में वे इस कार्य में आनाकानी करने लगे। इस समस्या को जड़ से दूर करने के लिए शाला प्रबंधन समिति और प्रधानाध्यापिका ने पेयजल की व्यवस्था हेतु ग्राम पंचायत के सरपंच महोदय से पंचायत की टंकी से पाइप लाइन डलवाने हेतु निवेदन किया। उनकी स्वीकृति उपरांत अभिभावकों ने श्रमदान करके अंडरग्राउण्ड पाइप लाइन शाला तक डाली। सबकी मेहनत का परिणाम था कि विद्यालय में आज जल व्यवस्था उपलब्ध है।



- इन तीन समस्याओं की पूर्ति के बाद प्रधानाध्यापिका के सामने जो चुनौती थी वह थी अभिभावकों का शासकीय शालाओं के प्रति अविश्वास। वैसे इन तीन समस्याओं से पार पाते हुए अभिभावकों का विद्यालय पर थोड़ा विश्वास बढ़ गया था लेकिन फिर भी बच्चों के सीखने -सिखाने से सम्बंधित बुहत से कार्य करना शेष थे। प्रधानाध्यापिका यह जानती थी इस कार्य को करने के लिए उन्हें विभिन्न गतिविधियों का संचालन करना होगा जो अशासकीय विद्यालय अपने कार्य को दिखाने के लिए

विज्ञान की गतिविधि करते बच्चे।

करते हैं। क्योंकि विद्यालय में शिक्षकों की कमी थी, इसलिए उन्होंने यह रणनीति अपनाई कि बच्चे कुछ कार्य ऐसा करें जो वे स्वयं कर सकते हों और उसे करने में कुछ सीख भी रहे हों।

सबसे पहले उन्होंने विद्यालय में एक पुस्तकालय की स्थापना की और उसमें बच्चों के स्तर अनुसार किताबों की व्यवस्था की। जब भी किसी कक्षा में शिक्षक नहीं होते थे तो वह कक्षा पुस्तकालय का इस्तेमाल करती और अलग-अलग पठन सामग्री से अपना ज्ञानवर्धन करती। इसके संचालन हेतु प्रधानाध्यापिका ने बाल कैबिनेट को जिम्मेदारी सौंप रखी थी। हर कक्षा में बाल कैबिनेट के प्रतिनिधि थे जो समय आने पर जिम्मेदारी से इसका संचालन करते थे।

बच्चों में माध्यमिक स्तर से ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण पनपे इसके लिए प्रधानाध्यापिका ने विद्यालय में एक विज्ञान कक्ष (प्रयोगशाला) का निर्माण किया। इस प्रयोगशाला में उन्होंने विज्ञान के पाठ्यक्रम से सम्बंधित सामग्री जैसे : बीकर, फ्लास्क, पेट्रीडिश, ब्युरेट, पिपेट, बर्नर, माइक्रोस्कोप इत्यादि को बच्चों के उपयोग हेतु रखा जिससे वे खुद प्रयोग करके अवधारणाओं को समझें। क्योंकि वे स्वयं विज्ञान की शिक्षिका हैं तो वे सुनिश्चित करती हैं कि बच्चे स्वयं करके सीखें। इन गतिविधियों के संचालन से बच्चों की समझ और आत्मविश्वास में भी वृद्धि हुई है।

इसके अतिरिक्त बच्चों के कौशलों को विकसित करने के लिये समय-समय पर शैक्षणिक भ्रमण, निबंध, वाद-विवाद, रांगोली, मेहंदी, चित्रकला, नृत्य, गायन, खेल आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं एवं समारोह उपरान्त विद्यार्थियों को सम्मानित किया जाता है। नियमित ध्यान, योगाभ्यास, स्वच्छता व्यवहार के तरीके, स्वच्छ भारत अभियान अन्तर्गत ही प्रदूषण से मुक्ति एवं व्यर्थ पदार्थों का पुनः उपयोग करके उपयोगी वस्तुएं जैसे- रस्सी, झूमर, खिलौने, मिट्टी से गमले, क्यारी आदि बनाना सिखाया जाता है। इसमें बच्चों ने जिलास्तर पर उत्कृष्ट स्थान प्राप्त किया है।



विज्ञान की गतिविधि करते बच्चे।



खोज यात्रा।

बदलाव :

- बच्चों ने निजी विद्यालयों से निकल कर इस विद्यालय में प्रवेश लेना प्रारंभ किया।

सत्र	विद्यार्थियों की संख्या जिन्होंने निजी विद्यालय से यहाँ प्रवेश लिया
2017-18	19
2018-19	19
2019-20	20
2020-21	12
2021-22	17

इनके अतिरिक्त शासकीय शालाओं से कक्षा 5 वी उत्तीर्ण होने वाले शत प्रतिशत छात्र इस शाला में ही प्रवेश लेते हैं।

- अत्यंत गरीब परिवारों के बच्चे शैक्षणिक सामग्री जैसे- पेन, कापियाँ, वस्त्र आदि के अभाव में मन में अन्य बच्चों की तुलना में हीन भावना उत्पन्न होने के कारण शाला में नहीं आ पाते थे, निर्धन छात्र सहायता कोष के माध्यम से उनकी शिक्षा निर्बाध रूप से जारी रही। कक्षा 6 से 8 के स्तर का कोई भी बच्चा ड्राप आउट नहीं हैं।
- बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास हेतु शासन द्वारा चलाई जा रही, 'मध्याह्न भोजन योजना' अन्तर्गत उत्तम गुणवत्ता युक्त भोजन सम्मान जनक व्यवस्थित रूप से थालियों में बैठकर प्राप्त होने से सभी बच्चे रुचिपूर्वक भोजन करते हैं।

- कहते हैं नींव मजबूत हो तो इमारत बुलंद होती हैं, इसको चरितार्थ करते इसी विद्यालय में कक्षा-8वीं तक अध्ययन करने वाले दिव्यांग छात्र महेन्द्र अग्रवाल ने वर्ष 2018-19 की माध्यमिक शिक्षा मंडल (मध्य प्रदेश) भोपाल की हाई स्कूल परीक्षा में उत्कृष्ट अंकों के साथ प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त किया।
- 'जल ही जीवन है' को समझते हुए हमने जल व्यवस्था सुलभ हो जाने से पीने के लिये, सफाई कार्य के लिये जल उपलब्ध करवाना, हेण्ड वॉश यूनिट की व्यवस्था साबुन, तौलिया आदि का उपयोग करना, स्वच्छता व्यवहार के तौर तरीके बच्चे विद्यालय में सीखते हैं, और वही घर पर भी करते हैं। इस प्रकार स्वच्छता का संदेश घर-घर तक पहुँच रहा है।

स्थायित्व :

विद्यालय में सभी गतिविधियां सतत चलती रहें इस हेतु पालक-शिक्षक संघ के माध्यम से ऐसा वातावरण बनाया गया है कि हर कार्य की सतत मॉनिटरिंग हो सके। बच्चे व अभिभावक मिलकर हर कार्य पर नज़र रखते हैं।

आगामी योजना :

- भविष्य में बाउण्ड्री वाल का निर्माण हो इसके लिये प्रयास किये जाएंगे।
- बच्चों के लिए खेल मैदान को बेहतर बनाया जाएगा।
- विज्ञान लेब को और बेहतर बनाने, बच्चों के मान से सामग्री क्रय करने और उसे इस्तेमाल करने का प्रयास किया जाएगा।

अनीता जैन
(प्रधानाध्यापक)
मोबाईल : 9425935202

❑ ❑ ❑

अभिव्यक्ति विकास की पहल

शासकीय माध्यमिक शाला, खड़ौला

यू-डाईस कोड : 23380210103

- विकासखंड : कटनी
- जिला : कटनी
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 3 - विद्यार्थी संकेन्द्रित करना

उप डोमेन क्र. 2 - बालकों के लिए खेलकूद व सहगामी क्रियाओं से विद्यालय आनंददायी बनाना

विद्यालय की सह शैक्षिक गतिविधियां न केवल छात्र/छात्राओं का कौशल विकास करती हैं, बल्कि अभिभावकों का ध्यान भी विद्यालय की ओर आकर्षित करते हैं, और परिणाम छात्र/छात्राओं की नियमितता, समय बद्धता को बढ़ावा देता है।

पृष्ठभूमि :

शासकीय माध्यमिक शाला खड़ौला कटनी जिले के जिला मुख्यालय से 12 कि.मी. दूर कटनी पन्ना रोड पर स्थित है। शाला राज्य सड़क मार्ग पर स्थित होने के कारण आवागमन के पर्याप्त साधन उपलब्ध हैं। वर्ष 2021-2022 में कक्षा 1 से 8 तक 89 बालक तथा 92 बालिकाएँ अर्थात 181 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं जबकि एक प्रधानाध्यापक तथा 6 शिक्षक कार्यरत हैं। शाला में एक प्रधानाध्यापक कक्ष, 6 शिक्षण कक्ष एवं पुस्तकालय व गतिविधि कक्ष, स्टाफ रूम, बालक-बालिकाओं हेतु पृथक-पृथक शौचालय, खेल मैदान, इनडोर, आउटडोर खेल सामग्री है तथा पेयजल उपलब्ध है।

समस्या :

- विद्यार्थियों की सह-शैक्षिक क्षेत्रों जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल गतिविधियों आदि में विशेष संलग्नता न होने से उनके अभिव्यक्ति कौशल में कमी।

समस्या समाधान की प्रक्रिया :

प्रधान अध्यापक ने प्र. अ. नेतृत्व क्षमता प्रशिक्षण में सहभागिता और उसके आधार पर शाला को नए नजरिए से देखना प्रारम्भ किया। शाला में संचालित समस्त गतिविधियों को गुणवत्तापूर्ण एवं परिणाम मूलक बनाने हेतु एसएमसी की बैठकों में शिक्षकों व बाल केबिनेट के सदस्यों को भी शामिल किया। उपरोक्त समस्याओं पर बैठक में विचार विमर्श उपरांत प्रधान अध्यापक ने बाल केबिनेट को जो गठन उपरांत भी निष्क्रिय अवस्था में था, उसे सक्रिय करने का कार्य प्रारम्भ किया। प्रत्येक मंत्रालय के प्रभारी शिक्षक, मंत्री, उपमंत्री, सदस्य नियुक्त कर नेतृत्व प्रदान करते हुए उन्हें उनके कर्तव्य बोध का ज्ञान कराते हुए अनेक कार्य शुरू किये गये। शिक्षकों ने ग्राम भ्रमण कर पालकों से गृहसंपर्क किया तथा उन्हें उनके बच्चों की कम व अनियमित उपस्थिति के अभिलेख दिखाते हुए जानकारी दी कि विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय की सह-शैक्षिक गतिविधियों में सहभागिता नहीं की जा रही है। इसी कारण बच्चों के अभिव्यक्ति कौशल में कमी आ रही है। साथ ही पालकों से आग्रह किया गया कि वे बच्चों को प्रतिदिन शाला समय पर भेजें। शाला में कराये जा रहे शैक्षिक कार्य, गतिविधियों प्रतियोगिताओं की जानकारी दी। कुछ बच्चों द्वारा किए गये अच्छे कार्यो का भी अवलोकन कराया गया।



शिक्षक गृह संपर्क करते हुए।



विभिन्न रोचक गतिविधियों में सहभागिता।

बच्चों को विद्यालय से जोड़ने के लिए शिक्षक द्वारा विभिन्न रोचक गतिविधियों का संचालन किया गया :

स्वच्छता एवं जागरूकता :

जल एवं स्वच्छता मंत्रालय के सक्रिय होने से प्रभारी शिक्षक के निर्देशन में मंत्री, उपमंत्री व सदस्यों द्वारा शाला परिसर, कक्षों की सफाई, पेयजल का उचित संग्रहण व वितरण की व्यवस्था की गई। फलस्वरूप विद्यालय पहले की तुलना में अधिक स्वच्छ दिखने लगा।



पेयजल व्यवस्था में बाल केबिनेट का नेतृत्व।

खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ :

खेलकूद एवं सांस्कृतिक मंत्रालय के सक्रिय होने से प्रभारी शिक्षक के निर्देशन में मंत्री, उपमंत्री, सदस्यों द्वारा क्रीड़ा व सांस्कृतिक गतिविधियों के आयोजन तथा उसमें सहभागिता हेतु बच्चों को प्रोत्साहित करने का कार्य किया गया। फलस्वरूप उनके अभिव्यक्ति कौशल में वृद्धि, आनंद की अनुभूति हुई एवं उपस्थिति में भी वृद्धि हुई।





सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं खेलकूद प्रतियोगिता में छात्र/छात्राएं सहभागिता करते हुए।

विद्यालय के आसपास के वातावरण से जुड़ाव :

'आसपास की खोज' के अंतर्गत विद्यार्थियों को समीपस्थ खेत में ले जाकर कृषि के आधुनिक तथा परम्परागत साधनों, रबी और खरीफ की फसलों आदि की जानकारी विद्यार्थियों द्वारा ली गई। इसी प्रकार कटनी में बैंक, पोस्ट ऑफिस की यात्रा कराकर विद्यार्थियों को प्रश्न कर अनेक जानकारी प्राप्त कर प्रोत्साहित किया गया। उन्हें उन विभागों द्वारा संचालित योजनाओं, एटीएम से राशि निकालना, बैंक के कार्य, पोस्ट ऑफिस के कार्य व उनके द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाओं आदि की जानकारी वहाँ के स्टॉफ द्वारा विस्तृत रूप से दी गई। छात्र/छात्राओं द्वारा प्रश्न भी किए गए।



बैंक की कार्य प्रणाली समझाते हुए बैंक कर्मचारी।

बदलाव :

- विद्यार्थियों की उपस्थिति कक्षा में 80 प्रतिशत तक रहने लगी तथा उनकी समयबद्धता में वृद्धि दर्ज की गई।
- बाल केबिनेट के प्रभावी क्रियान्वयन से बच्चों में नेतृत्व क्षमता का विकास हुआ।
- समाचार पत्र एवं बाल पत्रिकाओं के प्रभावी उपयोग से आसपास की घटनाओं को जानने समझने में रुचि जागृत हुई।
- 'आसपास के खोज' के माध्यम से आसपास की जानकारी प्राप्त कर दस्तावेजी करण करना सीखा।

आगामी योजना :

- शिक्षकों व बाल केबिनेट के सहयोग से मूलभूत दक्षताओं में और सुधार किए जाएंगे। शाला में 90 प्रतिशत बच्चों की दक्षता पूर्ण कराना हमारा लक्ष्य है।
- समुदाय का शाला से जुड़ाव हो तथा समुदाय सीखने के संसाधन के रूप मे प्रयुक्त हो सके, इस हेतु प्रभावी कदम उठाये जाएंगे।

राकेश सिन्नरकर
(प्रधानाध्यापक)
मोबाईल : 9926449546, 7000824627
Email : sinnarkarrakesh97@gmail.com

❑ ❑ ❑

टीम वर्क के साथ विद्यालय में बढ़ी उपस्थिति

शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या उ.मा. विद्यालय

यू-डाईस कोड : 23120411208

- विकासखंड : हटा
- जिला : दमोह
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 1 – विद्यालय नेतृत्व का अभ्यास एवं दृष्टिकोण

उप डोमेन क्र. 1 – विद्यालय नेतृत्व के अनुसार विद्यालय नेतृत्व कार्यक्रम का दृष्टिकोण

यह कहानी है शासकीय महारानी लक्ष्मी बाई कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की, जहां छात्राओं की शत-प्रतिशत उपस्थिति का ना होना एक बड़ी समस्या थी। जिसको शिक्षक समीक्षा बैठक में छात्राओं की कठनाइयों पर विचार विमर्श करके समाधान करने की योजना तैयार करते हुए हल किया गया। स्मार्ट क्लास में एलसीडी पर सभी विषयों का शिक्षण एवं अन्य सह-शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से छात्राओं की उपस्थिति बढ़ी है।

पृष्ठभूमि :

मध्यप्रदेश के बुन्देलखण्ड में दमोह से पन्ना मार्ग पर स्थित जिला मुख्यालय से 40 कि.मी. दूरी पर हटा तहसील सुनार नदी के किनारे बसाया गया। हटा नगर को उपकाशी भी कहा जाता है। ब्रिटिश शासन काल में स्थापित सन 1867 का मिडिल स्कूल अब शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, हटा शहर के मध्य बड़े परिसर में स्थित, अध्ययनरत 1800 छात्राओं का विद्यालय है।

सिंचाई के अभाव में कृषक, खेतीहर मजदूरों की आर्थिक स्थिति कमजोर, अनुसूचित जाति, जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग समुदाय की अधिकता है। हटा शिक्षा के क्षेत्र में धनी है। यहाँ पर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, जवाहर नवोदय विद्यालय, केन्द्रीय विद्यालय, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, 04 शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सहित निजी एवं शासकीय माध्यमिक व प्राथमिक विद्यालय है।

समस्या :

- विद्यालय में शत प्रतिशत उपस्थिति न होने के कारण छात्राओं का शैक्षणिक स्तर कमजोर होता जा रहा था।

समस्या समाधान की प्रक्रिया :

विद्यालय स्तर पर कार्ययोजना अनुसार किये गए कार्य निम्नलिखित हैं -

- विद्यालय के अनुभवी सहयोगी शिक्षक-शिक्षिकाओं की साप्ताहिक समीक्षा बैठक में प्रधानाध्यापक एवं सभी शिक्षकों ने छात्राओं की शैक्षणिक प्रगति एवं उनके सर्वांगीण विकास के मुद्दों पर नई रणनीति तैयार की। दक्षता उन्नयन हेतु छात्राओं के साथ उमंग तरूण एवं अंकुर के ग्रुप बनाकर, शिक्षकों द्वारा कार्य किया गया। अत्यंत कमजोर 8-8 छात्राओं के लिये प्रत्येक शिक्षक ने अलग से विद्यालय समय के पूर्व अध्यापन कार्य करना प्रारंभ किया। छात्राओं को दिये गये गृह कार्य की नियमित जाँच कर छात्राओं को प्रोत्साहित किया।
- अभ्यास कार्य की पूर्णता की जाँच करने हेतु प्रधानाध्यापक ने कक्षा नायकों के पास पंजी संधारित की जिसमें एक नजर में कक्षा की छात्राओं की मासिक मूल्यांकन की जानकारी प्राप्त कर पूर्ण कार्य न होने पर छात्राओं के सहयोग से उनके अभ्यास कार्य को पूर्ण कराया जाता है।
- विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों को आमंत्रित करने के साथ-साथ लगातार अनुपस्थित रहने वाली छात्राओं को विद्यालय भेजने हेतु उनके पालकों से सम्पर्क कर छात्राओं को विद्यालय में उपस्थित कराने हेतु पूरा सहयोग करते हैं।



- विद्यालय समय के पूर्व छात्राओं को पढ़ाते हुए।



- विद्यालय प्रबंधन समिति के साथ पालकों की बैठक।

- स्मार्ट क्लास में एलसीडी पर सभी विषयों का शिक्षण क्रमशः कक्षावार दिखाया जाता है जिससे छात्राएं कक्षा शिक्षण में रुचि ले रही हैं।
- प्रधानाध्यापक नेतृत्व क्षमता विकास प्रशिक्षण के बाद विद्यालय परिवार के सहयोगियों शिक्षकों के द्वारा इस कार्य में पूरे मनोयोग से प्रयास किये गए। सभी शिक्षकों ने अपनी -अपनी जिम्मेदारियों का पूर्ण रूप से निर्वाह किया।
- प्रत्येक बिन्दु पर प्रधानाध्यापक एवं सहयोगियों द्वारा परिश्रम से सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए। छात्राओं के पोर्टफोलियो फाइलों में उनके द्वारा की गई गतिविधियों को लिखित अभिलेख में संधारित किया गया है।
- विद्यालय की बाल केबिनेट अपनी बैठक कर छात्राओं की सभी गतिविधियों पर चर्चा करती है। बालसभा का आयोजन छात्राओं द्वारा संचालित होता है। जिसकी अध्यक्ष का प्रस्ताव एवं अनुमोदन वे स्वयं करती हैं। बालसभा के दिन ही उस सप्ताह के महापुरूषों, कवि, लेखकों के चित्रों पर पुष्प एवं मालाएं अर्पित कर जयंती एवं पुण्य तिथि मनाते हैं।



- **विद्यालय में बाल सभा का आयोजन।**

- प्रधानाध्यापक, शिक्षकों के अभिलेखों की जांच के साथ साप्ताहिक, मासिक, कक्ष निरीक्षण कर शिक्षक समीक्षा बैठक में शिक्षक एवं छात्राओं की कठिनाइयों पर विचार विमर्श करके समाधान करने की योजना तैयार करते हैं। जिसके सकारात्मक परिणाम होते हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी मीन्स कम मैरिट इन्सपायर अवार्ड मोगली, क्विज विज्ञान मेला आदि की तैयारी शिक्षकों द्वारा कराई जाती है।
- विद्यालय में छात्राओं से विज्ञान विषय के प्रयोग कराने में शिक्षक सहयोग करते हैं।
- शिक्षण को रोचक बनाने में साथी शिक्षकों द्वारा एक्टिविटी लर्निंग मेथड का उपयोग करते हुए शिक्षक-शिक्षिकाएं कक्षावार छात्राओं को पास के कृषि फार्म ले जाकर खरीफ, रबी की फसलों, पौधे के अंगों, मिट्टी के प्रकारों, मिट्टी के कटाव फसलों में लगने वाले रोगों एवं उनके बचाव की जानकारी दी जाती है। भौगोलिक अवलोकन हेतु नदी भ्रमण में जल का प्रभाव, चट्टानों के प्रकार, जल -जीवों, नदी का कटाव आदि पर छात्रों को जानकारी नोट कराते हैं। ऐतिहासिक जानकारी प्रदान करने हेतु सभी छात्राओं को प्रधानाध्यापक एवं सहयोगियों द्वारा हटा का रंगमहल (किला) भ्रमण में प्राचीन इमारतों की मजबूती, वास्तुकला, सुरक्षा, राजशाही, युद्ध आदि की जानकारी नोट कराते हैं। विज्ञान मित्र क्लब में शिक्षकों की सहभागिता से छात्राओं को नगरपालिका हटा के पम्प हाऊस, वाटर फिल्टर की जानकारी नोट कराते

हैं। वर्कशाप में लोहे से बनी वस्तुओं की जानकारी देते हैं।

- प्रशासनिक अधिकारियों, स्वास्थ्य विभाग, महिला बाल विकास (परियोजना अधिकारी), मुख्य नगर पालिका अधिकारी, थाना प्रभारी पुलिस, अनुविभागीय अधिकारी, शहर के बुद्धिजीवी एवं शिक्षा विभाग के अधिकारियों को भी बुलाते हैं। अनुविभागीय अधिकारी पुलिस एवं थाना प्रभारी द्वारा छात्राओं को निडर रहने, बाल अपराधों से बचने हेतु सुझावों पर जानकारी दी जाती है।
- शिक्षक-शिक्षिकाओं के साथ छात्राओं को 21 कि.मी. दूर जरारू प्राकृतिक स्थल जहां जलप्रपात, जंगली जानवरों, वनों से होने वाले लाभों को समझाते हैं। साथ ही साथ छात्राओं को पुलिस थाना हटा ले गए। जहां बन्दूक चलाना, बंदीग्रह दिखाया, बाढ़ आपदा के समय बचाव की जानकारी छात्राओं को दी गई। कार्यालय अनुविभागीय राजस्व हटा, कार्यालय जनपद पंचायत हटा छात्राओं को कार्यालय में होने वाले कार्यों एवं कार्यालय दस्तावेजों की जानकारी दी गईं। जवाहर नवोदय विद्यालय ले जाकर छात्राओं को केन्द्रीय विद्यालय शिक्षा प्रणाली से अवगत कराया।
- स्वास्थ्य विभाग से चिकित्सक, महिला चिकित्सक छात्राओं के किशोरावस्था में होने वाले परिवर्तनों एवं स्वस्थ रहने की आवश्यक सावधानियों पर चर्चा करते हुए भोजन के पहले एवं शौच के बाद साबुन से हाथ कैसे धोयें इस पर जोर देते हैं।
- बाल दिवस पर विद्यालय में मेले में खाने की चीजों, सब्जी फल, बेकरी, खिलौने आदि की दुकानें लगती हैं। जिसमें पालक, अधिकारी एवं शिक्षक-शिक्षिकाएं सम्मिलित होते हैं।
- प्रतिभापर्व वार्षिक उत्सव के रूप में मनाया जाता है। जिसमें 200, 500 मीटर दौड़, बोरा दौड़, कुर्सी दौड़, चित्रकला, रंगोली, मेहंदी प्रतियोगिताओं के साथ मंच पर अभिनय, गायन, नृत्य आदि देखते ही बनता है।
- इसी अवसर पर अच्छे अंक प्राप्त करने वाली, राष्ट्रीय त्योहारों पर पुरस्कार प्राप्त करने वाली छात्राओं एवं उनके पालकों को मंच पर सम्मानित किया जाता है।

बदलाव :

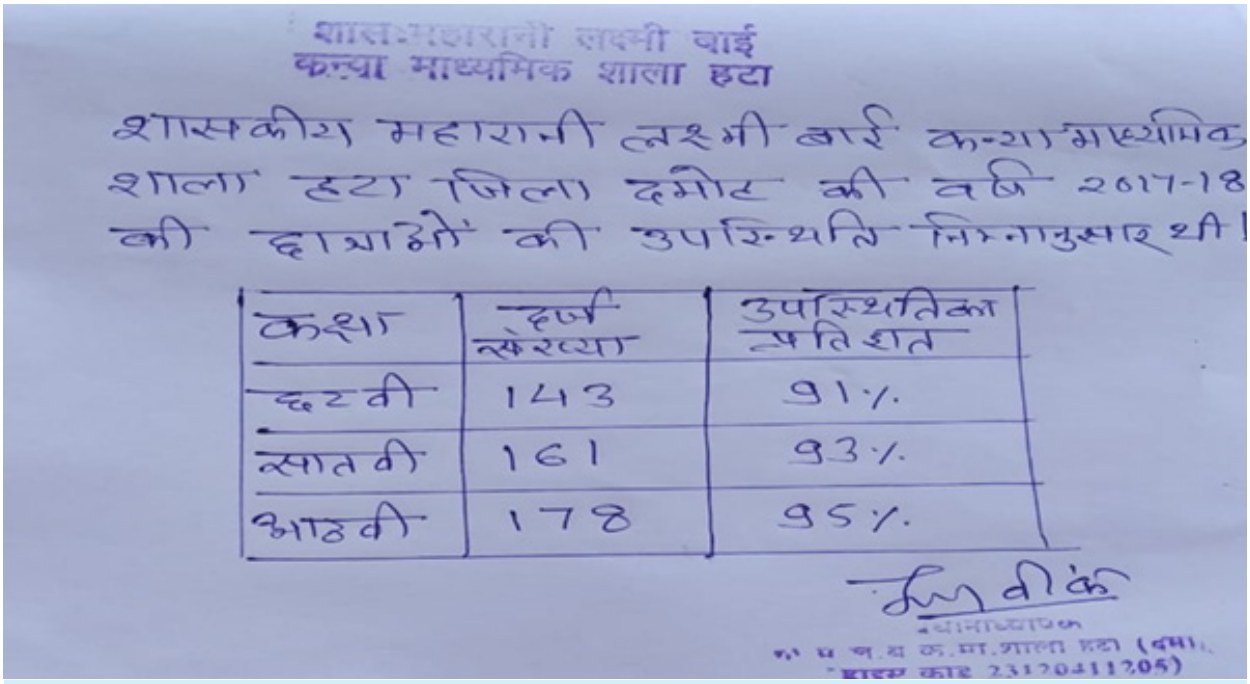
- उपस्थिति बढ़ी।
- गृहकार्य पूर्ण रहता है।
- छात्राओं की शैक्षणिक प्रगति में सुधार।
- विद्यालय का स्वच्छ, स्वस्थ एवं आनंदमयी वातावरण बना।
- आपस में सहयोगात्मक वातावरण का निर्माण कर मीन्स कम मैरिट छात्रवृत्ति में प्रत्येक वर्ष 20 से अधिक छात्राओं का चयन।

सम्मान एवं पुरस्कार :

- विद्यालय के लिये जिला कलेक्टर द्वारा जिला जल एवं स्वच्छता मिशन पर प्रशंसा पत्र गणतंत्र दिवस के मुख्य समारोह में विद्यालय के लिये सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं झांकी प्रदर्शन पर अनेक प्रशस्ति पत्र प्राप्त हुए हैं।
- प्रधानाध्यापक के लिए सर्व शिक्षा अभियान पर प्रशस्ति पत्र एन.सी.आर.टी.द्वारा प्राप्त हुए हैं।
- राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा निरीक्षण में विद्यालय को प्रशंसा पत्र प्राप्त हुए हैं।

स्थायित्व :

- छात्राओं की उपस्थिति बढ़ी हैं। यह एक स्थिर बदलाव हैं। साथ ही साथ शैक्षणिक प्रगति में सुधार लगातर हो रहा हैं। वे सभी गतिविधियों में बढ़ - चढ़ कर हिस्सा लेती हैं।



शास.महारानी लक्ष्मी बाई
कन्या माध्यमिक शाला हटा

शासकीय महारानी लक्ष्मी बाई कन्या माध्यमिक शाला हटा जिला दमोह की वर्ष 2017-18 की छात्राओं की उपस्थिति निम्नानुसार थी।

कक्षा	दर्ज संख्या	उपस्थिति का प्रतिशत
छटवी	143	91%
सातवी	161	93%
आठवी	178	95%

प्रधानाध्यापक
शा. म. ब. क. मा. शाला हटा (दमो.)

- उपस्थिति के आंकड़े।

आगामी योजना :

- छात्राओं की उपस्थिति स्थिर रखने के लिए कक्षा शिक्षण में नवाचार करेंगे।
- शहर की प्रशिक्षित महिलाओं के द्वारा छात्राओं को कंप्यूटर दक्षता, ब्यूटीपार्लर, मेहंदी आदि का प्रशिक्षण दिलाकर उनमें कौशल विकसित करना।
- खेल प्रतियोगिताओं में छात्राओं को राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर भेजने हेतु सतत् प्रयास करना।

प्रकाश चंद खटीक
(प्रधानाध्यापक)
मोबाईल : 9993151690

❑ ❑ ❑

बाल कैबिनेट से विद्यालय में अभूतपूर्व सुधार

एकीकृत शासकीय माध्यमिक शाला, जमुनिया गौड़

यू-डाईस कोड : 23110215202

- विकासखंड : जैसीनगर
- जिला : सागर
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 1 – विद्यालय नेतृत्व का अभ्यास एवं दृष्टिकोण

उप डोमेन क्र. 5 – दलीय भावना एवं विद्यालय में सामंजस्य

सागर जिले के एक छोटे से गांव में किस प्रकार एक शिक्षक ने विद्यालय की उपस्थिति एवं विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर में बदलाव किया और विद्यालय में विद्यार्थियों की दर्ज संख्या जहां सत्र 2016-17 में 98 थी वहां सत्र 2021-22 में 210 है और विद्यार्थियों की औसत उपस्थिति 93 प्रतिशत है। यह बदलाव वह कैसे ला पाए उनकी कहानी को आगे पढ़कर हम जान सकेंगे।

पृष्ठभूमि :

मध्यप्रदेश के बहुत ही सुन्दर शहर सागर के विकासखण्ड जैसीनगर के संकुल केंद्र बरौदा हाई विद्यालय के अंतर्गत एक छोटे से गाँव जमुनिया गौड़ में माध्यमिक विद्यालय है। एकीकृत शासकीय माध्यमिक विद्यालय, जमुनिया गौड़ सागर जिले के दक्षिण में जैसीनगर विकासखंड में सागर से 20 किलोमीटर दूर स्थित है। वर्तमान सत्र 2021-22 में विद्यालय में कुल 10 कक्ष हैं। एक कक्ष का उपयोग कार्यालय के रूप में किया जाता है। अन्य कक्ष का उपयोग शैक्षणिक कार्य के लिए किया जाता है। विद्यालय में कुल पदस्थ शिक्षक संख्या 6 है। प्राथमिक विभाग में 5 शिक्षक एवं माध्यमिक विभाग में एक शिक्षक कार्यरत है। विद्यालय में कुल दर्ज विद्यार्थी सत्र 2021-22 में 210 हैं।

यह क्षेत्र बुन्देली भाषा का क्षेत्र है। ग्राम अनुसूचित जाति बाहुल्य क्षेत्र है। समुदाय की आर्थिक स्थिति निम्न है। ग्राम के समीप एक प्राचीन मंदिर है एवं यहां से एक किलोमीटर दूर एक बांध स्थित है, जो पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। गाँव की आबादी लगभग दो हजार है। गाँव में कोई अन्य शासकीय या अशासकीय विद्यालय नहीं है।

विद्यालय के आसपास ग्राम वासियों के घर हैं, सामाजिक स्थिति अच्छी है। यहाँ की संस्कृति भी एकता को प्रदर्शित करती है। 25 प्रतिशत ग्रामवासी किसानी पर निर्भर रहकर अपना जीवन यापन करते हैं। 75 प्रतिशत ग्रामवासी मजदूरी पर निर्भर रहकर अपना जीवन यापन करते हैं ।

समस्या :

- दर्ज विद्यार्थियों की अनियमित उपस्थिति, शिक्षकों की कमी और उपस्थित विद्यार्थियों का निम्न शैक्षणिक स्तर।

समस्या समाधान की प्रक्रिया :

वर्ष 2012 मैंने (श्री दिलीप कुमार साहू) प्रभारी के रूप में कार्यभार ग्रहण करने के बाद शिक्षकों एवं शाला प्रबंधन के साथ विद्यार्थी की नियमित उपस्थिति के लिये कार्य योजना तैयार की। मगर जितनी भी योजनाएं बनाई गई, वह विद्यार्थी को विद्यालय तक ले जाने में सक्षम नहीं रहीं।

इसी बीच 2016 में 'प्रधानाध्यापक नेतृत्व क्षमता विकास प्रशिक्षण' का आयोजन डाईट सागर में हुआ। इस प्रशिक्षण के साझेदारी एवं टीम वर्क के शीर्षक अन्तर्गत दिए गए सुझावों से अपने प्रभारी के दायित्वों के निर्वहन करने की समझ विकसित हुई। प्रशिक्षण पाकर एक नई उर्जा के साथ पुनः कार्य करना शुरू किया।

वर्ष 2016-2017 विद्यालय में केवल दो ही शिक्षक थे और दर्ज संख्या 110 सभी विषय पढ़ाना और सभी प्रकार की सह -शैक्षिक गतिविधियाँ कराना बहुत कठिन लग रहा था जिससे उपस्थिति में भी कमी दिखाई दे रही थी।

सर्वप्रथम पालक शिक्षक संघ एवं अभिभावकों की बैठक का आयोजन किया। सभी अभिभावकों के साथ विद्यालय संचालन में आ रही चुनौतियों विशेषकर विद्यार्थियों की कम उपस्थिति एवं उनके शैक्षणिक स्तर पर चर्चा की। चर्चा के दौरान तथ्यों के द्वारा उन्हें ये एहसास कराया गया कि, यदि विद्यार्थी विद्यालय में उपस्थित नही होंगे तो उनका शैक्षिक सामाजिक, मानसिक, भावनात्मक, शारीरिक विकास वैसा नहीं हो पाया जैसा होना चाहिए। ये भी निवेदन किया गया कि बिना अभिभावकों एवं समुदाय की सहायता के विद्यार्थियों का भविष्य सँभालने में विद्यालय अपनी भूमिका ठीक से नहीं निभा पाएगा। अधिकांश अभिभावकों ने अपनी जिम्मेदारी समझते हुए सहयोग देना आरम्भ किया।

फिर हम सभी स्टाफ सदस्यों ने सोचा कि अगर विद्यार्थी को ही सह -शैक्षिक गतिविधियों में शामिल कर लिया जाए तो हो सकता है उपस्थिति बढ़ जाए। जितने प्रकार के कार्य विद्यालय में होते थे उतने ही मंत्रालयों का गठन विद्यालय में किया गया। इस प्रकार 22 प्रकार के मंत्री बनाये गए और 22 उनके उपमंत्री बनाये गए। इस प्रकार 44 विद्यार्थियों की उपस्थिति तो विद्यालय में सुनिश्चित हो गई। इन्हीं बाल केबिनेट के सदस्यों द्वारा अन्य विद्यार्थियों की उपस्थिति बढ़ाने में सफलता प्राप्त हुई।

बाल केबिनेट सूची -

क्रमांक	मंत्री पद	मंत्रियों के नाम	कक्षा	उपमंत्री	कक्षा
01	प्रधान मंत्री	रौशनी पाठक	8	प्रियंका तिवारी	8
02	शिक्षा मंत्री	प्रियंका तिवारी	8	पूनम यादव	7
03	डिजिटल मंत्री	कुंदन अहिरवार	8	अंकुश तिवारी	8
04	पुस्तकालय मंत्री	पूनम यादव	7	बबीता पटेल	7
05	ड्रेस मंत्री	शिवम् पाठक	8	निशा यादव	6
06	शुद्ध लेख मंत्री	निकिता पटेल	8	रामकृष्ण सेन	6
07	ग्राम संपर्क मंत्री	विशेष अहिरवार	6	कृष्ण कुमार अहिरवार	8
08	पेंटिंग मंत्री	महक अहिरवार	8	प्रियंका तिवारी	8
09	पर्यावरण मंत्री	सतीश पटेल	8	कृष्ण कुमार अहिरवार	8
10	खेल मंत्री	अंकुश तिवारी	8	राम सेन	7
11	विज्ञान मंत्री	राजेश पटेल	6	धर्मेन्द्र पटेल	6
12	आई कार्ड मंत्री	मोहन बाई	6	सृष्टि सेन	8
13	प्रार्थना मंत्री	साधना पटेल	8	सविता रजक	8
14	भंडार मंत्री	सोमेश सेन	8	राम सेन	7
15	स्वच्छता मंत्री	सविता रजक	8	महक अहिरवार	8
16	अनुशासन मंत्री	रक्षा पाठक	7	सीता यादव	7
17	जल प्रदाय मंत्री	एस कुमार पटेल	7	विक्रम अहिरवार	8
18	शिकायत मंत्री	महिमा तिवारी	6	गब्बर यादव	7
19	MDM मंत्री	सपना अहिरवार	8	निकिता पटेल	8
20	स्वास्थ्य मंत्री	विद्या सेन	8	पूनम यादव	7
21	उपस्थिति मंत्री	सीता यादव	7	लक्ष्मी अहिरवार	7
22	खोया-पाया	अनिकेत तिवारी	7	प्रदीप बंसल	6
23	स्पोकन मंत्री	सतीश पटेल	8	प्रियंका तिवारी	8
24	सांस्कृतिक मंत्री	प्रियंका तिवारी	8	विद्या सेन	8
25	सामान्य ज्ञान मंत्री	अंकित यादव	8	अंकित पटेल	7

100 प्रतिशत उपस्थिति वाले विद्यार्थियों को 'स्टार ऑफ द मंथ' का निर्णय हमारे द्वारा किया गया। इस विधा में प्रत्येक कक्षा में जिस विद्यार्थी की उपस्थिति 100 प्रतिशत होती, उसका नाम नोटिस बोर्ड पर 'स्टार ऑफ द मंथ' के रूप में प्रदर्शित किया जाता है, जिससे उन विद्यार्थियों में भी नियमित उपस्थित होने की भावना पैदा होती है जो महीने में एक या दो दिन अनुपस्थित होते हैं। वो विद्यार्थी भी ये प्रयास करते हैं कि वह बिना किसी कारण के विद्यालय में अनुपस्थित न रह जाय। साथ ही जो विद्यार्थी विद्यालय में ज्यादा अनुपस्थित रहते थे उनकी उपस्थिति भी बढ़ाने में मदद मिली। तत्कालीन ग्राम सरपंच जी से चर्चा एवं निवेदन किया और परिणाम यह हुआ कि उन्होंने अपनी ग्राम पंचायत की स्मार्ट टी.व्ही. विद्यालय को प्रदान कर दी। इस तरह एक स्मार्ट रूम तैयार किया गया जिसमें लेपटॉप को स्मार्ट टी.व्ही.से कनेक्ट करके बच्चों के लिए एजुकेशनल प्रोग्राम शुरू किये। कुछ ही दिनों में यह देखा गया कि जो बच्चे कभी विद्यालय नहीं आते थे वो भी विद्यालय आने लगे। विद्यार्थी 20 -20 कविताएं हाव -भाव के साथ प्रस्तुत करने लगे। जिससे ग्रामवासियों में एक सकारात्मक प्रभाव पड़ा। गाँव में उन विद्यार्थियों की चर्चा होने लगी एवं अभिभावक भी विद्यार्थी को विद्यालय भेजने में रुचि दिखाने लगे।



'स्टार ऑफ द मंथ' विद्यार्थी प्रसन्न मुद्रा में।



स्मार्ट तेलिविसिओं के माध्यम से अध्यन करते विद्यार्थी।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अधिकांश विद्यार्थियों को अवसर प्रदान करना -

विद्यालय सभी विद्यार्थियों को सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु प्रेरित करती है एवं जो भी विद्यार्थी सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेता है उसके लिए समुदाय की सहायता से पुरस्कार भी दिया जाता है। जिससे विद्यालय के अधिकांश विद्यार्थी इन कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। साथ ही इन विद्यार्थियों की झिझक खत्म होती है और इन विद्यार्थियों की उपस्थिति औसत उपस्थिति से अधिक होती है।



सांस्कृतिक कार्यक्रम अंतर्गत प्रस्तुति देते विद्यार्थी।

विद्यार्थियों का विद्यालय पहुंचने पर अपने कक्षा रजिस्टर में हस्ताक्षर करना -

सभी विद्यार्थियों को शिक्षकों की भांति उपस्थिति रजिस्टर पर हस्ताक्षर करने होते हैं, प्रार्थना सभा में पहुंचने से पहले यह कार्य बाल केविनेट उपस्थिति मंत्री द्वारा कर लिया जाता है जिससे विद्यार्थियों में विद्यालय समय पर आने में विशेष उपलब्धि हासिल हुई है।

हर सप्ताह बाल सभा के दिन प्रेरणा प्रद फिल्मों का प्रदर्शन करना -

विद्यालय में भयमुक्त आनंददायी वातावरण बनाने हेतु प्रत्येक सप्ताह बाल सभा के दिन एक प्रेरणा प्रद फिल्म का प्रदर्शन

विद्यार्थी के समक्ष किया जाता है जिससे विद्यार्थियों में रोचकता बनी रहती है। विद्यार्थियों में मनोरंजन होने के साथ-साथ शाला में उपस्थिति के प्रतिशत में भी वृद्धि परिलक्षित हुई है।



बालसभा अन्तर्गत प्रदर्शित फिल्म देखते विद्यार्थी।

पेरेंट्स का व्हाट्सएप ग्रुप तैयार कर अनुपस्थित विद्यार्थी की जानकारी साझा करना -

विद्यालय में सभी विद्यार्थियों का व्हाट्सएप ग्रुप तैयार किया गया है जिस पर प्रति दिवस अनुपस्थित विद्यार्थियों की जानकारी साझा की जाती है, जिससे विद्यार्थियों के अभिभावक को भी इसकी जानकारी पहुँच जाती है कि अमुक बच्चा विद्यालय में अनुपस्थित है।

YouTube लिंक एकीकृत शासकीय माध्यमिक शालाजमुनिया गौड़
https://www.youtube.com/channel/UCwvPB|&mfgP_clmFPIwgRgw

Facebook लिंक एकीकृत शासकीय माध्यमिक शालाजमुनिया गौड़
https://www.facebook.com/jamuniya.g.jaisinagar

देरी से आने वाले विद्यार्थियों को विद्यालय में अनुमति देना -

ऐसे विद्यार्थी जो विद्यालय देर से आते हैं उनको भी विद्यालय अनुमति प्रदान करता है। साथ ही विद्यालय के शिक्षक इस कारण को जानने का निरंतर प्रयास करते हैं कि वह विद्यार्थी विद्यालय देरी से क्यों आ रहा है और इस कार्य में सफलता भी प्राप्त हुई है जो विद्यार्थी देरी से विद्यालय आ रहे थे उनमे से अधिकांश विद्यार्थी अब समय पर विद्यालय आते हैं।

बाल केविनेट के ग्राम संपर्क मंत्री द्वारा अनुपस्थित विद्यार्थी के घर संपर्क कर अनुपस्थिती का कारण जानना -

जो विद्यार्थी तीन दिनों तक लगातार अनुपस्थित होता है उसकी सूची बाल केविनेट के मंत्री के पास होती है। वह एस.एम. सी. के सहयोग से शिक्षकों के साथ इन विद्यार्थियों के घर संपर्क करने जाते हैं और यह जानने का प्रयास किया जाता है की विद्यार्थी किस वजह से विद्यालय नहीं आ रहा है।



ग्राम संपर्क में अनुपस्थित विद्यार्थियों से गृह संपर्क करते बाल केबिनेट एसएमसी सदस्य एवं शिक्षक।

बदलाव :

विद्यार्थी की शत-प्रतिशत उपस्थिति -

सत्र 2016 - 2017

	दर्ज	औसत उपस्थिति
बालक	51	24
बालिका	47	21
योग	**98**	**45**

सत्र 2021 - 2022

	दर्ज	औसत उपस्थिति
बालक	120	115
बालिका	90	86
योग	**210**	**197**

आज विद्यालय के सभी विद्यार्थी नियमित उपस्थित होते हैं। देरी से आने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत लगभग शून्य है। समावेशी वातावरण होने से विद्यार्थी जो कभी लेट हो जाने के डर से विद्यालय ही नहीं आते थे आज ऐसा नहीं है।

भयमुक्त एवं आनंददायी वातावरण का निर्माण - आज विद्यालय में पूर्ण रूप से भयमुक्त और आनंददायी वातावरण निर्मित हो चुका है। विद्यालय में विद्यार्थियों को अपनी बात रखने की पूर्ण स्वतंत्रता है। विद्यार्थी विद्यालय को अपना मानते हैं। विद्यार्थियों के शैक्षणिक स्तर में सुधार के चलते विद्यालय को राज्य स्तरीय चैंपियन शाला पुरस्कार सत्र 2019-20 में तत्कालीन संचालक महोदय राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल द्वारा प्राप्त हुआ।

समुदाय एवं जन प्रतिनिधियों का सहयोग -

अब समुदाय का हमें पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है और जन प्रतिनिधियों की रुचि भी हमारे विद्यालय की तरफ बढ़ी है, उनसे हमें सहयोग प्राप्त होने लगा है।

विद्यालय के विकास में एस.एम.सी . ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। जहाँ कुछ वर्ष पूर्व तक एस.एम.सी. केवल नाम मात्र की हुआ करती थी वहीं आज स्टाफ सदस्यों और बाल केविनेट के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर कार्य कर रही है।

विद्यालय को प्राप्त सम्मान एवं पुरस्कार -

शासकीय माध्यमिक शाला जमुनिया गौड़ को कई पुरस्कार भी प्राप्त हो चुके हैं, जो निम्नानुसार हैं -

1 चैंपियन शाला का राज्य स्तरीय पुरस्कार, संकुल स्तरीय श्रेष्ठ विद्यालय पुरस्कार।



पुरस्कार आयुक्त महोदया श्रीमती आइरीन सिंधिया द्वारा प्रदत्त।



- शाला को प्राप्त पुरस्कार सम्मान एवं मीडिया कवरेज।

स्थायित्व :

विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति अब स्थिर है ,अभिभावक अब जागरूक हो गए हैं और बिना किसी बड़े कारण के वह अपने बच्चों को अनुपस्थित नहीं होने देते। विद्यालय की अधिकांश गतिविधियों में विद्यार्थी की सहभागिता होती है अतः उपस्थिति में स्थिरता बनी रहना संभव है। विद्यार्थी में किसी प्रकार का डर या भय मौजूद नहीं है अतः यदि बच्चे को कभी विद्यालय आने में देरी हो जाती है तो भी वह विद्यालय आ जाता है।

- एक बार यदि कोई कार्य विद्यार्थियों को सौंप दिया जाता है तो उस कार्य के पूर्ण होने की सम्भावना का प्रतिशत अधिक होता है, यही कार्य हमारी बाल केबिनेट विगत तीन वर्षों से कर रही है।

आगामी योजना :

- आज विद्यालय ने 80 प्रतिशत सफलता हासिल कर ली है। फिर भी 20 प्रतिशत विद्यार्थी पर अभी भी काम करना बाकी है।
- अभिभावक संपर्क को और प्रभावी बनाने की योजना है।
- मासिक मूल्यांकन के साथ-साथ और दूसरी सह-शैक्षिक गतिविधियों को प्रभावी बनाने की योजना।

दिलीप कुमार साहू
(प्र. प्रधानाध्यापक)
मोबाईल : 7354490149

❑ ❑ ❑

विद्यालय में सामुदायिक सहभगिता से बदलाव

सामाजिक समरसता

शासकीय माध्यमिक शाला, अट्ठायसा

यू-डाईस कोड : 23400613702

- विकासखंड : चावरपाठा
- जिला : नरसिंहपुर
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 1 – विद्यालय नेतृत्व का अभ्यास एवं दृष्टिकोण

उप डोमेन क्र. 5 – दलीय भावना एवं विद्यालय में सामंजस्य

इस विद्यालय एवं गाँव में जातिगत भेदभाव के कारण, स्कूल में बच्चों द्वारा एक साथ मिड-डे मील (मध्याह्न भोजन) न करने की समस्या से निपटने के लिए एक प्रधानाध्यापक द्वारा किए गए प्रयासों को हम अगले पृष्ठों पर पढ़ेंगे....

पृष्ठभूमि :

नरसिंहपुर जिला मध्यप्रदेश राज्य के लगभग मध्य भाग में स्थित है। नरसिंहपुर जिले की स्थिति विशिष्ट मानी जाती है क्योंकि यह देश व राज्य दोनों के मध्य भाग में स्थित है ।

माध्यमिक शाला अटठायसा नरसिंहपुर जिले की तहसील गाडरवारा से विधानसभा क्षेत्र तेंदूखेड़ा के मुख्य मार्ग में गाडरवारा से 6 किलोमीटर दूर माँ नर्मदा के आँचल में बसे एक छोटे से ग्राम में स्थित है। ग्राम की आबादी लगभग 800 है। यह ग्राम अति पिछड़ा एवं आर्थिक रूप से कमजोर है । गाँव में मुख्यतः अनुसूचित जाति और पिछड़े वर्ग के लोग रहते हैं। जैसा कि नरसिंहपुर जिला कृषि प्रधान जिला है वैसे ही ग्राम अट्ठायसा के अधिकांश लोग भी कृषि अथवा कृषि मजदूरी पर निर्भर हैं।

शाला में प्रधानाध्यापक के अतिरिक्त 5 शिक्षक अपनी सेवाएँ बच्चों को दे रहे हैं । शाला में कक्षा 1 से 8 तक कुल 131 बच्चे पढ़ते हैं। जिसमें से 73 लड़के और 58 लड़कियाँ शाला में अध्ययनरत हैं। जिसका जातिवार विवरण अनुसूचित जाति के 86, अनुसूचित जनजाति के 3, अन्य पिछड़ा वर्ग के 28 एवं सामान्य वर्ग के 14 छात्र/छात्राए हैं। शाला में 4 कमरे और 2 बरामदे हैं, जहाँ एक साथ 8 कक्षाएँ संचालित होती हैं। इस शाला में पढ़ने वाले 60 प्रतिशत बच्चों की संख्या इसी ग्राम में रहने वाले बच्चों की है, जबकि 40 प्रतिशत बच्चे ग्राम अट्ठायसा से 2 किलोमीटर दूर भैंसा गाँव से आते हैं।

समस्या :

- विद्यालय एवं गाँव में परस्पर समरसता का अभाव है जिसके कारण बच्चे एक साथ मध्यान्ह भोजन नहीं करते।

समस्या समाधान की प्रक्रिया :

शाला में आने वाले बच्चों में अनुसूचित जाति के बच्चों की संख्या अधिक है, जबकि अन्य वर्गों से आने वाले बच्चों की संख्या कम है । इसलिए जरूरी था कि शाला में बच्चों के व्यवहार को समझा जाए। एक प्रधानाध्यापक के रूप में जब माध्यमिक शाला अट्ठायसा में मेरा तबादला हुआ तो अलग-अलग स्थितियों में बच्चों के अलग-अलग व्यवहार को देखकर बहुत अजीब लगता था, क्योंकि जो बच्चे कक्षा के अंदर एक दूसरे के सहपाठी थे, खेल के मैदान में एक दूसरे के दोस्त थे। वही बच्चे अचानक मध्यान्ह भोजन के समय एक-दूसरे से अलग हो जाते थे। समझ नहीं आता था कि उन बच्चों को ऐसा क्या हो जाता है जो मध्यान्ह भोजन के समय एक दूसरे से अलग हो जाते हैं। कक्षा में जिन बच्चों की औसत उपस्थिति 80 प्रतिशत रहती है, उन्हीं बच्चों की औसत उपस्थिति मध्यान्ह भोजन के समय 30 प्रतिशत हो जाती थी।

समस्या समाधन की रणनीति - इस बात को समझने के लिए अपने कार्य अनुभव के वर्षों को याद किया और अलग-अलग परिस्थितियों का विश्लेषण करना शुरू किया । जिनमें विश्लेषण करने के प्रमुख क्षेत्र इस प्रकार रहे -

1. वर्गवार बच्चों की संख्याएं।
2. मध्यान्ह भोजन न करने के कारण।
3. ग्राम में बच्चों का सामाजिक ताना-बाना।
4. मध्यान्ह भोजन बनाने का तरीका।
5. मध्यान्ह भोजन बनाने व करने के स्थान की परेशानियाँ।

विश्लेषण करने की यह प्रक्रिया बहुत आसान नहीं थी और इस काम को अकेले कर पाना संभव नहीं था । अच्छा एक बात और बता दूँ कि मैंने बतौर प्रधानाध्यापक यूनिसेफ के सहयोग से राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा आयोजित 'प्रधानाध्यापकों का नेतृत्व क्षमता विकास प्रशिक्षण' में भाग लिया था। यह प्रशिक्षण नीपा (NIEPA) द्वारा विकसित लीडरशिप करिकुलम पर आधारित था। जिसमें मुझे इस तरह की परिस्थितियों से कैसे पार पाना है यह भलीभांति समझ में आ गया था। तो मैंने सबके साथ मिलकर योजनाबद्ध तरीके से काम शुरू किया। प्रशिक्षण में सीखी बातों को ध्यान में रखकर शाला में पदस्थ सभी शिक्षकों को इस प्रक्रिया का हिस्सा बनाया। शाला में समय-समय पर बैठकों का आयोजन किया जाने लगा और बच्चों के द्वारा कक्षा व अन्य जगहों पर किए जाने वाले व्यवहारों का अवलोकन किया गया।

इसी समय शाला की एक टीम समुदाय में भी पालकों से संपर्क करने लगी। जिससे इस बात को समझा जा सके कि सामाजिक स्थिति किस तरह की है। इसी प्रक्रिया में मध्यान्ह भोजन बनाने वाले सदस्यों से भी बात की और यह जानने की कोशिश की, कि बच्चे मध्यान्ह भोजन का खाना क्यों नहीं खाते हैं। मैन्यू और बनाने के तरीकों का भी अवलोकन किया गया।

इसी क्रम में यह पता चला कि बच्चे सामाजिक भेदभाव की भावना से ग्रसित हैं। बच्चों के मन में पहले से ही यह भावना बैठी हुई है क्योंकि गाँव में सामाजिक भेदभाव, रूढ़िवादिता और निरक्षरता पहले से व्याप्त थी। ऐसे में बच्चों के मन में बैठी हुई सामाजिक भावना को कम करना या निकालना एक बड़ी चुनौती थी। सामाजिक भेदभाव की भावना ही केवल एक मात्र मसला नहीं था। इसके अतिरिक्त भी कारण थे, जैसे भोजन में गुणवत्ता का अभाव, भोजन बनाते समय स्वच्छता का ध्यान नहीं रखना, भोजन में गुणवत्ता युक्त सामग्री का प्रयुक्त न होना, भोजन का रुचिकर और स्वादिष्ट नहीं होना। और तो और भोजन भी मैन्यू के अनुसार नहीं बनता था।

मध्यान्ह भोजन बनाने वाली महिलाओं की भी अपनी समस्या थी क्योंकि वे जो भी खाना पकाती थीं उसे पकाने में पहले लकड़ी एवं कंडे का प्रयोग किया जाता था। जिससे रसोइयों को भोजन बनाने में बहुत परेशानी होती थी और समय भी अधिक लगता था। बच्चों के अनुपात में थालियों एवं अन्य बर्तनों की कमी थी। जिन थालियों में बच्चे खाना खाते उसे ठीक तरीके से धोने की कोई व्यवस्था नहीं थी जिस कारण से भी बच्चे उन थालियों में खाना नहीं खाते थे। यही कारण थे जिस कारण भोजन करने वाले बच्चों की संख्या बहुत कम थी।

बदलाव के लिए प्रयास - जब बच्चों के इस तरह के व्यवहार को देखा तब इन सब कमियों को देखते हुए शासन की महत्त्वपूर्ण एवं महत्वाकांक्षी मध्यान्ह भोजन योजना का ठीक से क्रियान्वयन करने हेतु साथी शिक्षकों के साथ बैठकर एक कार्य योजना बनाई गई। सभी साथियों से हुए विचार विमर्श के सुझाव को ध्यान में रखते हुए अधिक से अधिक बच्चों को मध्यान्ह भोजन का लाभ देने हेतु स्व सहायता समूह को बताया गया कि प्रतिदिन मैन्यू अनुसार भोजन उपलब्ध हो एवं साफ - सफाई का विशेष ध्यान रखा जाए।

भोजन बनाने हेतु गैस कनेक्शन एवं गैस भट्टी क्रय कर दी गई। प्रयुक्त होने वाले मसाले एवं अन्य गुणवत्ता पूर्ण सामग्री की उपलब्धता हेतु भी बातचीत की गई। सामग्री का भण्डारण डिब्बा एवं कोठियों में किया जाए। खाना बनाने के पूर्व सामग्री को अच्छे से साफ - सफाई एवं सब्जियों को काटने से पहले साफ पानी से धोकर ही बनाई जाए। साथ ही खाना बनाने वालों की व्यक्तिगत स्वच्छता का ध्यान रखना भी जरूरी होगा। इस हेतु सभी की जवाबदारी तय की गई। शिक्षकों को भी भोजन की गुणवत्ता पर नज़र रखने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई। बच्चों की संख्या अनुसार थालियाँ एवं अन्य सामग्री क्रय की गई। बच्चों एवं पालकों को एक साथ बैठकर सामाजिक भेदभाव की छोटी सोच को समाप्त करने की समझाइश दी गई। आपसी भाईचारा, सामाजिकता की सोच को विकसित किया गया।

शिक्षकों की समझाइश के फलस्वरूप बच्चे प्रतिदिन भोजन के पूर्व विधिवत साबुन से हाथ धोने लगे। सभी बच्चे भेदभाव की भावना भूलाकर, एक साथ पंक्ति बद्ध बैठकर, भोजन मन्त्र का उच्चारण कर भोजन ग्रहण करने लगे।



सभी वर्गों के बच्चे एक साथ व्यवस्थित बैठकर भोजन मंत्र बोलते हुए।

प्रतिदिन सभी शिक्षक भी बच्चों के साथ बैठकर मध्यान्ह भोजन ग्रहण करने लगे । जिससे बच्चों को अच्छा लगने लगा। भोजन की गुणवत्ता में सुधार होने लगा तथा मैन्यू अनुसार रुचिकर भोजन बनने से अधिकांश बच्चे भोजन करने लगे । शुरुआत में जहाँ औसत 50 प्रतिशत बच्चे भोजन करते थे आज वहीं मध्याहन भोजन करने वाले बच्चों का औसत 90 प्रतिशत हो गया है ।

बदलाव :

बच्चों में और भी कई महत्त्वपूर्ण बदलावों को सभी शिक्षकों ने देखा। जैसे पहले वे भेदभाव से ग्रसित थे वे अब सभी के साथ बैठकर भोजन करने लगे। बच्चों में स्वच्छता के प्रति सजगता आ गई। रसोइये भी व्यवस्थित तरीके से भोजन वितरण करने लगे । बच्चों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता आने से परिवार, समाज में भी स्वच्छता के प्रति नई चेतना जागृत हुई । जिससे पूरे ग्राम में स्वच्छता एवं साफ - सफाई के प्रति लगाव हो गया।



हैंडपम्प से हाथ धुलाई करते हुए बच्चे।



टंकी के पानी से हाथ धुलाई करते हुए बच्चे।

मध्यान्ह भोजन के समय बरती जाने वाली स्वच्छता धीरे-धीरे बच्चों के व्यवहार का हिस्सा बनने लगी । सबसे पहले बच्चों ने अपनी कक्षाओं को स्वच्छ रखना शुरू किया जिसके लिए सभी कक्षाओं में एक-एक डस्टबिन (कचरा पेटी) रखी गई। बच्चे उसका उपयोग करने लगे और कक्षा भी स्वच्छ रहने लगी। धीरे-धीरे बच्चों ने शिक्षकों से अपने ग्राम को स्वच्छ रखने के लिए भी बात की। जिस हेतु सभी शिक्षकों ने बच्चों का सहयोग किया और पूरे ग्राम को स्वच्छ करने हेतु अभियान चलाया । स्वच्छ ग्राम अभियान को देखकर ग्रामीणजन भी उसका हिस्सा बनने लगे ।

आगामी कार्य योजना :

- मिड डे मील योजना का स्कूल में नियमित और विधिवत संचालन जारी रखना, जिससे बच्चों की उपस्थिति सतत बनी रहे और सभी बच्चों को आवश्यक कैलोरी युक्त पोषण आहार मिलता रहे, जिसके परिणाम स्वरूप सभी बच्चों का शरीर स्वस्थ हो और उनका मस्तिष्क भी स्वस्थ बना रहे।
- शाला में ग्रुप गेम, समूह शिक्षण, पीयर लर्निंग को बढ़ावा देना, जिससे बच्चे साथ मिलकर पढ़ें, खेलें और भोजन करें।
- इसी क्रम में ग्राम के होने वाले सामाजिक और धर्मिक कार्यक्रमों में सहभागिता करना, जिससे पता चले कि यह सामाजिक भेदभाव शाला में ही नहीं अपितु ग्राम में भी कम हो रहा है।
- सप्ताह में 2-3 दिन छात्रों के घर-घर जाकर, पालकों से संपर्क कर, बेहतर पढ़ाई-लिखाई के लिए उनके विचारों को जानना और मार्गदर्शन व सहयोग देना, जिससे बच्चों का शाला में ठहराव हो, उनके शैक्षणिक स्तर का भी विकास होता रहे।

विमल कुमार बचकैया
(प्रधानाध्यापक)
जगदीश प्रसाद गोलदांज
(संकलनकर्ता शिक्षक)
मोबाईल : 9754586453
Email : vkbachkaiya9754@gmail.com
jagdeeshgolandaj1977@gmail.com

समुदाय की सहभागिता

शासकीय माध्यमिक शाला, बावड़ियाकला

यू-डाईस कोड : 23320302404

- विकासखंड : फंदा नया शहर
- जिला : भोपाल
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 4 - अधिगम के लिए समाज व विद्यालय का सह-संबंध

उप डोमेन क्र. 1 - समाज एवं विद्यालय प्रबंधन समिति की सहभागिता

यह कहानी है भोपाल जिले के एक गाँव बावड़ियाकला के मध्य में बसे हरियाली से युक्त एक माध्यमिक विद्यालय 'शा.मा.शा. बावड़ियाकला' की। इसमें अध्ययनरत बालकों की संख्या 80 एवं बालिकाओं की संख्या 62 हैं। विद्यालय की इमारत सुन्दर, मज़बूत एवं आकर्षक है।

पृष्ठभूमि :

यह कहानी है भोपाल जिले के एक गाँव बावड़ियाकला के मध्य में बसे हरियाली से युक्त एक माध्यमिक विद्यालय 'शा.मा. शा. बावड़ियाकला' की। इसमें अध्ययनरत बालकों की संख्या 80 एवं बालिकाओं की संख्या 62 हैं। विद्यालय की इमारत सुन्दर, मज़बूत एवं आकर्षक है। जिला मुख्यालय से विद्यालय तक की दूरी 8 किलोमीटर है एवं विद्यालय तक आवागमन हेतु पक्की सड़क है। आसपास चार अशासकीय विद्यालय संचालित हैं।

विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थी -गरीबी रेखा के नीचे (बी. पी. एल.) परिवारों से हैं। गाँव में सभी धर्म, जाति/वर्ग के लोगों के रहने के कारण पूरे गाँव में अनेकता में एकता के दर्शन होते हैं, यहाँ सभी त्यौहारों को मिलजुल कर मनाया जाता है। विद्यालय के सभी शिक्षक एवं प्रधानाध्यापक का नियमित रूप से प्रयास रहता था, कि विद्यालय में समस्त विद्यार्थी प्रतिदिन उपस्थित रहें, परन्तु विद्यालय में मूलभूत सुविधाओं के अभाव में विद्यार्थियों की उपस्थिति प्रभावित रहती थी।

समस्या :

- समुदाय की सहभागिता के अभाव में विद्यार्थियों की अनियमित उपस्थिति।

समस्या समाधान की प्रक्रिया :

- प्रारंभ में सब कुछ इतना आसान नहीं था। पालकों को विश्वास में लेना, उन्हें समझाना कि अपने बच्चों के लिए काम के बीच से थोड़ा समय निकालना कितना महत्त्वपूर्ण है।
- समस्याओं के समाधान हेतु हम सबने अनेक समन्वित प्रयास किये, जैसे - कचरा डालने के स्थान पर कचरा पेटी रखवाना, बच्चों एवं शिक्षकों द्वारा स्वच्छता का सन्देश देती रैली निकालना, स्थानीय लोगों से संपर्क करना, नगर-निगम से सतत् संपर्क स्थापित करना।
- सामुदायिक सहयोग से अनेक मूलभूत सुविधाएं प्राप्त हुई, परिसर के पास डलने वाला कचरा भी शिक्षकों एवं जागरूक नागरिकों के प्रयास से बंद हो गया। समय के साथ - साथ शिक्षकों के प्रयास से परिवर्तन होने लगे। जन-समुदाय की भागीदारी से विद्यालय में अनेक सुविधाएं और संसाधन प्राप्त हुए।
- समुदाय के सहयोग से विद्यालय परिसर में विद्यार्थियों के लिए झूले, फिसल पट्टी लगायी गयी। जिससे बच्चों में खुशी एवं विद्यालय में आनन्ददायी वातावरण निर्मित हुआ।
- रोटरी क्लब के माध्यम से विद्यार्थियों के लिए शुद्ध, शीतल पेयजल हेतु आरओ सहित वाटर कूलर की उपलब्धता से विद्यालय में आनंददायी वातावरण निर्मित हुआ।



विद्यार्थी झूला झूलते हुए।



विद्यार्थी वाटर कूलर का पानी पीते हुए।

क्र.	सहयोगदाता का विवरण/नाम	प्राप्त सामग्री का विवरण / नाम	प्राप्त सुविधा से होने वाले लाभ
1.	लायंस क्लब लेक सिटी भोपाल एवं स्थानीय जन प्रतिनिधि	शेड एवं दो कक्षों का निर्माण	बैठक की समुचित व्यवस्था
2.	स्थानीय नागरिक	ग्रिल/गेट निर्माण	सुरक्षित विद्यालय भवन
3.	रोटरी क्लब	20 सेट फर्नीचर एवं स्टाफ हेतु कुर्सियां	आरामदायक शिक्षण कक्ष
4.	एल एंड टी कंपनी	3 कक्ष हेतु फर्नीचर, वाटर कूलर व एक्वागार्ड	स्वच्छ पेयजल
5.	इनरव्हील क्लब भोपाल	रनिंग वाटर सिस्टम, झूला, फिसल पट्टी, खेल-सामग्री, सांस्कृतिक भवन हेतु बिजली फिटिंग एवं पंखे, पुस्तकालय हेतु पुस्तकें व स्टॉफ हेतु कुर्सी-टेबल	स्वच्छ शौचालय और आनंददायक वातावरण
6.	लायंस क्लब पर्ल भोपाल	सेनेट्री वेंडिंग मशीन, कैंसर जागरूकता एवं नेत्र-परीक्षण	स्वस्थ विद्यार्थी जीवन, अपने प्रति जागरूकता
7.	साकार समाज सेवा समिति भोपाल	500 विद्यार्थियों हेतु स्वेटर	शीतऋतु में उपयोगी वस्त्रों की पूर्ति
8.	श्री सक्सेना दंपत्ति	विद्यार्थियों हेतु स्कूल बैग	एकरूपता में वृध्दि को परिलक्षित करता अनुशासित दृश्य
9.	श्री चौकसे दंपत्ति	नवनिर्मित 1100 वर्गफीट का एमडीएम हॉल	स्वच्छ, स्वस्थ वातावरण में सहयोग
10.	बीएसएसएस कॉलेज भोपाल	विद्यार्थियों को कंप्यूटर प्रशिक्षण (KNOWLEDGE ON WHEEL)	आईटी संसाधन को सीखने का लाभ
11.	श्री अतुल बुधोलिया	समस्त विद्यार्थियों हेतु प्रतिदिन केला-वितरण	पोषण की पूर्ति
12.	यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस क.लि.	आरओ सहित वाटर कूलर, स्टाफ हेतु टेबल-कुर्सियां, अलमारी	सुविधाओं में उच्चतर वृद्धि
13.	रोटरी क्लब भोपाल स्मार्ट सिटी	आरओ सहित वाटर कूलर	शुद्ध और शीतल जल की उपलब्धता

बदलाव :

- अब विद्यालय में मूलभूत सुविधाओं में वृद्धि के परिणाम स्वरुप बच्चों का आकर्षण विद्यालय की ओर बढ़ा और उनकी उपस्थिति नियमित रहने लगी।
- शाला के परिसर में बच्चे फूलों की तरह खिलते हुए रहने लगे, जो कक्ष कभी छात्र उपस्थिति से सूने पड़े थे, वह पूरे भरे और सुसज्जित रहने लगे। वर्तमान में कचरा डालने के स्थान पर पी.वी. ब्लाक लगे हैं। जिनके कारण विद्यालय परिसर एवं आसपास स्वच्छता दिखती है।
- विद्यालय में केवल मूलभूत सुविधाओं का पूर्ण होना ही समस्या का समाधान नहीं था। अतः सभी शिक्षक - साथियों ने नित नये प्रयोग अपनी कक्षा में, अपने अध्यापन में करना आरंभ किया।
- खेल - खेल में पढ़ाना, गीत, कविता से पाठ्य योजना को समझाना, रोज नई - नई गतिविधियां करने से विद्यार्थी सीखने में आनंद लेने लगे। इसी क्रम में शिक्षकों ने अभिभावकों को जागरूक करने हेतु अनेक प्रयास किये जैसे - नियमित रूप से पीटीएम में बुलाना, प्रार्थना सभा में ध्वजारोहण शामिल करना, राष्ट्रीय एवं अन्य त्यौहार पर आमंत्रित करना, उनसे बातचीत कर उनके सुझाव लेना इत्यादि।
- इन प्रयासों से पालकों का विद्यालय के प्रति आकर्षण बढ़ा, इसका असर प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों की उपस्थिति एवं अधिगम पर हुआ।
- जहाँ एक ओर बच्चे रुचिपूर्ण ढंग से अध्ययन कर रहे थे वहीं दूसरी ओर वह जन समुदाय की भागीदारी से मानवीय भावनाएं भी सीख रहे थे, जैसेः- प्रकृति का संरक्षण एवं पशु/पक्षियों हेतु दाना- पानी की व्यवस्था जैसे नेक कार्य।



समुदाय संग बच्चे।

कोविड - 19 के दौरान ऑनलाइन कक्षाएं -

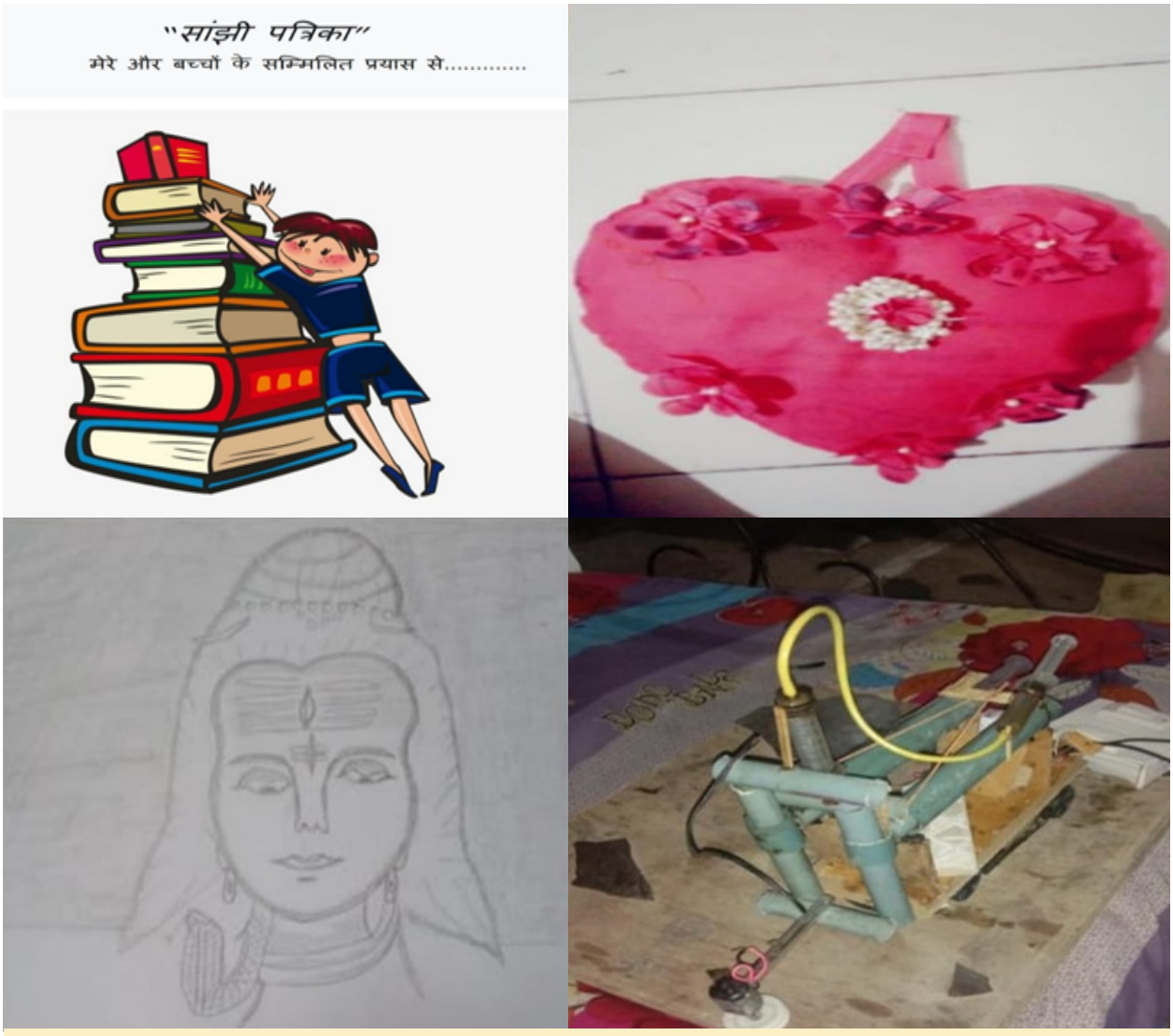
कक्षाएं संचालित हो रही थीं, तब भी बच्चों के साहित्यिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक पक्ष को मजबूत करने हेतु सभी शिक्षक सक्रिय रहे और अनेक सह- शैक्षिक गतिविधियाँ, अध्ययन के साथ-साथ करवाते रहे।



योग की मुद्राएं।

साँझी पत्रिका -

एक बाल पत्रिका जिसमें कोविड काल के दौरान बच्चों ने अपनी रचनाएं संकलित की **'साँझी पत्रिका'** के नाम से विद्यालय की शिक्षक श्रीमति साधना श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में तैयार की गई।



कोविड-19 अवधि में किये गये कार्य की झलकियाँ।

जन-समुदाय की भागीदारी एवं शिक्षकों द्वारा हुए समस्त बदलाव स्थिर हैं, और विद्यालय के समस्त शिक्षक उनकी स्थिरता हेतु प्रयासरत् एवं वचनबद्ध हैं।

सम्मान एवं पुरस्कार :

वॉल ऑफ फेम 2018-19 :

- राज्य शिक्षा केंद्र म.प्र. द्वारा 'दक्षता उन्नयन' कार्यक्रम में विद्यालय के विद्यार्थियों- द्वारा मूलभूत दक्षताओं को प्राप्त करने के परिणाम स्वरूप विद्यालय को **'वॉल ऑफ फेम 2018-19'** पर प्रदर्शित किया गया।
- म.प्र स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा संचालित 'शाला-सिद्धि- हमारी शाला ऐसी हो' कार्यक्रम अंतर्गत विद्यालय ने वर्ष 2017 में भोपाल जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

आगामी योजना :

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विद्यालय की आगामी योजनाएं हैं :

- औषधि - वाटिका का निर्माण।
- संगीत के साथ प्रार्थना - सभा आयोजित करना।
- विद्यालय में स्मार्ट-क्लास संचालित करना।

उपर्युक्त योजनाओं में से प्रथम योजना को स्कूल खुलने के साथ पूर्ण करने का संकल्प है एवं दूसरी योजना औषधि - वाटिका पूरी कर ली गई है।

'शिक्षक एवं समुदाय का साझा प्रयास
विद्यालय का हो रहा विकास'

ए.के. पाठक
(प्रधानाध्यापक)
मोबाईल : 9109739376
संकलनकर्ता
साधना श्रीवास्तव
(सहायक शिक्षक)

❑ ❑ ❑

समुदाय के सहयोग से उपस्थिति में वृद्धि

शासकीय माध्यमिक शाला, टीकर

यू-डाईस कोड : 23380500103

- विकासखंड : विजयराघवगढ़
- जिला : कटनी
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 4 - अधिगम के लिए समाज व विद्यालय का सहसंबंध

उप डोमेन क्र. 2 - विद्यालय में अभिभावकों की सहभागिता

विद्यालय में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं की उपस्थिति बढ़ाने में शाला प्रबंध समिति, पालक एवं अन्य विभिन्न रचनात्मक गतिविधियां कैसे उपयोगी साबित हो सकती हैं, इसका बेहतर उदाहरण इस कहानी में दिखेगा।

पृष्ठभूमि :

जिला मुख्यालय से, लगभग 40 किलो मीटर दूर विजयराघवगढ़ राजा श्री सरयू प्रताप सिंह की, ऐतिहासिक नगरी से, पुरातात्विक स्थान कारीतलाई, मार्ग पर अनुसूचित जातीय बाहुल्य गाँव टीकर है। जिसकी आबादी लगभग 3000 है। यहां पर 3 प्राथमिक विद्यालय, 5 आंगनवाड़ी केंद्र व हमारा अपना विद्यालय शासकीय माध्यमिक विद्यालय टीकर है। यहाँ कक्षा 6 से 8 तक कक्षाएँ संचालित हैं वर्ष 2021-22 में दर्ज संख्या कक्षा 6वीं में 48, कक्षा 7वीं में 76, एवं कक्षा 8वीं में 82 इस तरह कुल दर्ज संख्या 206 है। प्रधान पाठक एवं शिक्षक सहित स्टाफ कार्यरत हैं। यहाँ पर यातायात, दूरसंचार के साधन उपलब्ध हैं किन्तु अस्पताल, बाजार, बैंक, डाकघर व अन्य व्यावसायिक प्रतिष्ठान लगभग 04 किलोमीटर दूर स्थित है जिससे यहाँ के रहवासियों को असुविधा होती है।

ग्राम टीकर में विभिन्न समुदाय के लोग निवास के करते हैं जिनकी अलग-अलग संस्कृति एवं वेशभूषा है, ये अपने दैनिक दिनचर्या के बाद मानस लोकनृत्य, किस्से कहानियों से मनोरंजन करते हैं। ग्राम टीकर अनुसूचित जातीय बाहुल्य ग्राम होने के कारण यहाँ के अधिकांश रहवासी खेतिहर मजदूर हैं जो कि ग्राम में ही कृषकों के यहाँ मजदूरी कर अपना एवं अपने परिवार का भरण-पोषण करते हैं। खेतिहर मजदूर होने के कारण इनकी आर्थिक स्थिति कमजोर है जिसका सीधा प्रभाव बच्चों पर पड़ता है, क्योंकि इनकी माँ मनरेगा कार्य में मजदूरी एवं खेत में कार्य करने जाती हैं। वहां पर अपने छोटे भाई-बहन को देखरेख के लिए ये बच्चे भी चले जाते हैं। जिससे विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति अत्यंत कम हो जाती है।

समस्या :

- अभिभावकों की विद्यालय के प्रति रुचि न होने से छात्रों की अनियमित उपस्थिति।

समस्या समाधान की प्रक्रिया :

एसएमसी के साथ बैठक :



एसएमसी के साथ बैठक।

उक्त चुनौतियों में परिवर्तन करने की इच्छा हम दोनों शिक्षकों में थी इसलिए हमें नेतृत्व विकास क्षमता विकास प्रशिक्षण प्राप्त कर हमने अपने शिक्षक साथी के साथ मिलकर पालकों, अभिभावकों, समुदाय व जनप्रतिनिधियों से संपर्क कर सहयोग लेने का निर्णय लिया। साथ ही प्रयास करना प्रारंभ किया। सबसे पहले हमने शाला प्रबंधन समिति की बैठक का आयोजन कर समिति के सदस्यों के सहयोग से विद्यार्थियों की उपस्थिति बढ़ाने एवं ग्राम में पालकों से लगातार संपर्क कर छात्रों को नियमित विद्यालय भेजने के लिए प्रेरित किया गया और इस प्रयास में हम सफल भी हुए।

बाल केबिनेट की सक्रिय सहभागिता :

विद्यालय में छात्रों की उपस्थिति बढ़ाने के लिए अपने विद्यालय में गठित बाल कैबिनेट के सहयोग से हमने विद्यालय प्रागंण को साफ व स्वच्छ बनाने के साथ घास, गन्दगी, खेल के मैदान की सफाई करवाकर व्यवस्थित किया गया,

जिससे छात्रों में मैदान के साथ-साथ कक्षा कक्ष को स्वच्छ रखने की भावना विकसित हुई।

खेल सामग्री का उपयोग :

छात्रों की इस नियमित उपस्थिति को देखकर विद्यालय को प्राप्त राशि से खेल सामग्री की व्यवस्था कर विभिन्न प्रकार की खेल गतिविधियाँ (कबड्डी, दौड़, स्लो साइकल आदि) आयोजित कर पुरस्कार वितरण किया जाता है, जिससे छात्रों में विद्यालय के प्रति आकर्षण हुआ और छात्रों की उपस्थिति एवं ठहराव में अंतर देखा जाने लगा।



कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन

कठिन अवधारणाओं को रोचक बनाने की पहल :

हमारे अपने विद्यालय में हमने विज्ञान मित्र क्लब का गठन कर, उपलब्ध विज्ञान सामग्री को टेबल में रख कर नियमित रूप से विज्ञान शिक्षक द्वारा विषय वस्तु से सम्बंधित गतिविधियाँ कराई जाने लगी। साथ ही बुक बैंक की पुस्तकों का छात्रों द्वारा अध्ययन हेतु नियमित उपयोग किया जाने लगा, इन गतिविधियों के माध्यम से छात्र विद्यालय में रुचि लेने लगे और उनकी उपस्थिति में ठहराव हुआ। साथ ही छात्रों में सीखने व अध्ययन करने की प्रवृत्ति जाग्रत हुई।

विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक भ्रमण गतिविधियां :

आसपास की खोज कार्यक्रम के माध्यम से पुरातात्विक स्थल विष्णु वाराह का भ्रमण कराया गया जहाँ छात्रों को चट्टानों, पेड़-पौधों, जड़ी बूटियों एवं पर्यावरण के सम्बन्ध में जानकारी दी गई, इस गतिविधि से हमें समुदाय का सहयोग मिलना प्रारंभ हो गया। साथ ही छात्रों का विद्यालय के प्रति आकर्षण व शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी।



आसपास की खोज कार्यक्रम

स्वच्छता के प्रति जागरूकता एवं मध्यान्ह भोजन :

शाला प्रबंधन समिति एवं बाल कैबिनेट के सहयोग से समूह द्वारा बनाया गया मध्यान्ह भोजन स्वादिष्ट एवं रुचिकर मिलना प्रारंभ हुआ। छात्र नियमित रूप से भोजन करने से पहले एवं बाद में हाथ धोते हैं जो स्थाई रूप से देखा जा सकता है। जिससे जो छात्र भोजन करने घर चले जाते थे वे छात्र भी भोजन के लिए विद्यालय में ठहरने लगे।

बदलाव :

छात्र/छात्राओं का विद्यालय में ठहराव :

शाला प्रबंधन समिति की बैठक व समुदाय के सदस्यों से लगातार संपर्क करने पर समिति के सदस्यों व समुदाय में विद्यालय के प्रति रुझान हुआ, समुदाय के सदस्यों में विद्यालय के प्रति लगाव देखकर हमने जन भागीदारी व शाला प्रबंधन समिति के सहयोग से सभी कक्षाओं में पंखे लगवाये, जिससे छात्रों की उपस्थिति बढ़ी। साथ ही सदस्यों में विद्यालय के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव आया और विद्यालय में कक्षा कक्ष के साथ शौचालय, रसोई घर, रसोइयों की स्वच्छता, स्वास्थ्य व स्वभाव में परिवर्तन दिखा और छात्रों का विद्यालय में ठहराव हुआ। पूर्व में जहां विद्यार्थियों की उपस्थिति 50 प्रतिशत रहती थी, वहीं अब बढ़कर 80 प्रतिशत होने लगी।

विभिन्न रचनात्मक गतिविधियाँ :



विद्यार्थी रंगोली बनाते हुए।

विद्यालय में रंगोली, पुराने ड्राइंग शीट से विषय वस्तु से सम्बंधित चित्र, चार्ट, सारणी तैयार कर कक्षों की सजावट करना, विद्यालय में स्मार्ट क्लास की स्थापना से ज्ञान वर्धक कार्यक्रम, प्रश्नोत्तरी, मन की बात एवं पहेलियों के प्रसारण आदि से छात्रों को ऊर्जात्मक एवं आनंदमयी वातावरण निर्मित हुआ, साथ ही विज्ञान मित्र क्लब व आसपास की खोज कार्यक्रमों से छात्रों में क्रियाकलाप, गतिविधि, कार्य करने, सीखने, अध्ययन करने में रुचि व विषय वस्तु को रोचक बनाने में शिक्षक साथी का सहयोग अत्यंत प्रभावी रहा और छात्रों की उपस्थिति लगभग 90 से बढ़कर 150 तक पहुँच गई।

कोविड-19 की परिस्थितियों में भी शैक्षणिक कार्य :



कोविड-19 मोहल्ला कक्षा का आयोजन।

कोविड -19 मार्च 2020 से लॉकडाउन के कारण सभी विद्यालय बंद थे। जुलाई 2020 से मध्यप्रदेश शासन व राज्य शिक्षा केंद्र भोपाल के आदेशानुसार सीएम एवं निष्ठा प्रशिक्षण शिक्षकों द्वारा ऑनलाइन प्राप्त किया गया। विद्यार्थियों के लिए डिजिलेप के माध्यम से 'हमारा घर हमारा विद्यालय' मोहल्ला कक्षा में विद्यार्थियों को उनके बसाहट व मोहल्ले में जाकर राज्य शिक्षा केंद्र भोपाल द्वारा भेजी गई विषय वस्तु डिजिलेप एवं समय विभाग चक्र द्वारा उपलब्ध कराई गई।

आगामी कार्य योजना :

- आगामी कार्य योजना में हमारी प्राथमिकता विद्यार्थियों की उपस्थिति और ठहराव को बढ़ाने की है, विद्यालय में इस हेतु अनेक रचनात्मक गतिविधियां प्रारंभ की जाएंगी।
- विद्यालय प्रांगण, कक्षा कक्ष, शौचालय स्वच्छता के साथ-साथ छात्रों की स्वच्छता, स्वास्थ्य, अनुशासन, शैक्षणिक गतिविधियाँ, सहभागिता एवं छात्रों की निरंतर उपस्थिति व ठहराव हमारी कार्ययोजना में है।

आर.डी. चौधरी
(प्रधानाध्यापक)
मोबाईल : 9893828898

❑ ❑ ❑

समुदाय की सक्रिय सहभागिता

शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय, जमुई

यू-डाईस कोड : 23161201702

- विकासखंड : सोहागपुर
- जिला : शहडोल
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 1 - अधिगम के लिए समाज व विद्यालय का सहसंबंध

उप डोमेन क्र. 1 - समाज एवं विद्यालय प्रबंधन समिति की सहभागिता

विद्यालय के प्रति समुदाय पूरी तरह से दूर था। उन्हें विद्यालय से विभिन्न समितियों के माध्यम से जोड़ा गया और उनके द्वारा जिम्मेदारियों का निर्वहन करने के बाद विद्यालय के वातावरण में कई महत्त्वपूर्ण बदलाव परिलक्षित होने लगे।

पृष्ठभूमि :

ऐतिहासिक धरोहरों से युक्त शहडोल जिले के सोहागपुर विकासखंड अंतर्गत पूर्व दिशा में शहडोल बुढार राष्ट्रीय मार्ग 43 पर शा.पूर्व. मा.विद्यालय जमुई स्थित है। यह विद्यालय जिला मुख्यालय से 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। लगभग 3000 आबादी वाले इस गांव में 60 प्रतिशत सामान्य जाति के साथ, 20 प्रतिशत पिछड़ा वर्ग, कमजोर एवं निर्धन समुदाय के 20 प्रतिशत (बैगा जातियों) के लोग निवास करते हैं। विद्यालय रख-रखाव के अभाव में बाउंड्रीवाल चारों तरफ से टूटी हुई है। यह परिसर गेट विहीन, आवारा पशु एवं मानव मल मूत्र से प्रदूषित विद्यालय भवन खण्डर में तब्दील हो रहा था। ऐसी परिस्थिति में प्रधानाध्यापक द्वारा समाज, शिक्षक, शाला प्रबंधन समिति (एसएमसी) तथा बाल कैबिनेट के माध्यम से भौतिक आधार भूत संरचना, मध्यान्ह भोजन, पुस्तकालय के माध्यम से सभी शिक्षकों को कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ।

समस्या :

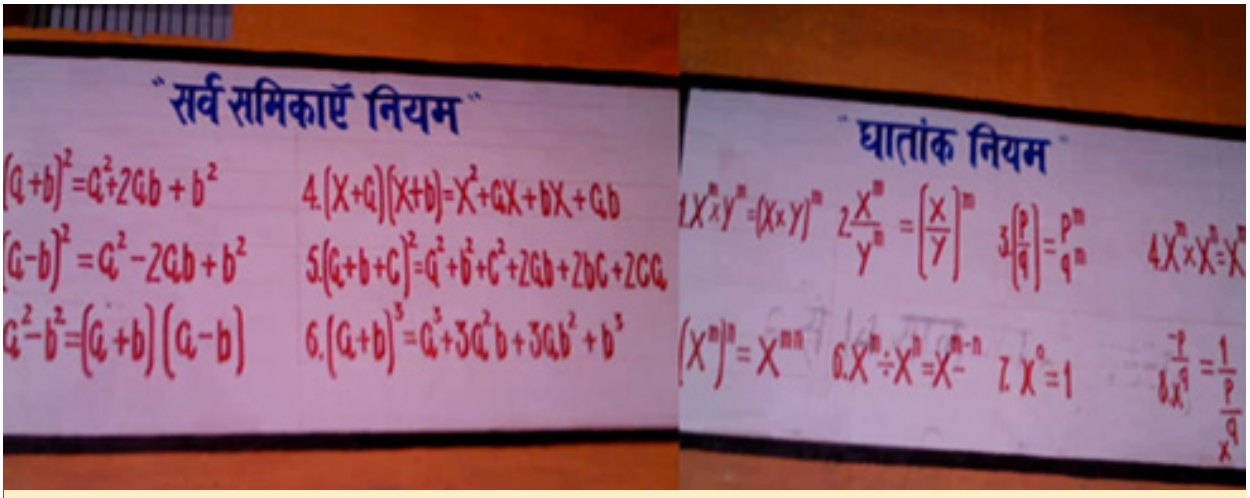
- समुदाय की सक्रिय सहभागिता का अभाव।
- शाला प्रबंधन समिति की निष्क्रियता।
- विद्यार्थियों में आयु व कक्षा के अनुरूप अपेक्षित दक्षता का अभाव।

समस्या समाधान की प्रक्रिया :

समुदाय, पालकों, शाला प्रबंधन समिति एवं ग्राम पंचायत का विश्वास हासिल कर विद्यालय का मुख्य द्वार निर्माण, बालक शौचालय विहीन विद्यालय तथा खेल मैदान एवं परिसर को आम निस्तार से मुक्त कराया गया। साथ ही आयु एवं कक्षा के अनुरूप विद्यार्थियों में अपेक्षित दक्षता प्राप्त करने हेतु शिक्षकों की विषय आधारित पाठ्य योजना से शिक्षण, हमारा घर हमारा विद्यालय, रेडियो कार्यक्रम एवं मोहल्ला कक्षा के संचालन द्वारा प्रयास किए गए। समाज एवं पालकों की अरुचि जैसी समस्याओं का समाधान करने के लिए शाला प्रबंधन समिति, पालक शिक्षक संघ और ग्राम पंचायत के ग्राम शिक्षा समिति के साथ बाल कैबिनेट की संयुक्त बैठक का आयोजन किया गया। साथ ही इन सभी को विद्यालय की दयनीय स्थिति से परिचित करवाया गया।

बैठक में उपस्थित सभी पालकों एवं शाला प्रबंधन समिति के सदस्यों से विद्यालय में सक्रिय रूप से भागीदारी निभाने का निवेदन किया गया। उन्हें विश्वास दिलाया गया कि विद्यालय के शिक्षक परिवार शाला को एक निजी विद्यालय की भांति संचालन कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षण कार्य करेंगे। सभी ने अपने सामर्थ्य अनुसार विद्यालय को मदद करके स्थाई बदलाव में सहभागिता का निश्चय किया।

- ग्राम पंचायत व विद्यार्थियों के पालकों द्वारा शाला प्रबंधन समिति के सहयोग से विद्यालय परिसर को आम निस्तार एवं असामाजिक तत्वों से मुक्त कराने के लिए सहमति इस शर्त पर बनी कि विद्यार्थियों के अधिगम में वृद्धि के लिए शिक्षक विद्यालय में प्रात : 10:00 से सायं 5:00 तक उपस्थित रहकर शिक्षण कार्य करेंगे।
- आयु एवं कक्षा के अनुरूप विद्यार्थियों में अपेक्षित दक्षता हासिल करने हेतु शिक्षकों की विषय आधारित पाठ्य योजना से शिक्षण की तैयारी करने के लिए सभी शिक्षकों को अपने स्तर से चाहे गये रुचि अनुसार कार्य सौंपें गये। साथ ही जिम्मेदारी दी गयी। इसके लिए विद्यालय में अधिगम में वृद्धि हेतु बोलती दीवारें तैयार की गई।



विद्यार्थियों के अधिगम वृद्धि हेतु बोलती दीवारें।

बोलती दीवारें -

विद्यार्थियों को खेलते समय में सीखने के लिए विद्यालय बीज गणितीय सूत्रों को दीवारों पर लिखवाया गया। इन दीवारों को बोलती दीवार का नाम दिया गया।

- कोरोनाकाल में ऑनलाइन शिक्षण में, अधिगम की पूर्ति के लिए हमारा घर हमारा विद्यालय, रेडियो कार्यक्रम एवं मोहल्ला कक्षा का संचालन द्वारा शिक्षण में समाज एवं पालकों का मेन्टर के रूप में पूर्व सीनियर छात्र/रिश्तेदार/ऑगनवाड़ी कार्यकर्ता के मोबाइल से विद्यालय के द्वारा मेन्टर बनाये गए। जो अपने घर के पास रहने वाले बच्चों को शैक्षणिक सामग्री डिजिटल और अन्य माध्यम से उपलब्ध कराते हैं। श्री दीपक कुमार साहू (मप्र ऑनलाइन के संचालक) श्री हीरालाल बैगा पूर्व सरपंच जो मोहल्ला क्लास चलाते हैं और बच्चों को डिजिटल सामग्री को देखने में सहायता प्रदान करते हैं और उनका सहयोग कर बैगा जनजाति की सामुदायिक मदद की गयी।
- DigiLEP में Android Mobile से सीधे जोड़े गए विद्यार्थियों की संख्या- 65, समूह में मोबाइल से लाभान्वित विद्यार्थियों की संख्या- 22, पूर्व सीनियर छात्र/रिश्तेदार/ऑगनवाड़ी कार्यकर्ता के मोबाइल से जोड़े गये विद्यार्थियों की संख्या-31, प्रधानाध्यापक द्वारा विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए शिक्षकों व समुदाय द्वारा मैग्निफाइंग ग्लास क्रय कर, डिजिलेप सामग्री को टी.वी. के माध्यम से दिखाकर गणित विषय को सरल व सहज बनाया गया।



मैग्नीफाइंग ग्लास (विज्ञान किट) से विद्यार्थियों को पढ़ाते शिक्षक।

बदलाव :

- ग्राम पंचायत व विद्यार्थियों के पालकों, शाला प्रबंधन समिति के सहयोग से शाला भवन के मुख्य द्वार एवं 15×75 फुट आकार की सी.सी रोड का निर्माण किया गया। जिससे बरसात में जल भराव होने से विद्यार्थियों को मुख्य द्वार से भवन तक पहुँचने की स्थाई सुविधा प्राप्त हुई।



विद्यार्थियों को मुख्य द्वार से भवन तक पहुँचने की सुविधा।

- विद्यालय परिसर को गंदगी मुक्त कर पुष्पवाटिका एवं बागवानी रोपण - शाला भवन के सामने आधा हेक्टेयर क्षेत्र में बागवानी एवं पुष्प वाटिका विकसित कर पालक, मेथी, मिर्च, बैंगन, टमाटर, मूली आदि हरी सब्जियों का उत्पादन कर मध्यान्ह भोजन में एक अतिरिक्त मीनू के रूप में परोसा गया। जिससे विद्यार्थियों के शरीर में पोषक तत्वों की भरपाई हुई।



विद्यार्थियों के लिए पोषण वाटिका।

- शाला परिसर के शेष भाग विद्यालय भवन के पीछे एक हेक्टेयर क्षेत्र (100×100 meter) में खेल का मैदान का सामुदायिक सहयोग से समतलीकरण कराकर विद्यार्थियों की खेल गतिविधि हेतु सुगम मैदान बनाया गया। जो एक स्थायी बदलाव है।



सामुदायिक सहयोग से समतल खेल का मैदान।

- शाला परिसर आकर्षक एवं सीखाने-सिखाने के लिए विद्यार्थियों को अवसर देकर स्वच्छ विद्यालय में पालक अपने बच्चों को सर्वांगीण विकास हेतु निजी विद्यालय से निकालकर शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय जमुई में प्रवेश दिलाने लगे हैं। जिससे गांव का अशासकीय आदर्श ज्योति विद्यालय बंद हो गया।



विद्यालय से विद्यार्थियों का लगाव।

स्थायित्व :

- विद्यालय में समुदाय की सहभागिता निरतंर बनी हुई है।
- आयु एवं कक्षा के अनुरूप विद्यार्थियों में अपेक्षित दक्षता प्राप्त करने हेतु शिक्षकों की विषय आधारित पाठ्य योजना से शिक्षण, बागवानी कार्य में निरंतर बढ़ोत्तरी हो रही है।

आगामी योजना :

- कोविड-19 के कारण विद्यालय में हुए लर्निंग लॉस की पूर्ति करना।
- विद्यालय खुलने पर विद्यार्थियों को पूरी तरह से कोविड से सुरक्षित करते हुए कोविड प्रोटोकॉल का पालन कर गुणवत्ता पूर्ण शिक्षण कार्य सुनिश्चित करना।

URL- https://youtu.be/qaPL&RGTANI

संतोष कुमार विश्वकर्मा
(प्रधानाध्यापक)
मोबाईल : 918827567094
Email : skvish0089@gmail.com

❑ ❑ ❑

सहयोग से बदलाव

एकीकृत शाला शासकीय मा.वि., सामरसिंगा

यू-डाईस कोड : 23070310303

- विकासखंड : बमौरी
- जिला : गुना
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 4 - अधिगम के लिए समाज व विद्यालय में सहसंबंध

उप डोमेन क्र. 2 - विद्यालय में अभिभावकों की सहभागिता

इस कहानी में समुदाय के सहयोग से विद्यालय का पूरा परिवेश बदल गया और विद्यालय के शिक्षण में सुधार हुआ है।

पृष्ठभूमि :

एकीकृत शाला शा.मा.वि. सामरसिंगा म.प्र. के आकांक्षी जिला गुना के विकासखण्ड बमौरी में स्थित है जो जिला मुख्यालय से 22 किलोमीटर व विकासखण्ड मुख्यालय से 28 किलोमीटर दूरी पर जनशिक्षा केन्द्र झागर में स्थित है। यह गुना कोटा राजमार्ग से 1.6 किलोमीटर पूर्व की ओर पहाड़ी की तलहटी में है। विद्यालय के पूर्व दिशा में प्राचीन भैरव मंदिर जो गोल्जी पहाड़ी पर है तथा दक्षिण में 1 किलोमीटर दूरी पर तालाब है। पश्चिम में गांव की स्थानीय नदी है। प्राकृतिक सौंदर्य के बीच यह विद्यालय परिसर हरे-भरे खेतों से घिरा है।

गांव में मुख्य रूप से किरार समुदाय, लोधा, बंजारा, सहरिया जनजाति के परिवार निवास करते हैं। इनका प्रमुख व्यवसाय कृषि, मजदूरी है तथा विद्यालय में इन्हीं समुदाय के बच्चे पढ़ने आते हैं। वर्तमान में विद्यालय में कुल 131 विद्यार्थी दर्ज हैं। विद्यार्थियों को पढ़ने हेतु 6 कक्ष व एक प्रधान अध्यापक कक्ष है। खेल का मैदान है।

समस्या :

- विद्यालय में स्वच्छता के अभाव के कारण बच्चों का शाला में न आना।

समस्या समाधान की प्रक्रिया :

इस विद्यालय में संसाधनों की कमी होने का मुख्य कारण यह था कि 2013 तक इस शाला में शिक्षकों की कमी थी जिसके कारण विद्यालय विकास के कुछ महत्त्वपूर्ण क्षेत्र में से एक स्वच्छता पर कार्य नहीं हुआ। आलम यह था कि विद्यालय प्रांगण में कूड़ा का ढेर, शौचालय में सफाई न होना, गाँव का गन्दा पानी विद्यालय के बीच से गुजरना, विद्यालय के समीप स्थित 'शमशान' घाट की चहारदीवारी न होना (जिसकी वजह से वहां की अशुद्ध सामग्रियां विद्यालय की तरफ आ जाती थी) आदि था। जिसके कारण विद्यार्थी नियमित स्कूल नहीं आते थे।

ऐसी परिस्थितियों के बीच शासकीय माध्यमिक विद्यालय में नवीन शिक्षक की नियुक्ति हुई। शिक्षक के सामने पहली मुख्य समस्या यह थी कि वह सर्वप्रथम किस प्रकार से विद्यालय प्रागंण में फैली गंदगी को दूर करें, क्योंकि विद्यालय में विद्यार्थियों के कम होने का मुख्य कारण यही था।

समुदाय से सम्पर्क- शिक्षक द्वारा समुदाय में भ्रमण करने की और विद्यालय में नामांकित छात्रों के अभिभावकों से मिलने की योजना बनायीं।



अभिभावकों से संपर्क।

परन्तु समुदाय के अधिकांश अभिभावकों का शिक्षा के प्रति रुझान न होने के कारण राजीव जी को ग्रामीणों से कोई सहयोग प्राप्त नहीं हो रहा था। हालात यह थे कि स्कूल में चहारदीवारी न होने के कारण असामाजिक तत्वों द्वारा विद्यालय में रखा शासकीय सामान की भी तोड़-फोड़ किया जाता था, अतः हालातों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने एक विशेष कार्य योजना बनाई कि, समुदाय में जो प्रभावशील व्यक्ति हैं उनका सहयोग लिया जाए।

सरपंच से सहयोग- सर्वप्रथम उनसे स्कूल की स्वच्छता हेतु सहयोग के लिए चर्चा करेंगे। जिसमें उन्होंने गाँव के सरपंच विनोद किरार जी से सम्पर्क किया और विद्यालय में हो रहे नुकसान के बारे में अवगत कराने के लिए विद्यालय भ्रमण करवाया। विद्यालय की अव्यवस्था देख कर सरपंच जी ने विद्यालय प्रांगण में पड़े कूड़े करकट को हटाने का प्रबंध किया और स्वच्छता को स्थायी रूप से बने रहने हेतु पक्की नाली निर्माण, विद्यालय की चहारदीवारी, विद्यालय के पास स्थित मुक्ति धाम की चहारदीवारी का निर्माण एवं निरंतर विद्यालय सफाई हेतु एक व्यक्ति की सफाईकर्मी के रूप में नियुक्ति कर दी।

बाल कैबिनेट का सहयोग- अगला प्रयास उन्होंने एस.एम.सी. और बाल कैबिनेट के सदस्यों द्वारा पालकों के घर जा-जा कर, विद्यालय में जरूरी संसाधनों की सूची प्रदान गयी और यह सन्देश दिया गया कि शासकीय स्कूल का विकास समुदाय के सहयोग के बिना नामुमकिन है और उनका इस ओर छोटा सा भी प्रयास विद्यालय के विकास में बहुत महत्त्वपूर्ण होगा। उनके इस तरह के व्यवहार शैली और कठिन मेहनत को देख कर पालकों ने विद्यार्थियों के बैठने हेतु फर्नीचर, बाल कैबिनेट और असेम्बली करने हेतु माइक, मैदान का समतलीकरण, और विद्यालय के बीच से निकल रहे गंदे पानी को आपसी सहयोग से स्थान परिवर्तन कर अलग रास्ते का निर्माण करना जैसे अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य करवाए और विद्यालय परिवेश को सुंदर बनाने में महत्त्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया।

एस.एम.सी सदस्यों द्वारा सहयोग- एस.एम.सी. अध्यक्ष श्री गोविंद किरार (तात्कालिक) द्वारा 1100.00 रूपये का नगद पुरस्कार प्रतिवर्ष कक्षा 8 में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले बच्चे को पिछले 8 वर्षो से निरंतर दिया जा रहा है। जिससे विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा होने लगी और पढ़ाई के प्रति रुचि जागृत होने लगी।

इन प्रयासों के बाद, स्कूल में एक जो जरूरत दिख रही थी वह थी स्कूल में पेड़-पौधे, और हरियाली के माध्यम से प्राकृतिक वातावरण का निर्माण करना। जिसके लिए बाल कैबिनेट के सदस्यों को कार्य सौंपा गया। जिसमें उन्होंने विद्यालय के विद्यार्थियों के जन्मदिन पर विद्यालय प्रांगण में एक पौधा लगाने का निश्चय किया। वर्तमान में यह विद्यालय इस लक्ष्य हेतु प्रगति पर है।

बच्चों की उपस्थिति बढ़ाने हेतु प्रयास -

स्कूल के परिवेश में कार्य करने के पश्चात् अगला कदम स्कूल में विद्यार्थियों की उपस्थिति और नामांकन को बढ़ाना था। जिसके लिए उन्होंने स्टाफ मीटिंग रखी और इस विषय को सामूहिक रूप से चर्चा करके समाधान करने का सोचा। जिसके परिणाम में यह बिंदु निकल कर आया कि विद्यालय में एक मजबूत और स्थायी बाल कैबिनेट की टीम होनी चाहिए। परन्तु



शपथ ग्रहण करते करते बाल केबिनेट के सदस्य।



बाल केबिनेट बैठक कार्यों का बंटवारा।

यह कार्य चुनौती भरा था। क्योकि जब हम सशक्त बाल कैबिनेट की बात करते हैं तब हमें यह महसूस होता है कि विद्यार्थियों कि ऐसी टीम जो आत्मविश्वास और उत्तरदायित्व के साथ लोकतान्त्रिक प्रक्रिया की समझ, स्वयं से कर के सीखेंगे।

उन्होंने प्रत्येक कक्षा में विद्यार्थियों द्वारा ही पद के लिए नियुक्ति को पूर्ण करवाया और बाल कैबिनेट तथा एस.एम.सी. सदस्यों के साथ घर-घर पालकों से संपर्क करना प्रारंभ किया। जिससे विद्यालय में धीरे-धीरे विद्यार्थियों की उपस्थिति बढ़ने लगी। विद्यालय में प्रतिदिन प्रार्थना, योग, पी.टी., पुस्तकालय का संचालन, प्रति शनिवार बालसभा विषय आधारित होने, विद्यालय में नियमित खेल प्रतियोगिताएं होने से उपस्थिति बढ़ने लगी। बाल कैबिनेट के विभिन्न मंत्रियों को अपने-अपने विभाग की जिम्मेदारी सौंपी गई और विद्यालय स्टाफ द्वारा प्रत्येक पद की क्या उपयोगिता है और क्या जिम्मेदारी होती है, इसका बोध कराया गया। जिससे कि विद्यार्थी अपने पद की गंभीरता को समझ सकें, जिसमें खेल मंत्री को खेल का आयोजन, खेल सामग्री का वितरण करना, खेल काल खण्ड के उपरांत जमा करने की जिम्मेदारी, शिक्षा मंत्री को प्रतिदिन सुविचार लेखन करना व उनका वाचन करना, प्रति शनिवार विषय आधारित बाल सभा का संचालन, पुस्तकालय के कालखण्ड में पुस्तकालय संचालन करने की जिम्मेदारी तय की गई। विद्यालय में होशियार विद्यार्थियों को गतिविधि सिखाकर कक्षा शिक्षण व सयुंक्त कक्षाएं, समूह में विद्यार्थियों को बांटकर समूह कार्य करवाना, मिश्रित समूह बनाकर अध्ययन कराया जाने लगा। जो कि बाल कैबिनेट के सदस्यों द्वारा ही निर्णय लिया गया था कि वह कैसे अपने साथियों की मदद कर सकते हैं।



गतिविधि के माध्यम से शिक्षण।

यह बाल कैबिनेट टीम अपनी भूमिका में निम्न रूप से कार्य कर रहे हैं। स्वास्थ्य मंत्री को प्रत्येक मंगलवार आयरन की गोली, समय-समय पर डी वर्मिंग गोली खिलवाने व प्रत्येक तीन माह में सभी विद्यार्थियों का वजन करने का समय-समय पर होने वाले RBSK (राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम) की टीम द्वारा परीक्षण, टीकाकरण, नेत्र परीक्षण में सहयोग प्रदान करना। जल एवं स्वच्छता मंत्री को विद्यालय की साफ-सफाई व व्यक्तिगत स्वच्छता की जांच जिम्मेदारी तय की गई।

संस्कृति मंत्री को प्रतिदिन प्रार्थना, पी.टी. योग तथा विभिन्न महापुरूषों की जयंती मनाने, राष्ट्रीय पर्व मनाने में सहयोग करने की जिम्मेदारी तय की गई। खादयमंत्री को नियमित गुणवत्ता एवं मीनू अनुसार भोजन बनवाने की जिम्मेदारी तय की गई। पर्यावरण मंत्री को वृक्षारोपण, पौधों की देखरेख, विद्यालय परिसर एवं आस-पास के पर्यावरण को स्वच्छ रखने की जिम्मेदारी तय की गई।

सांस्कृतिक कार्यक्रम - राष्ट्रीय त्यौहार, 15 अगस्त, 26 जनवरी आदि विभिन्न उत्सव विद्यालयों में मनाये जाते है। महापुरूषों की जयंती मनाने से बच्चे उत्साहित और महापुरूषों के जीवन चरित्र से अवगत हो रहे हैं। उनमें निरंतर नैतिक गुणों का विकास हो रहा है। विद्यालय के सभी शिक्षक अब गतिविधि आधारित कक्षा शिक्षण कराते रहे हैं जिससे आनदंमयी वातावरण का निर्माण हो रहा है।

खेलकूद प्रतियोगिता - प्रतिदिन खेल कालखण्ड में खेल गतिविधियां आयोजित करना, वार्षिक खेल उत्सव मनाना जिसमें भाग लेने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत करना।

इतना ही नहीं इसके इतर भी विद्यालय में उपस्थिति बढ़ाने हेतु प्रयास किए गए। जिसमें पालकों से एस.एम.सी. सदस्यों, बाल कैबिनेट के विद्यार्थियों के साथ शाला समय से पूर्व एवं बाद में सतत संपर्क प्रारंभ किया व सर्वाधिक उपस्थिति वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया। जिसके परिणाम स्वरूप अब विद्यालय में प्रतिदिन औसत 95 प्रतिशत से अधिक उपस्थिति रहने लगी है।



विद्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन।



विद्यालय में खेल प्रतियोगिता का आयोजन।

बदलाव :

- बाल कैबिनेट एवं समुदाय का निरंतर सहयोग प्राप्त होने से विद्यालय में अब विद्यार्थी उपस्थिति प्रतिदिन 95 प्रतिशत से अधिक रहती है जो पूर्व में 40 प्रतिशत से 50 प्रतिशत थी।
- विद्यालय के 100 प्रतिशत विद्यार्थी अपनी मूलभूत दक्षताओं को प्राप्त कर चुके हैं। जो पूर्व में 40 प्रतिशत से 50 प्रतिशत थी। विद्यालय का वार्षिक परीक्षा परिणाम 100 प्रतिशत रहता है।
- वर्ष 2019-20 में एक शिक्षक राजीव शर्मा व छात्रा कु. राधा बंजारा का चयन राज्य स्तर कहानी उत्सव प्रतियोगिता हेतु हुआ।
- विद्यालय में स्वच्छता हेतु एक स्थायी सफाईकर्मी की नियुक्ति हो चुकी है जो कि विद्यालय का रख रखाव का ख्याल रखते हैं।
- विद्यालय में स्वच्छता सम्बन्धी सभी समस्यायों का निदान हो चुका है। जैसे- शौचालय का निर्माण एवम सफाई, विद्यालय प्रांगण से गुजरने वाली नाली का स्थानांतरण कर स्कूल के बाहर से निकलना, कूड़े को बाहरी जगह में कम्पोस्ट करना, मुक्ति धाम से आने वाले अशुद्ध सामग्री से बचने हेतु चहारदीवारी का निर्माण, विद्यालय के चारों ओर चहारदीवारी का निर्माण आदि।
- विद्यालय से 12 विद्यार्थी एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय में चयन हुए हैं तथा 3 विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय मीन्स कम मेरिट में चयनित होकर विद्यालय को गौरवान्वित किया है। विद्यालय से लगातार तीन वर्षो से जिला स्तर पर कहानी उत्सव प्रतियोगिता में छात्रा व शिक्षक का चयन हो रहा है।
- इसी वर्ष विद्यालय को 100 प्रतिशत बालिकाओं को अगली कक्षा में प्रवेश हेतु जिला प्रशासन द्वारा सम्मानित किया गया है तथा पूर्व वर्षो में भी विद्यालय को निरंतर पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।
- डिजीलैप हमारा घर हमारा विद्यालय अंतर्गत कोविड-19 के दौरान किये गये कार्यों हेतु शिक्षक राजीव शर्मा को राज्य स्तरीय पुरस्कार सत्र 2020 में प्राप्त हुआ।

स्थायित्व :

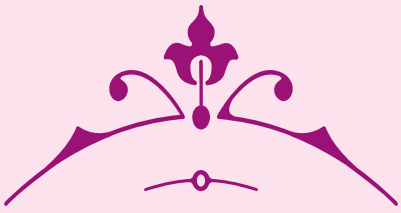
- विद्यार्थियों की उपस्थिति औसत 95 प्रतिशत हुई है तथा सभी विद्यार्थी गणवेश में विद्यालय आते हैं।
- विद्यालय में स्थायी सफाई कर्मी कि नियुक्ति हुई।
- एस.एम.सी. समुदाय का विद्यालय के प्रति विश्वास हुआ और जुड़ाव हुआ।
- विद्यालय से गुजरने वाली नाली का स्थानांतरण (सदैव के लिए)।
- विद्यालय को पर्याप्त संसाधन प्राप्त हो चुके हैं।

आगामी कार्य योजना :

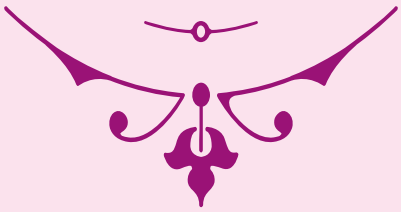
- औसत उपस्थिति 100 प्रतिशत करने का लक्ष्य।
- स्मार्ट क्लास, प्रोजेक्टर व्यवस्था करना।
- विद्यालय की सुंदरता हेतु पार्क व्यवस्थित करना।
- विद्यार्थियों को झूला, फिसल पट्टी की व्यवस्था करना।
- सांस्कृतिक कार्यक्रम हेतु स्टेज बनवाना।
- मध्यान्ह भोजन हेतु सुविधा युक्त कक्ष बनाना।
- मध्यान्ह भोजन हेतु आधुनिक रसोई घर का निर्माण बनवाना।
- विभिन्न परीक्षाओं, राज्य, राष्ट्रीय स्तर पर अधिक से अधिक विद्यार्थियों का चयन करवाना।
- राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर अधिक से अधिक विद्यार्थियों का चयन करवाना।
- गतिविधि आधारित शिक्षण हेतु व्यवस्थित कक्ष बनवाना।

राजीव कुमार शर्मा
(प्र. प्रधानाध्यापक)
मोबाईल : 8085134809
Email : rajivsharma94068@gmail.com

❑ ❑ ❑



विद्यालय में वातावरण बदलाव से आनंददायी शिक्षण



शाला की बदलती तस्वीर

शासकीय प्राथमिक शाला, समरतढाना

यू-डाईस कोड : 23350110403

- विकासखंड : आमला
- जिला : बैतूल
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 3 - विद्यार्थी संकेंद्रित करना

उप डोमेन क्र. 3 - विद्यार्थियों की अधिगम उपलब्धि

एक छोटे से गाँव के छोटे से विद्यालय में 2016 - 17 में कुल 34 बच्चे पढ़ते थे और आज 2021 - 22 में उसी विद्यालय में 54 बच्चे पढ़ रहे हैं, जबकि परिवारों की संख्या कुल 38 है। ऐसे में बच्चों के निरंतर सीखते रहने के सपने, उनके ठहराव और नामांकन का सपना लेकर बच्चों के साथ कई छोटे - छोटे काम किए, जिसकी सफलता को हम अगले पन्नों में पढ़ सकेंगे।

पृष्ठभूमि :

शासकीय प्राथमिक शाला समरतढाना एक छोटी सी बसाहट में स्थित है, जो कि विकासखण्ड मुख्यालय से 15 कि.मी. तथा जिला मुख्यालय से 55 कि.मी. दूर है। यह विद्यालय जम्बाड़ा कोंढरखापा पक्की सड़क से एक कि.मी. उत्तर में कच्चे रास्ते से जुड़ा हुआ है। विद्यालय मूलरूप से प्राकृतिक वातावरण में स्थित है। विद्यालय के चारों ओर हरे-भरे पेड़-पौधे एवं खेत हैं। बसाहट के उत्तर में बेल नदी बहती है। विद्यालय के लिए भूमि दो अलग-अलग दानदाताओं के द्वारा दी गई है। बीच से आम रास्ता होने के कारण परिसर दो भागों में बँटा हुआ है। बसाहट के कुल 38 परिवारों में निवास करने वाले सभी 290 लोग सामान्य वर्ग से आते हैं। इनमें अधिकांश मध्यम एवं निम्न आय वर्ग वाले किसान एवं खेतिहर मजदूर हैं।

बसाहट में इस विद्यालय के अलावा किसी भी प्रकार की कोई शासकीय या अशासकीय संस्था संचालित नहीं है। साप्ताहिक बाजार यहाँ से 5 कि.मी. दूर जम्बाड़ा में लगता है। यहाँ के विद्यार्थियों को माध्यमिक शाला में पढ़ने हेतु 2 कि.मी. दूर सोनतलाई एवं हायर सेकेन्डरी स्कूल में पढ़ने हेतु 5 कि.मी. दूर जम्बाड़ा जाना पड़ता है। यहाँ के 6 से 14 आयु वर्ग के सभी बच्चे विद्यालयों में नामांकित हैं। विद्यालय में एक मुख्य भवन के अलावा एक अतिरिक्त कक्ष, बालक-बालिका शौचालय, रसोईघर एवं सांस्कृतिक मंच उपलब्ध है। विद्यालय में शिक्षण कार्य हेतु केवल दो कक्ष उपलब्ध हैं। तेरह वर्षों तक जनशिक्षक के पद पर कार्य करने के दौरान मिली सीख और अनुभवों को प्रधानपाठक के रूप में अपने विद्यालय में क्रियान्वित करना और विद्यालय की अलग पहचान बनाना, मेरे लिए एक बड़ा अवसर था।

समस्या :

- बेहतर शैक्षिक वातावरण न होने से बच्चों के ठहराव में कमी।

समस्या समाधान की प्रक्रिया :

उपरोक्त चुनौतियों का सामना करते हुए विद्यालय में बहुत से बदलाव हुए, किन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण बदलाव बच्चों के ठहराव और उनके नामांकन में हुआ। अकादमिक वर्ष 2016 - 17 से अकादमिक वर्ष 2021 - 22 में विद्यालय की दर्ज संख्या 34 से 54 हो गई। साथ ही विद्यार्थियों के ठहराव एवं शैक्षणिक स्तर में वृद्धि जैसे उल्लेखनीय परिवर्तन हुए जो कि जटिल कार्य तो थे परन्तु असंभव नहीं थे। आवश्यकता सिर्फ बच्चों के ठहराव हेतु ऐसी रणनीति तैयार करने की थी जिसके माध्यम से बच्चों के शैक्षणिक स्तर में सुधार लाया जा सके और उनके ठहराव को सुनिश्चित किया जा सके।

इस रणनीति को क्रियान्वित करने के लिए विद्यालय में अलग - अलग तरह के कई सारे काम किए गए। विद्यालय के किए गए कामों को क्रमिक रूप में भी देखा जा सकता है -

क्र.	सत्र	विद्यालय में नामांकन	दैनिक औसत उपस्थिति प्रतिशत
1	2016-17	34	84.34
2	2017-18	35	85.05
3	2018-19	38	87.74
4	2019-20	45	90.50

क्र.	सत्र	विद्यालय में नामांकन	दैनिक औसत उपस्थिति प्रतिशत
5	2020-21	53	अब पढ़ाई नहीं रुकेगी - लाकडाउन में मोहल्ला क्लास और हमारा घर हमारा विद्यालय हमें सिखाएगा।
6	2021-22	54	

1. समुदाय में शिक्षकों की छवि को बेहतर करना और पालकों का विश्वास जीतना।
2. विद्यालय के वातावरण को आकर्षक और सुंदर बनाना।
3. शाला परिसर में रनिंग वाटर की व्यवस्था करना।
4. वाटर फिल्टर, बेंच एवं डेस्क एवं बाउंड्रीवाल की व्यवस्था करना, वाटर फिल्टर की व्यवस्था करना।
5. विद्यालय में उपलब्ध रसोईघर का आधुनिकीकरण करना।
6. सांस्कृतिक मंच का निर्माण करना।
7. खेल गतिविधियों और योग को विद्यालय का हिस्सा बनाना।
8. विद्यालय में स्टेशनरी की व्यवस्था करना।
9. गणवेश को आकर्षक बनाना।
10. बच्चों को विद्यालय से जोड़ने हेतु विभिन्न गतिविधियों को करना।
11. विद्यालय में बच्चों के जन्मदिन का आयोजन करना।
12. जीवंत पुस्तकालय की शुरुआत करना।
13. पढ़ने की आदत का विकास करना।
14. शिक्षण को रोचक बनाना।



प्रार्थना सभा आयोजित करते बच्चे।

यह सभी कारक विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति (ठहराव) एवं नामांकन वृद्धि को प्रभावित कर रहे थे। साथ ही बच्चों की अनियमितता और उनके गिरते शैक्षणिक स्तर में सहायक भूमिका निभा रहे थे।

1. **समुदाय में शिक्षकों की छवि को बेहतर करना और पालकों का विश्वास जीतना -** मैंने अपनी सोच को सकारात्मक दिशा प्रदान की एवं अपने 33 वर्षों की सेवा के अनुभव का लाभ उठाकर छोटे-छोटे प्रयास आरम्भ किए। सर्वप्रथम विद्यालय के सहयोगी शिक्षक से मिलकर सामंजस्य स्थापित किया। साथ ही समुदाय से मधुर संबंध बनाए । उनके सामाजिक एवं पारिवारिक कार्यक्रमों में शामिल होकर उनका विश्वास अर्जित किया। समय-समय पर विद्यार्थियों एवं विद्यालय के बारे में चर्चा की। पालकों से मिलकर एवं बैठकों के माध्यम से विद्यार्थियों की प्रगति पर चर्चाएं की। पालकों से उनके मोबाईल नम्बर एकत्र किए । विद्यार्थियों के अनुपस्थित रहने पर उनसे मिलकर या मोबाईल से बात करके कारणों का पता किया गया। जो बच्चे अधिक दिनों तक अनुपस्थित रहते थे, उन्हें लिखित सूचना प्रदान कर विद्यालय में उपस्थित होने हेतु सूचित किया गया। पालकों का व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर भी सूचनाएँ दी गयी।
2. **विद्यालय के वातावरण को आकर्षक और सुंदर बनाना -** विद्यालय भवन एवं परिसर की शालेय परिवार एवं समुदाय के सहयोग से साफ-सफाई की गयी। उपलब्ध राशि एवं संसाधनों से भवनों की मरम्मत एवं रंगरोगन किया गया। दीवारों पर ग्रीन बोर्ड को व्यवस्थित किया गया। रिकार्ड का समुचित प्रबंधन किया गया तथा अनुपयोगी रिकार्ड को नष्ट किया गया। प्रत्येक कक्ष एवं परिसर में कूड़ादान की व्यवस्था की गयी, जिससे विद्यार्थियों में स्वच्छता के प्रति रूझान उत्पन्न

हुआ। बाल केबिनेट की देखरेख में प्रतिदिन साफ-सफाई की व्यवस्था बनायी गयी।

3. **शाला परिसर में रनिंग वाटर की व्यवस्था करना -** विद्यालय परिसर के पास से गयी एक किसान की पाईपलाईन, जिसका उपयोग सिंचाई हेतु होता है, से आधा इंच का एक कनेक्शन किसान द्वारा विद्यालय को प्रदान किया गया। इस कनेक्शन को शौचालय पर दो टंकियाँ रखकर उससे जोड़ा गया, जिससे शौचालय, रसोईघर, वॉशबेसिन एवं पौधों के लिए पानी की उपलब्धता हो गयी। इससे शौचालय का उपयोग करने एवं वॉशबेसिन के माध्यम से विद्यार्थियों के लिए हाथ धुलाई की व्यवस्था सुलभ हो गयी। शौचालय एवं वॉशबेसिन के पास स्वच्छता के स्लोगन लिखवाए गए, जिससे विद्यार्थियों में हाथ धुलाई के प्रति जागरूकता आ सके। विद्यालय में किए गए इन स्वच्छता के प्रयासों हेतु जिला पंचायत द्वारा वर्ष 2018 में विद्यालय को प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किया गया।



वॉशबेसिन का उपयोग करते हुए।

4. **वाटर फिल्टर, बेंच एवं डेस्क एवं बाउंड्रीवाल की व्यवस्था करना -** शालेय परिवार के सहयोग से विद्यालय को वाटर फिल्टर प्राप्त हुआ, जिससे विद्यार्थियों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध होने लगा। स्थानीय विधायक महोदय के सहयोग से विद्यार्थियों को कक्षाओं में बैठाने के लिए बेंच एवं डेस्क की व्यवस्था की गयी। हमारे निवेदन पर स्थानीय जनपद सदस्य महोदय के प्रयासों से बाउंड्रीवाल का निर्माण किया गया। मुख्य द्वार पर संस्था के नाम का एक आकर्षक बोर्ड लगाया गया। शालेय परिवार के कार्यों से प्रभावित होकर इस ग्राम से लगभग 35 कि.मी. दूर स्थित ग्राम वंडली की एक नर्सरी द्वारा विद्यालय को लगभग 65 पौधे (अशोक,पाम आदि) दान स्वरूप प्रदान किए गए। आज ये सभी पौधे विकसित हो चुके हैं, जिससे परिसर हराभरा एवं आकर्षक हो चुका है। पौधों की सिंचाई के लिए अवकाश के दौरान भी कोई न कोई शिक्षक, विद्यार्थी अथवा समुदाय के लोग विद्यालय में उपस्थित होकर पौधों की सिंचाई का कार्य करते रहे।



बेंच एवं डेस्क का उपयोग शिक्षण के अलावा मध्यान्ह भोजन हेतु।

5. **विद्यालय में उपलब्ध रसोईघर का आधुनिकीकरण** किया गया। प्लेटफार्म का निर्माण कर साफ सुथरे एवं धुएँ रहित शुद्ध वातावरण में गैस चूल्हे पर भोजन पकाया जाने लगा। रसोई हेतु सब्जियाँ उपलब्ध कराने के उद्देश्य से परिसर में ही किचन गार्डन का निर्माण किया गया, जिससे विद्यालय को ताज़ा सब्जियाँ मिल सके और बच्चों को भोजन प्राप्त हो।

6. **सांस्कृतिक मंच का निर्माण -** शाला प्रबंधन समिति के अध्यक्ष, उपसरपंच एवं जनसहयोग से सांस्कृतिक मंच का निर्माण किया गया । उसमें ग्रीन बोर्ड भी बनाया गया, जिससे इसका विभिन्न कार्यक्रमों के अलावा शिक्षण कार्य में भी उपयोग होता है।

7. **खेल गतिविधियों और योग को विद्यालय का हिस्सा बनाना -** विद्यार्थियों को विद्यालय की ओर आकर्षित करने एवं उनके स्वास्थ्य को दृष्टिगत रखते हुए खेल संसाधन उपलब्ध करवाए गए, जिसमें मुख्य रूप से वॉलीबॉल, बेडमिंटन, केरम, रस्सी, रिंग, सांप - सीढ़ी, शतरंज, फिसलपट्टी आदि शामिल हैं। विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य हेतु उन्हें समय-समय पर योग भी सिखाया जाता है। उनके स्तर से सूक्ष्म यौगिक क्रियाएँ,

हास्यासन, सिंहासन, ताड़ासन, भ्रामरी, प्राणायाम आदि का अभ्यास करवाया जाता है। इससे उन्हें मनोरंजन के अलावा शारीरिक एवं मानसिक लाभ भी प्राप्त होता है एवं ध्यान एकाग्र होने से सीखने की क्षमता बढ़ती है जिससे उनके शैक्षणिक स्तर में भी वृद्धि होती है।



बेडमिन्टन खेलते विद्यार्थी।



योगाभ्यास करते विद्यार्थी।

8. **विद्यालय में स्टेशनरी की व्यवस्था करना -** विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए स्टेशनरी (कापियॉ, पेन, पेंसिल, रबर, कटर आदि) उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शाला प्रबंधन समिति के सहयोग से ईमानदारी की दुकान का संचालन किया गया, जिसे वर्तमान में शालेय परिवार की ओर से आर्थिक सहयोग प्रदान किया जा रहा है । शुरुआत में कुछ पालकों के मन में संदेह उत्पन्न हुआ, किन्तु बाद में उन्हें इस बात का अहसास हो गया कि यह दुकान उनके बच्चों के लिए बहुत उपयोगी है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों को स्थानीय स्तर पर ही न्यूनतम मूल्य में स्टेशनरी उपलब्ध हो जाती है, जिससे उन्हें अभ्यास और लेखन कार्य करने में सुगमता हो जाती है। इसका संचालन बाल केबिनेट के द्वारा किया जाता है,इस प्रक्रिया से विद्यार्थियों को रूपये पैसे का लेनदेन एवं व्यावहारिक गणित का ज्ञान प्राप्त होता है।

9. **गणवेश को आकर्षक बनाना -** प्राइवेट विद्यालयों की तर्ज पर प्रत्येक विद्यार्थी को पालकों के माध्यम से आकर्षक दो जोड़ी गणवेश, टाई, बेल्ट, परिचय पत्र एवं जूते-मौजे पिछले 4 वर्षों से उपलब्ध करवाए जा रहे हैं जिससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास जाग्रत हुआ। इस हेतु सभी पालकों की बैठक लेकर निर्णय लिया गया तथा पालकों के द्वारा ही राशि जमा कर सामग्री क्रय की जाएगी। कुछ प्राइवेट विद्यालयों के द्वारा गणवेश बदल देने से पुरानी गणवेश दुकानों में बेकार रखी थी जिसे दुकानदार ने विद्यार्थियों को न्यूनतम मूल्य पर उपलब्ध करा दी। जिससे विद्यार्थियों को बहुत ही कम कीमत पर आकर्षक गणवेश प्राप्त हो गयी। इस कारण हर वर्ष गणवेश बदलता रहा।

10. **बच्चों को विद्यालय से जोड़ने हेतु विभिन्न गतिविधियों को करना -** विद्यालय में प्रति सप्ताह शनिवार को बाल सभा का आयोजन किया जाता है। इसमें गीत, चुटकुले , कहानी, अभिनय, नृत्य, गायन आदि की प्रस्तुति विद्यार्थियों द्वारा दी जाती है जिससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास तो जागृत होता ही है, स्वयं में छिपी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का अवसर भी



चित्र बाल मेले का।



विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति।

प्राप्त होता है। इतना ही नहीं यहाँ रामचरित मानस का पाठ भी किया जाता है जिससे विद्यार्थियों में पढ़ने की दक्षता उत्पन्न होती है एवं नैतिक गुणों का विकास होता है। प्रतिवर्ष, राष्ट्रीय त्योहारों पर सांकृतिक कार्यक्रमों का आयोजन कर देश भक्ति की भावना का विकास किया जाता है। इसके अतिरिक्त प्रतिवर्ष 14 नवम्बर को बालमेले का आयोजन भी किया जाता है। जिससे विद्यार्थियों को सामाजिकता, व्यावहारिक गणित एवं लेनदेन का अनुभव प्राप्त होता है।

11. **विद्यालय में बच्चों के जन्मदिन का आयोजन -** विद्यार्थियों को स्वयं का महत्व प्रदर्शित करने हेतु प्रार्थना सभा में उनका जन्मदिन मनाया जाता है। विद्यालय में नियमित उपस्थिति को बढ़ावा देने हेतु माह के अन्तिम दिवस 100 प्रतिशत उपस्थिति वाले विद्यार्थियों को पेन, चाकलेट आदि से सम्मानित किया जाता है। तथा सत्रांत में सर्वाधिक उपस्थिति वाले प्रथम तीन विद्यार्थियों को आकर्षक पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता है, जिससे विद्यार्थी प्रतिदिन विद्यालय आने के लिए प्रेरित होते हैं।

12. **जीवंत पुस्तकालय की शुरुआत करना -** विद्यालय में पुस्तकालय का संचालन भी किया जाता है। इसमें पूर्व से उपलब्ध पुस्तकों के अलावा मेरे द्वारा भी कुछ क्रय की गयी, कुछ अखबारों के साथ आयी हुई तथा कुछ मेरे पास पूर्व से उपलब्ध ज्ञानवर्धक, कहानी ,चुटकुले, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता से संबधित 121 पुस्तकें पुस्तकालय को भेंट दी गयी। इसका संचालन पूर्णतः बालकेबिनेट के द्वारा किया जाता है। विद्यार्थी प्रति शनिवार अपनी पसंद की पुस्तक का चयन कर सप्ताह भर पढ़ने के लिए अपने पास रखते हैं एवं अगले शनिवार बदलकर दूसरी पुस्तक लेते रहते हैं। इसके अलावा पुस्तकें रस्सियों पर खुली रखी रहती हैं। प्रतिदिन भोजन अवकाश में कोई भी विद्यार्थी अपनी पसंद की पुस्तक निकालकर पढ़ने के बाद वापस रख देते हैं। प्रतिदिन प्रार्थना सभा में दो-दो विद्यार्थियों से उनके द्वारा पढ़ी गई पुस्तकों से ज्ञानवर्धक जानकारियों, कहानियों आदि का प्रस्तुतिकरण करवाया जाता है।

13. **पढ़ने की आदत का विकास करना -** विद्यार्थियों में पढ़ने की आदत पैदा करने के लिए मेरे स्वयं के घर में आने वाला अखबार अगले दिन विद्यालय में उपलब्ध करवाता हूँ। साथ ही इसकी मुख्य बातें उन्हें पढ़कर सुनाता हूँ, जिससे विद्यार्थियों में पढ़ने के प्रति आकर्षण एवं उत्साह उत्पन्न होता है एवं वे सम-सामयिक जानकारियों एवं घटनाओं से विदित होते हैं। साथ ही पाठयपुस्तकों एवं अखबार के लेखन में अन्तर का ज्ञान होता हैं। कक्षा तीसरी से पाँचवीं तक के अधिकांश विद्यार्थी धाराप्रवाह पढ़कर समझ लेते हैं, किन्तु पहली एवं दूसरी के विद्यार्थियों को चित्रों के माध्यम से उस पर अपने विचार प्रकट करने हेतु प्रेरित किया जाता है। जब चित्र को देखकर कोई विद्यार्थी कोई शब्द या वाक्य बोलता है, तब उसे उस शब्द में आए वर्णों का ज्ञान करवाया जाता है एवं उन वर्णों से बनने वाले शब्दों को लिखने हेतु कहा जाता है। जिससे उनमें खेल-खेल में पढ़ने और लिखने के प्रति रुचि जागृत होती है एवं शब्द भंडार बढ़ता है।



अखबार पढ़ते विद्यार्थी।

14. **शिक्षण को रोचक बनाना -** विद्यालय में प्रतिदिन कक्षा शिक्षकों द्वारा शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से विषयगत दक्षताओं का विकास किया जाता है । इन गतिविधियों में स्थानीय सामग्रियों का अधिकतम उपयोग किया जाता है, जैसे तीलियों के लिए बांस की पतली लकड़ियाँ, इमली के बीज, कंकड़, पेड़-पौधों की पत्तियाँ आदि । साथ ही शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से भी शिक्षण कार्य किया जाता है। गणित को रोचक बनाने हेतु तीली बण्डल जैसी सरल वस्तुओं का उपयोग किया जाता है। यह काम प्रत्येक विद्यार्थी शिक्षक के दिशा-निर्देश में करके सीखता है। फिर वे खुद से इसका इस्तेमाल करना शुरू कर देते हैं।

बदलाव :

इस प्रकार छोटे-छोटे प्रयासों एवं नवाचारों के साथ ही हम दोनों शिक्षक विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु हमेशा तत्पर रहते हैं। जिसका परिणाम है :

- विद्यालय में कक्षा दूसरी के अधिकांश विद्यार्थी दो अंकीय संख्याओं का जोड़-घटाना कर लेते हैं।
- गुणा एवं भाग की संक्रियाएँ कक्षा तीसरी से पाँचवीं के अधिकांश विद्यार्थी कर लेते हैं। साथ ही कक्षा दूसरी के भी कुछ विद्यार्थी इन संक्रियाओं को कर लेते हैं।
- कक्षा दूसरी से पाँचवीं तक अधिकांश विद्यार्थियों को 15 से 25 तक तथा कुछ विद्यार्थियों को 40 तक पहाड़ों का ज्ञान हैं। यह सभी विद्यार्थी स्वयं पहाड़ों का निर्माण भी करना जानते हैं। प्रारम्भ में उन्हें बार-बार जोड़कर पहाड़ों का निर्माण करना सिखाते हैं एवं जब इनकी समझ विकसित हो जाती है तो एक अंकीय संख्या के पहाड़ों के माध्यम से दो अंकीय संख्या के पहाड़े बनाना सिखाते हैं, जो बहुत ही रोचक होने के कारण कठिन समझे जाने वाले गणित को भी मजेदार बना देते हैं। इसका प्रमाण हमारे विद्यालय के वार्षिक परीक्षाफल को देखकर भी समझा जा सकता है। जो निम्नलिखित है-



कक्षा दूसरी का विद्यार्थी भाग की संक्रिया कर उत्तर की जाँच करता।

क्र.	सत्र	दर्ज संख्या	हिन्दी					गणित				
			ए	बी	सी	डी	ई	ए	बी	सी	डी	ई
1	2016-17	34	19	13	2	-	-	20	12	2	-	-
2	2017-18	35	19	2	8	6	-	14	7	6	8	-
3	2018-19	38	35	3	-	-	-	36	2	-	-	-
4	2019-20	45	42	2	1	-	-	37	8	-	-	-
5	2020-21	53	32	15	6	-	-	30	15	8	-	-

- इन किए गए समेकित प्रयासों से विद्यार्थियों के लिए विद्यालय परिसर में ही शुद्ध पेयजल, ताजा भोजन, स्वच्छ शौचालय, खेल सामग्री, शैक्षणिक सामग्री, हरा भरा परिसर, बैठक व्यवस्था, स्टेशनरी, गणवेश, भयमुक्त वातावरण आदि उपलब्ध होने से आकर्षक वातावरण पैदा हुआ, जिससे विद्यार्थियों का झुकाव विद्यालय की ओर होता चला गया तथा विद्यालय में विद्यार्थियों के ठहराव एवं नामांकन में विशेष वृद्धि हुई।



कोविड के दौरान समुदाय द्वारा शाला का रखरखाव।

- सभी विद्यार्थी नियमित रूप से समय पर विद्यालय में उपस्थित होते हैं। पिछले पाँच वर्षों में नामांकन 34 से 54 हो गया।
- इन 54 विद्यार्थियों में से 40 विद्यार्थी अन्य ग्रामों से विद्यालय में पढ़ने आते हैं। अधिकतर विद्यार्थी एक से चार किलोमीटर की दूरी से पैदल चलकर या अपने किसी साधन से विद्यालय आते हैं।
- कुछ विद्यार्थी ऐसे भी हैं, जिनका गाँव 20 से 30 कि.मी. दूर होने के कारण बसाहट में ही अपने मामा, मौसी या अन्य किसी रिश्तेदार के घर रहकर पढ़ने आते हैं।

- परिणाम स्वरूप राज्य शिक्षा केन्द्र के द्वारा राज्य स्तरीय 'वॉल ऑफ फेम' के तहत विद्यालय को लगातार दो सत्रों (2018-19 एवं 2019-20) में 90 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों को गणित एवं हिन्दी में मूलभूत दक्षताओं को पूर्ण करने के कारण प्रशस्ति पत्र (स्वर्ण पदक चैंपियन) प्रदान किया गया।



मोहल्ला क्लास में अध्ययन करते विद्यार्थी।

उपरोक्त समस्त गतिविधियाँ एवं क्रियाकलाप लाकडाउन के पूर्व व्यवस्थित रूप से संचालित हो रहे थे, किन्तु मार्च 2020 में कोविड 19 वैश्विक महामारी के कारण पूरे विश्व के साथ ही इस विद्यालय की भी सामान्य गतिविधियाँ एवं शैक्षणिक क्रियाकलाप रुक गए, जिससे हम आज भी जूझ रहे हैं। लॉकडाउन के दौरान एवं उसके बाद भी विद्यालय नहीं खुलने के कारण ऑनलाइन कक्षाओं एवं मोहल्ला क्लासेस के माध्यम से विद्यार्थियों के स्तर को बनाए रखने का प्रयास किया जा रहा है। चार से छह विद्यार्थियों के ग्रुप में कोविड प्रोटोकॉल का पालन करते हुए मोहल्ला क्लासेस का संचालन किया गया। प्रत्येक मोहल्ला क्लास को एक-एक रोलर बोर्ड दिया गया जिस पर विद्यार्थी कार्य कर सकें। समय- समय पर शिक्षकों द्वारा इन कक्षाओं में उपस्थित होकर विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान किया गया। शिक्षकों के द्वारा विद्यालय को दो एफ एम रेडियो भेंट किए गए, जिससे विद्यालय को आकाशवाणी के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने में सहयोग मिला। शिक्षक प्रतिदिन मोहल्ला क्लास एवं आवश्यकतानुसार घर-घर जाकर पाँच-पाँच विद्यार्थियों से मिलकर उनकी समस्याओं का समाधान करते रहे।

स्थायित्व :

- बच्चों में आज भी पढ़ने का रुझान है।
- बच्चे नियमित रूप से स्वास्थ्य संबंधी गतिविधियों जैसे खेल - कूद व योग को नियमित करते हैं।

आगामी योजना :

- शासन के निर्देशानुसार जैसे ही विद्यालय प्रारम्भ होंगें, हम पुनः पूरी क्षमता के साथ उनकी खोई हुई दक्षताओं को वापस प्राप्त करने का प्रयास करेंगे।
- 'ईमानदारी की दुकान' जो कि शालेय परिवार के सहयोग से संचालित हैं, विद्यार्थियों और पालकों को सौंपकर पूर्णतः उन्हीं के द्वारा संचालित करवायी जाएगी।
- नामांकन में जो गति कुछ कम हो गयी हैं उसमें गति लाने का प्रयास किया जाएगा।
- भेंट की हुई टीवी की मदद से स्मार्ट क्लास का संचालन शुरू करना।
- स्मार्ट क्लास हेतु डिजिटल सामग्री की व्यवस्था करना और उसके लिए साथी शिक्षक को प्रशिक्षित करना।

गणेश बारस्कर
(प्र. प्रधानाध्यपक)
मोबाईल : 9926414632
Email : gbarasker68@gmail.com

❑ ❑ ❑

विद्यालय का बदलता हुआ परिवेश

एकीकृत शासकीय उमावि, तानपुर प्राथमिक (खंड)

यू-डाईस कोड : 23060112003

- विकासखंड : शिवपुरी
- जिला : शिवपुरी
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 4 - अधिगम के लिए समाज व विद्यालय का सहसंबंध

उप डोमेन क्र. 2 - विद्यालय में अभिभावकों की सहभागिता

इस कहानी में विद्यालय का भौतिक परिवेश बदलने एवं उपस्थिति वृद्धि हेतु प्रयास किया गया। 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005' और 'शिक्षा का अधिकार -2009' में विद्यालय और विद्यार्थी के विकास हेतु समुदाय की जिम्मेदारी सुनिश्चित की गई है। यह कहानी इन्ही पंक्तियों को चरितार्थ कर रही हैं जहाँ पर समुदाय के सहयोग से विद्यालय को कायाकल्प किया गया।

पृष्ठभूमि :

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तानपुर के प्राथमिक विभाग में 142 विद्यार्थी सत्र 2021-22 में अध्ययनरत हैं। इस सत्र के सर्वे में कक्षा पहली में प्रवेश हेतु 25 विद्यार्थियों का लक्ष्य दिया गया था। लेकिन आसपास के गांव के विद्यार्थियों के प्रवेश लेने के कारण विद्यार्थी संख्या सर्वे के लक्ष्य से 15 अधिक है। विद्यालय के मुख्य गेट में प्रवेश करते ही अनुभव होता है कि आप किसी उपवन में प्रवेश करने जा रहे हैं। विद्यालय में विद्यार्थी के अध्ययन हेतु प्राथमिक खंड के लिए आठ कक्ष आवंटित हैं। सभी कक्ष फर्नीचर, विद्युत आदि सुविधाओं से सुसज्जित हैं। विद्यालय में बालक और बालिकाओं के लिए पृथक से शौचालय उच्च सुविधाओं से युक्त है। यह विद्यालय पिपरसमा से पोहरी की ओर जाने वाले मार्ग पर स्थित है।

एकीकृत शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तानपुर शिवपुरी जिला मुख्यालय से 10 किलोमीटर की दूरी पर शिवपुरी - टोंगरा मार्ग के बाई ओर जाने वाले पिपरसमा - पोहरी मार्ग पर स्थित है। इस मार्ग पर हरियाली से आच्छादित विभिन्न प्रजातियों के वृक्ष व नृत्य करते हुए मोर मन को आकर्षित करते हैं। विद्यालय में पढ़ने वाले 100 प्रतिशत विद्यार्थी कृषक समुदाय से हैं। गांव में अन्य पिछड़ा वर्ग तथा अनुसूचित जाति के परिवार हैं। जिनमें अभूतपूर्व सद्भाव और एकता की भावना दिखाई देती है। यहां के निवासियों की जीविकोपार्जन का एक मात्र साधन कृषि है। यही कारण है कि यहॉ के निवासियों की आर्थिक स्थिति सामान्य है। गांव में मंदिरों की अधिकता है। अतः निवासियों में आध्यात्मिकता की भावना प्रबल है।



हरियाली से आच्छादित विद्यालय परिसर।

समस्या :

- शिक्षकों द्वारा परंपरागत विधियों से पढ़ाने के कारण विद्यार्थियों में रुचि का अभाव था जिसके कारण विद्यालय में दर्ज विद्यार्थियों में से लगभग 50 प्रतिशत विद्यार्थी ही पढ़ने आते थे।

समस्या समाधान की प्रक्रिया :

प्रधानाध्यापक जी के द्वारा 2 सप्ताह तक गहन निरीक्षण करने के पश्चात यह बिंदु उजागर हुआ कि विद्यालय की दशा और दिशा तय करने में 2 तत्व महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है, पहला- छात्र, और दूसरा- अभिभावक/समुदाय। जिसके लिए उन्होंने यह महसूस किया कि विद्यार्थी उपस्थिति विद्यालय में बढ़ानी है तो सर्वप्रथम शिक्षकों, पालकों व विद्यार्थियों से सम्पर्क करने एवम उनसे मीटिंग करने की जरूरत है। अतः उन्होंने बाल केबिनेट की मीटिंग आयोजित की। जिसमें उन्होंने सर्वप्रथम विद्यालय के छात्रों को विद्यालय से जुड़ी समस्या व विद्यालय में आयोजित होने वाली गतिविधियों पर जानकारी प्रदान की। परन्तु यह कार्य इतना आसान नहीं था। उसके लिए अभिभावक और समुदाय का एकजुट होना अतिआवश्यक था।

प्रधानाध्यापक एवम शिक्षकों द्वारा पालकों से संपर्क -

प्रधानाध्यापक और स्कूल शिक्षकों द्वारा एक और रणनीति बनायी गई। जिसमें उन्होंने पालक सम्पर्क रजिस्टर के माध्यम से शिक्षकों एवम शाला प्रबंधन समिति सदस्यों तथा बाल कैबिनेट पदाधिकारियों को क्षेत्रवार बांटकर उन पालकों से सम्पर्क

करने के लिए भेजा जिनसे पहले मुलाकात नहीं हुई थी और जो कि पिछली मीटिंग में मौजूद नहीं थे। जिसके परिणाम बहुत ही सुखद हुए। अभिभावक और समुदाय के साथ कार्य करना काफी चुनौतीपूर्ण रहा क्योंकि सभी सदस्यों के साथ कार्य करना और उन्हें स्कूल विकास के उद्देश्य के प्रति संतुष्ट करना काफी कठिन था। लेकिन ग्राम पंचायत के रोजगार सहायक से प्राप्त सभी ग्रामीणों की जानकारी सूची इस कार्य में बहुत उपयोगी सिद्ध हुई। इतना ही नहीं, विद्यार्थियों को विद्यालय की ओर आकर्षित करने के लिए एक नवाचार के द्वारा शिक्षकों ने यह नियम बनाया कि प्रत्येक शिक्षक विद्यालय आने से पहले अपनी बाइक से गांव में एक चक्कर अवश्य लगाएगा। इस अवधि में वह ग्रामीणों से मिलकर आएगा तथा वह विद्यालय में होने वाले नवीनतम सुधारों तथा उपलब्धियों से पालकों को अवगत कराएगा। जिसका परिणाम यह हुआ कि विद्यालय के भवन और अन्य सुधार हेतु स्वयं से उन्होंने चंदा देना शुरू कर दिया जिससे कि विद्यालय भवन की मरम्मत हो सकी।



पालकों से सम्पर्क करते हुए शिक्षक।

गाँव के सरपंच द्वारा दिया गया सहयोग -

अगली चुनौती विद्यालय के सामने की सड़क को ठीक करने का कार्य था क्योंकि बारिश के वक्त सड़कों में अत्यधिक गड्ढे होने एवम उनमें पानी भरने के वजह से छात्रों को विद्यालय आने में बहुत कठिनाई होती थी। बहुत कम छात्र ही बारिश के मौसम में विद्यालय पहुँच पाते थे। अतः प्रध्यानापक जी द्वारा ग्राम पंचायत तानपुर के जागरूक सरपंच से मिलकर उन मार्गों से होने वाली कठिनाई के बारे में अवगत कराया गया और मरम्मत कराने का प्रस्ताव दिया गया। जिसे सरपंच महोदय द्वारा स्वीकार किया गया और निश्चित समय सीमा में पक्की सड़क (खरंजे) बनवा दी गयी।

टीएलएम द्वारा शिक्षण (कबाड़ से जुगाड़) -

प्रधानाध्यापक जी के द्वारा शुरू किया गया अगला नवाचार विद्यालय में आने वाले विद्यार्थियों को बाल केंद्रित विधि से पढ़ाते हुए रेडियो तथा मोबाइल तकनीकों का प्रयोग शुरू करना था। जिसका उद्देश्य परम्परागत शिक्षण पद्धति में बदलाव करते हुए तकनीकी के जरिये शिक्षण पद्धति को शुरू करना था, जिसमें कुछ ऐसे खेल भी जोड़े गये जो विद्यार्थियों के सीखने में सहायक हों। इसके अगले चरण में स्कूल स्टाफ ने विद्यार्थियों के सहयोग से ऐसी बेकार सामग्री का टी एल एम बनवाने में कार्य किया गया जो कचरे की श्रेणी में आती थी। इस प्रकार कबाड़ से जुगाड़ कार्यक्रम के द्वारा सस्ते और प्रभावी टी एल एम विद्यार्थियों द्वारा शिक्षकों के मार्गदर्शन में बनाये गये, जिससे विद्यार्थियों को कक्षा शिक्षण में रुचि उत्पन्न हुई।



टीएलएम द्वारा शिक्षण ग्रहण करती हुई बालिकाएं।

इसके अलावा विद्यालय स्टाफ द्वारा बाल सभा में विद्यार्थियों को पहले से ही कुछ विषयों पर कुछ गतिविधि तैयार करने में मदद की गई ताकि विद्यार्थी इस प्रभावी तरीके से हर शनिवार को होने वाली बाल सभा में प्रस्तुत कर सकें और समुदाय से

आने वाले सदस्य उनके व्यक्तित्व में हो रहे सकारात्मक बदलाव को देख सकें (इस बालसभा में प्रत्येक शनिवार को गांव के भूतपूर्व शिक्षकों तथा ग्रामीणों को भी आमंत्रित किया जाता था)।

यूनीसेफ द्वारा हैण्डवाश यूनिट की मदद -

विद्यार्थियों के न आने का एक और प्रमुख कारण था उनका खराब स्वास्थ्य। इस समस्या से छुटकारा पाने के लिए विद्यालय में हाथ धुलाई कार्यक्रम हेतु एक हैंडवाशिंग यूनिट का प्रस्ताव माननीय डीपीसी महोदय के पास भेजा गया। इस प्रस्ताव को मानते हुए विद्यालय में यूनिसेफ के सहयोग से एक स्थाई और मजबूत हैंड वाशिंग यूनिट का निर्माण कराया गया। जिसका परिणाम उन गरीब तबके से आ रहे छात्रों या विद्यार्थियों के स्वास्थ्य में सुधार के रूप में देखा गया।

इन सब प्रयासों के बावजूद विद्यालय भवन में पूर्ण रूप से सुधार नहीं हुआ था जिसके लिए तत्कालीन डीपीसी महोदय के समक्ष प्रस्ताव दिया गया, जिसमें उन्हें विद्यालय के कक्षों की मरम्मत हेतु बजट आबंटित किया गया ।इस कार्य में तानपुर गांव के ग्रामीणों ने पुनः अपने स्तर पर निर्माण सामग्री प्रदान की तथा जरूरत पड़ने पर शारीरिक श्रम भी प्रदान किया।



हाथ धोते हुए बच्चें।

बदलाव :

- विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति का प्रतिशत 50 प्रतिशत से 90 प्रतिशत तक हो गया। जो विद्यार्थी अपने घरों से रास्ते कच्चे होने के कारण स्कूल नहीं आ पाते थे वे भी गांव में पक्के रास्ते बनने से स्कूल आने लगे। विद्यालय में नियमित हाथ धुलाई, पोषक-आहार तथा सांची दूध मिलने के कारण विद्यार्थियों के स्वास्थ्य में सुधार हुआ जो उनकी उपस्थिति प्रतिशत में वृद्धि का सुखद परिणाम है।
- विद्यालय में खेल आधारित शिक्षण पद्धतियों के अपनाने से न केवल विद्यार्थियों की संख्या बढ़ी बल्कि पालकों में भी विद्यालय के शिक्षकों के प्रति विश्वास की भावना जागृत हुई।
- अनियमित रूप से आने वाले छात्र-छात्राओं में शत-प्रतिशत शाला में आने का परिणाम यह हुआ कि आसपास के गांवों से भी बच्चे शाला में आने लगें।
- विद्यालय में स्वच्छता, खेल व सांस्कृतिक गतिविधियां बाल केबिनेट तथा शाला प्रबंधन समिति के सहयोग से संचालित होने लगी।

स्थायित्व :

- विद्यालय में सर्व सुविधा युक्त कक्ष स्थाई हैंडवाशिंग यूनिट, सुंदर बगीचा, बालक बालिकाओं हेतु पृथक शौचालय, भोजन हेतु आकर्षक भोजनालय आदि सुविधाएं लंबे समय तक विद्यार्थियों की 100 प्रतिशत उपस्थिति के लिए प्रेरित करती रहेंगी।
- विद्यालय की शिक्षण पद्धति में बाल केंद्रित तकनीकें डिजिटल सहायक सामग्री तथा विद्यालय में बाला आधारित निर्माण कार्य लंबे समय तक विद्यार्थियों को शत-प्रतिशत उपस्थिति के लिए प्रेरित करेगा।

आगामी योजना :

- विद्यालय में 100 प्रतिशत विद्यार्थियों की उपस्थिति के विशेष प्रयास किए जाएं।
- विद्यालय में अधिकतम डिजिटल माध्यम से पढ़ाई का प्रयास जारी रखा जाए।
- शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे नवीनतम विचारों से विद्यार्थी और शिक्षक समय-समय पर अवगत होते रहें।
- छात्र-छात्राओं को स्वच्छता, हाथ धुलाई, खेलों व सांस्कृतिक कार्यक्रमों हेतु नवीनतम सुधारों से परिचित कराना
- विद्यालय को आदर्श विद्यालय के रूप में विकसित करना
- पुस्तकालय का विकास और बच्चों में पढ़ने की आदत का विकास करना ।

राकेश कुमार भटनागर
(प्र. प्रधानाध्यापक)
मोबाईल : 9993699479

❑ ❑ ❑

सबसे सार्थक बदलाव

शासकीय प्राथमिक विद्यालय, भोपाखेड़ी

यू-डाईस कोड : 23220412204

- विकासखंड : मो.बड़ोदिया
- जिला : शाजापुर
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 1 – विद्यालय नेतृत्व का अभ्यास एवं दृष्टिकोण

उप डोमेन क्र. 5 – दलीय भावना एवं विद्यालय में सामंजस्य

यह कहानी शाजापुर जिले के एक ऐसे स्कूल की हैं, जहां पर बच्चों की उपस्थिति कम थी। बच्चों का स्कूल के प्रति आकर्षण एवं गुणवत्तायुक्त शिक्षा में कमी थी। ऐसी स्थिति में इस स्कूल के शिक्षक ने विभिन्न नवाचार करके सर्वप्रथम स्कूल को प्राइवेट स्कूल के समान बनाने में विभिन्न कार्य किये जिससे बच्चों का स्कूल के प्रति आकर्षण बढ़ा एवं उपस्थिति के साथ ही साथ शिक्षा में गुणवत्ता भी बढ़ी है।

पृष्ठभूमि :

शासकीय प्राथमिक विद्यालय भोपाखेड़ी में प्री-प्रायमरी कक्षा संचालन करके विद्यालय में छात्र-छात्राओं की दर्ज संख्या में नियमित वृद्धि करने के लिए सभी शिक्षकों ने वहां निवासरत समुदाय का निम्न प्रकार से अध्ययन किया।

भोपाखेड़ी विद्यालय में अधिकांश अनुसूचित जाति, जनजाति एवं अल्पसंख्यक समुदाय निवास करता है, जिनका व्यवसाय खुली मजदूरी है। सभी की वार्षिक आय लगभग एक लाख से कम है। आसपास 5 विद्यालय, 1 शासकीय अस्पताल स्थित है। सभी धर्मों के लोग मिलजुल कर रहते हैं।

समस्या :

2001 में प्रारंभ होने वाले शासकीय प्राथमिक विद्यालय भोपाखेड़ी जिसमें 23 विद्यार्थी अध्ययनरत थे, के सामने कई प्रकार की समस्याएं थीं।

जैसे -

- पालकों का निजी विद्यालय के प्रति आकर्षण
- कम उम्र में ही निजी विद्यालयों में नामांकन
- आवश्यक उत्साह एवं आनंददायी वातावरण का अभाव
- सतत् शासकीय विद्यालयों में गिरता नामांकन
- बच्चों की अनियमित उपस्थिति
- बच्चों की विद्यालय में अरुचि
- बच्चों का विद्यालय से भय
- बच्चों के अनुरूप वातावरण का विद्यालय में अभाव
- जनसमुदाय की विद्यालय से दूरी
- बालक/बालिकाओं के शौचालय की समस्या

समस्या समाधान की प्रक्रिया :

प्री-प्रायमरी कक्षा को आधार बनाने का लक्ष्य सभी शिक्षकों ने बनाया। साथ ही यह सुनिश्चित किया कि इस आधार पर हम अपने विद्यालय की छात्र संख्या को निरंतर बढ़ाएंगे। जहां एक ओर शासकीय विद्यालयों में पहली से पांचवीं तक विद्यार्थियों का नामांकन निरंतर कम होता जा रहा था, वहीं दूसरी ओर प्री-प्रायमरी कक्षा के लिए मन बनाना अपने आप में एक अद्वितीय कार्य था। किंतु शासकीय प्राथमिक विद्यालय भोपाखेड़ी के शिक्षकों का ऐसा मानना है कि जहां चाह वहां राह। इसी को ध्येय वाक्य बनाते हुए सभी शिक्षकों ने अपने अथक परिश्रम से इस कार्य को पूर्ण करने का निर्णय लिया।

कक्षा संचालन :

प्री-प्रायमरी कक्षा संचालन की जिम्मेदारी श्री सत्यनारायण पाटीदार को दी गई। उन्होंने बच्चों के आंतरिक भय को पूरी तरह समाप्त किया। उनके मन में उत्साह एवं विश्वास का बीजारोपण किया। साथ ही अभिभावकों को भी विश्वास में लेने के लिए समय-समय पर पालक सम्मेलन या मातृ सम्मेलन आयोजित करवाकर प्री-प्रायमरी के भैया-बहिनों की उपस्थिति 50 से 70 प्रतिशत तक प्राप्त की।



प्री-प्रायमरी में आनंददायी वातावरण के साथ शिक्षण।

बदलाव :

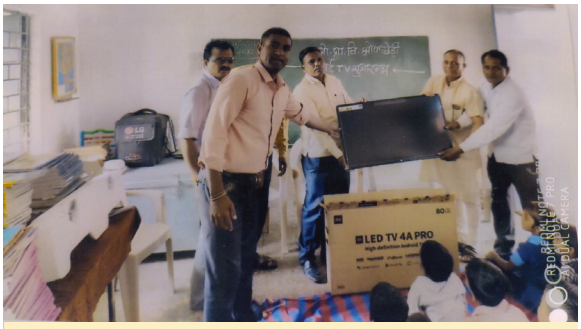
वर्ष 2001 के 23 विद्यार्थियों वाले भोपाखेड़ी विद्यालय में वर्ष 2019 में कुल 101 बच्चे अध्ययनरत हैं। इस बदलाव का मुख्य कारण इस प्रकार है -

- प्री-प्रायमरी कक्षा का संचालन
- प्री-प्रायमरी कक्षा में अभिभावकों की रुचि
- उत्साह युक्त एवं आनंददायी वातावरण के कारण बच्चों का कक्षा से लगाव
- निजी विद्यालय की तर्ज पर प्री-प्रायमरी कक्षा में मिलने वाली समस्त शैक्षिक एवं खेल सामग्री की उपलब्धता
- शिक्षकों का विद्यालय के प्रति समर्पण का भाव
- निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समान आकर्षक गणवेश, बेल्ट, टाई, परिचय-पत्र, जूते एवं मोजे की व्यवस्था करना।
- बच्चों के लिए रुचिकर खेल सामग्री की व्यवस्था करना।
- बच्चों के लिए पंखे, फर्नीचर, पेयजल, शौचालय आदि की व्यवस्था करना।
- बच्चों के शैक्षणिक विकास के लिए स्मार्ट टी.व्ही. की व्यवस्था करना।
- विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से पालकों को भी विद्यालय से जोड़ने का प्रयास।

छात्रों के नामांकन में वृद्धि :

प्री-प्रायमरी कक्षा संचालन के कारण संचालित गतिविधियों के कारण, शिक्षकों की नियमित उपस्थिति के कारण, उपलब्ध संसाधनों के सद्उपयोग के कारण, समाज के जुड़ाव के कारण पिछले पांच वर्षों में शासकीय प्राथमिक विद्यालय भोपाखेड़ी में छात्रों के नामांकन में सतत् वृद्धि हो रही है। प्री-प्रायमरी में नियमित आने वाले बच्चों को बालसभा में सम्मानित करके उनके अभिभावकों को सामूहिक कार्यक्रमों में मंच पर सम्मानित करके, साथ ही अनियमित प्री-प्रायमरी के छात्रों के पालकों को नियमित सूचना कर विद्यालय की विशेषता समझाते हुए, भावनात्मक निवेदन करके इनकी उपस्थिति को नियमित करने का प्रयास विद्यालय परिवार की ओर से किया जाता है।

रणनीति :



प्री-प्रायमरी कक्षा के लिए स्मार्ट टी.वी.।

हमारे विद्यालय में छात्र संख्या कम हो यह हमें सामूहिक रूप से स्वीकार नहीं है। जिस प्रकार निजी विद्यालयों में प्रतिवर्ष छात्र संख्या में वृद्धि होती है। क्या हमारे विद्यालय में इस प्रकार छात्र-छात्राओं के नामांकन में वृद्धि नहीं हो सकती ? इसी प्रश्न को लेकर शासकीय प्राथमिक विद्यालय भोपाखेड़ी के शिक्षक परिवार में प्री-प्रायमरी कक्षा संचालन की योजना बनाई। साथ ही उपयुक्त रणनीति बनाकर उसका संचालन किया। जिसमें भोपाखेड़ी विद्यालय परिवार, समुदाय एवं विद्यार्थियों ने मिलकर इस सार्थक बदलाव को कर दिखाया है। विद्यालय की शुरुआत पवित्र प्रार्थना, देश भक्ति के गीत, राष्ट्रगीत एवं राष्ट्रगान से होती है। ठीक प्रातः 11 बजे सभी शिक्षक अपनी-अपनी कक्षाओं में कालखण्ड लेना प्रारंभ कर देते हैं। अंत में खेलकूद कालखण्ड में आनंददायी वातावरण के साथ बच्चों की छुट्टी की जाती है। जिससे कि विद्यार्थी दूसरे दिन पुनः विद्यालय में आने के लिए उत्सुक रहें। अधिकतर कार्य विद्यालय में ही पूर्ण करवाया जाता है। जिससे विद्यार्थी को अधिक गृह कार्य का बोझ ढोना नहीं पड़ता है। समय-समय पर विद्यार्थियों की गतिविधियों की जानकारी मातृ सम्मेलन एवं पूर्व छात्र सम्मेलन में देकर विद्यार्थियों की गतिविधियों को समाज के बीच रखने का प्रयास किया जाता है।

स्थिरता :



2019 में नवोदय में चयनीत दो छात्रों का सम्मान।

प्री-प्रायमरी कक्षा में चॉकलेट खाते हुए बच्चे, मस्ती करते हुए बच्चे, फिसलपट्टी पर फिसलते हुए बच्चे, झूले पर झूलते हुए बच्चे, स्मार्ट टी. वी. पर कार्टून देखते हुए बच्चे, आनंददायी एवं भयमुक्त वातावरण में शासकीय प्राथमिक विद्यालय भोपाखेड़ी में 2015-16 से नियमित आते जा रहे हैं। जिसके कारण विद्यालय के नामांकन में सतत् वृद्धि दर्ज की जा रही है। साथ ही समस्त भोपाखेड़ी विद्यालय के हित में कार्य करने वाले लोगों को और भी प्रसन्नता होती है जब उनके द्वारा किया गया कार्य धरातल पर दिखाई देता है। आज भोपाखेड़ी विद्यालय निजी विद्यालय की तर्ज पर समुदाय के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। जिसमें पिछले पांच वर्षों में छात्र संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि दर्ज की जा रही है। भोपाखेड़ी विद्यालय जिले का एकमात्र ऐसा विद्यालय है जिसने वर्ष 2018-19 में जवाहर नवोदय विद्यालय अरनियाकला में 02 विद्यार्थियों का चयन करवाया है। निश्चित ही यह सकारात्मक परिवर्तन केवल शासकीय विद्यालय में पढ़ने वाले पालकों को ही नहीं अपितु निजी विद्यालय के पालकों को भी प्रभावित कर रहा है।

आगामी योजना :

प्री-प्रायमरी कक्षा के नियमित संचालन के लिए यदि आवश्यक हुआ तो निजी खर्च पर एक शिक्षक की व्यवस्था करेंगे जिससे उनको और बेहतर शैक्षिक वातावरण उपलब्ध कराया जा सके। साथ ही उनके अभिभावकों को पूर्ण संतुष्टि हो। उनके दिमाग से निजी विद्यालय का आकर्षण समाप्त हो, इस प्रकार की व्यवस्था बनाने का प्रयास करेंगे। साथ ही हमारा लक्ष्य है कि निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं के लिए भी भोपाखेड़ी विद्यालय आकर्षण का केंद्र बने एवं वे भी अपना नामांकन शासकीय विद्यालयों में दर्ज करने में गौरव का अनुभव करें। आज 23 विद्यार्थियों वाला भोपाखेड़ी विद्यालय वर्तमान 2019 में 101 विद्यार्थियों वाला विद्यालय बन चुका है। कभी हमारे पूर्व राष्ट्रपति स्व. श्रीमान ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी ने कहा था कि सपने हमेशा बड़े देखना चाहिए एवं ऐसे सपने देखना चाहिए जो हमें सोने न दे। इसी प्रकार का सपना भोपाखेड़ी विद्यालय के शिक्षक परिवार ने भी देखा है। विद्यालय परिवार का सपना है कि क्या हम एक मुट्ठी राख बनने से पहले हमारे विद्यालय को 150 विद्यार्थियों वाला, श्रेष्ठ शैक्षणिक गुणवत्ता वाला, जिले के केंद्रीय विद्यालय के समान अपने विद्यालय को बना सकते हैं ? क्या हम एक मुटठी राख होने से पहले अपने विद्यालय को जिले का सर्वश्रेष्ठ विद्यालय बना सकते हैं ?

प्री-प्राइमरी एवं स्मार्ट क्लॉस :

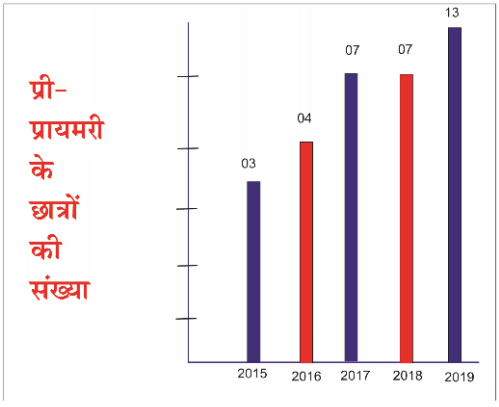


प्री-प्रायमरी एवं स्मार्ट क्लॉस का डाइट शाजापुर टीम द्वारा निरीक्षण।

भिन्न-भिन्न प्रकार से अपनी बात को समझाने के लिए जब भिन्न-भिन्न प्रकार के संसाधनों का प्रयोग किया जाता है तो विषय समझाने में आसानी होती है। चाहे बच्चे हों या बड़े हों। मनोविज्ञान की यह बात प्रत्येक व्यक्ति पर अक्षरशः लागू होती है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए शासकीय प्राथमिक विद्यालय भोपाखेड़ी के नवाचारों में सबसे सार्थक एवं प्रभावी नवाचार प्री-प्राइमरी क्लॉस संचालन की व्यवस्था करना है। इस कक्षा में आंगनवाड़ी के समस्त नन्हे-मुन्ने भैया-बहिनों को सम्मिलित कर कक्षा का संचालन किया जाता है। साथ ही स्मार्ट कक्षा में प्री-प्राइमरी के बच्चों को भी आनंददायी वातावरण में सीखने-सिखाने का अवसर प्रदान किया जाता है। स्मार्ट टी.व्ही. के कारण एवं आनंददायी वातावरण के कारण बच्चों का ठहराव सुनिश्चित हुआ है एवं उनमें अपेक्षित शैक्षणिक दक्षताओं का भी विकास हो रहा है। यह नवाचार समस्त जनसमुदाय के लिए अत्यंत आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। जिससे विद्यालय को भी अप्रत्यक्ष रूप से कई लाभ हो रहे हैं।

क्या खोया क्या पाया :

स्मार्ट क्लॉस के साथ प्री-प्रायमरी संचालन के पांच वर्ष जब पूर्ण हुए तब भोपाखेड़ी का शिक्षक परिवार पूर्ण रूप से संतुष्ट नजर आ रहा था। क्योंकि जब 2015 में प्री-प्रायमरी प्रारंभ की गई थी और आज 2019-20 में जो परिवर्तन आया वह इस प्रकार है -



शैक्षणिक-सत्र

मेरी प्रार्थना :

शासकीय प्राथमिक विद्यालय भोपाखेड़ी में प्रतिदिन 10.30 से 11 बजे तक नियमित आनंददायी प्रार्थना का आयोजन किया जाता है।



प्रातः 10.30 पर स्मार्ट टीवी के साथ प्रार्थना।



सायं 4.30 बजे कल्याण मंत्र के साथ छात्रों की छुट्टी।

विद्यालय निरीक्षण :

समय-समय पर होने वाले निरीक्षणों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुझाव पर भोपाखेड़ी विद्यालय में अमल किया जाता है। साथ ही निरीक्षण दल के द्वारा केवल कागजी निरीक्षण ही नहीं अपितु कक्षाओं में जाकर विद्यार्थियों से चर्चा करके धरातलीय शैक्षणिक गुणवत्ता, भौतिक संसाधनों की उपलब्धता, आकर्षक वातावरण एवं सीखने सिखाने में शिक्षकों की सार्थक भूमिका पर भी सूक्ष्मतम निरीक्षण होते हैं। जिसमें आगंतुक शिक्षाविदों द्वारा संतोष व्यक्त किया जाता रहा है। भोपाखेड़ी विद्यालय परिवार सफलता की इस कहानी को प्रभावी तरीके से निरंतर आगे बढ़ाता रहेगा। ऐसा समस्त विद्यालय परिवार के शिक्षक साथियों का संकल्प है।

मध्यान्ह भोजन एवं वृक्षारोपण :

समरसता की मिसाल प्रस्तुत करते हुए भोपाखेड़ी विद्यालय के सभी भैया बहिन एक साथ एक पंक्ति में बैठकर भोजन करते हैं। साथ ही विद्यालय परिसर को हरा-भरा बनाने में भी भैया बहिन सहयोग करते हैं। सभी ने पांच पौधे लगाकर प्रत्येक कक्षा को एक पौधा देकर उसे पेड़ बनाने के लिए संकल्प लिया एवं दिलवाया।



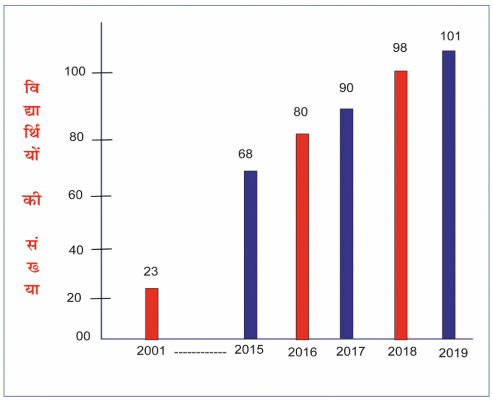
भैया-बहिनों द्वारा मध्यान्ह भोजन ग्रहण करना।



अपनी कक्षा अपना पेड़ कार्यक्रम का संचालन।

क्या खोया क्या पाया :

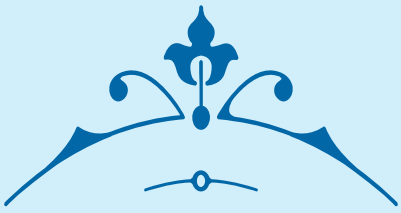
शासकीय प्राथमिक विद्यालय भोपाखेड़ी शासन की सभी योजनाओं जैसे दक्षता उन्नयन, शाला सिद्धि, बेस लाइन टेस्ट, मिड लाइन टेस्ट और एंड लाइन टेस्ट आदि सभी कार्यों को समयानुसार पूर्ण कर रहा है। उसी के परिणाम स्वरूप पिछले 5 वर्षों में कभी भी प्राथमिक विद्यालय भोपाखेड़ी की छात्र संख्या कम नहीं हुई है। यह अपने आप में एक बहुत बड़ा रिकॉर्ड है। विद्यालय में किए जा रहे सकारात्मक नवाचारों का प्रतिफल हमें बढ़ती हुई छात्र संख्या के रूप में प्राप्त हुआ है जो इस प्रकार है -



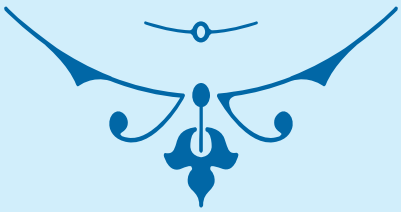
शैक्षणिक-सत्र

सत्यनारायण पाटीदार
(प्राथमिक शिक्षक)
मोबाईल : 9977745659
Email : patidarsatya2013@gmail.com

❑ ❑ ❑



विद्यालय में तकनीकी का प्रयोग



तकनीक बनी शिक्षा की सीढ़ी

शासकीय माध्यमिक विद्यालय, गेहूंखेड़ी

यू-डाईस कोड : 23300310904

- विकासखंड : नरसिंहगढ़
- जिला : राजगढ़
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 1 - विद्यालय नेतृत्व का अयास एवं दृष्टिकोण

उप डोमेन क्र. 4 - विद्यालय एवं तकनीकी का विकास

वैश्विक महामारी (कोविड 19) के समय, जहाँ सारी दुनिया में बच्चों की शिक्षा रुक गई थी, उस समय में बच्चों को तकनीक से जोड़कर सीखने से जोड़े रखने का काम इस विद्यालय ने किया है, जिसकी सफलता को हम अगले पन्नों में पढ़ेगें।

पृष्ठभूमि :

यह कहानी है गेहूंखेड़ी के शासकीय माध्यमिक विद्यालय की, जो मध्यप्रदेश के राजगढ़ जिले के नरसिंहगढ़ विकासखंड के दूरस्थ संकुल केंद्र, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तलेन में स्थित है। एक छोटा सा गाँव, जिसकी दूरी जिला मुख्यालय से 80 किलोमीटर है। यहां का मुख्य व्यवसाय कृषि है। राजपूत बहुल इस ग्राम की आबादी 600 के लगभग है। जब मेरी नियुक्ति यहाँ हुई तब बहुत से परिचित लोगों ने कहा भी कि ऐसे गाँव में सर्विस कैसे कर पाओगे, जहां गाँव के आधिकांश लोग मद्यपान करते हैं। थोड़े समय के लिए मैं हताश भी हुआ, और सोचा कि एक दिन की बात तो नहीं है, एक लंबे समय तक काम करना है, कैसे कर पाएँगे? लेकिन लीडरशिप प्रशिक्षण में हुई चर्चा के उपरांत सामुदायिक सहभागिता और नवाचारों में नेतृत्व जैसे विषयों ने इस असफल स्कूल को सफल बनाने में प्रेरणा मिली की। मन में यह विचार आया कि -

'मंजिलें यूं ही नहीं मिलती राही को, दिल में जुनून सा जगाना पड़ता है,
पूछा जब चिड़िया से कैसे बनता है घोसला, वह बोली तिनका तिनका उठाना पड़ता है।'

हमने संकल्प लिया कि हम भी एक-एक कदम बढ़ाएंगे और विद्यार्थियों का विश्वास जीतकर, उनके माध्यम से परिवार तक पहुँच बनाएँगे। सफलता तो मिलेगी ही बस अपनी कार्यक्षमता को बढ़ाना होगा। इसी सोच के साथ विभिन्न प्रशिक्षण में प्राप्त मार्गदर्शन का सकारात्मक उपयोग कर, विभिन्न नवाचार गतिविधि आधारित शिक्षण एवं शिक्षण में टेक्नोलॉजी का उपयोग करने हेतु आईसीटी का प्रयोग विद्यालय में प्रारंभ किया। क्योंकि हमारे दिमाग में एक जुनून था कि कैसे भी विद्यालय में पढ़ने वाले इन छोटे-छोटे विद्यार्थियों को उपलब्ध मानव संसाधनों का उत्कृष्टतम प्रयोग कर श्रेष्ठतम शिक्षण देना है। शिक्षा के माध्यम से इन्हें भविष्य का एक नशामुक्त, तर्कशील और अच्छा नागरिक बनाना है। ताकि ये अपने गाँव के साथ राष्ट्र के विकास में सहयोगी बन सकें ।

समस्या :

- कोविड 19 के दौरान शिक्षकों का भौतिक रूप से छात्रों तक न पहुँच पाना।

समस्या समाधान की प्रक्रिया :

कृषि आधारित गाँव होने के कारण अधिकांश अभिभावक, अपने बच्चों को खेत पर ले जाते थे। घर पर विद्यार्थियों को शिक्षण का माहौल नहीं मिल पाने से विद्यार्थियों में सीखने प्रति रुचि बहुत कम हो गई थी। बच्चों को पुनः विद्यालय में लाना और शिक्षा से जोड़ना एक शिक्षक के लिए बड़ी चुनौती थी। हमारी कड़ी मेहनत एवं प्रयासों से हम विद्यार्थियों को पुनः विद्यालय की ओर आकर्षित करने में और अभिभावकों को शासकीय विद्यालय पर विश्वास दिलाने में सफल हुए। परन्तु कुछ समय बाद ही वैश्विक महामारी (कोविड 19) ने विद्यालयों को बंद कर दिया गया, परंतु यह आपदा भी हमारे बच्चों में सीखने की रूचि को कम नहीं कर सकी। इसके लिए हमने कई अलग-अलग कदम उठाये -

विद्यार्थियों को विद्यालय के प्रति आकर्षित करने हेतु पहला प्रयास -

सर्वप्रथम हमने योजना बनाकर प्रत्येक विद्यार्थी के घर जाकर अभिभावकों से विद्यार्थियों को विद्यालय भेजने हेतु आग्रह किया। लेकिन हमें प्रारम्भ में इस कार्य में बहुत ज्यादा सफलता नहीं मिल पाई। मन थोड़ा उदास तो हुआ लेकिन संकल्प था, बदलाव करने का। हमने तुरंत नई योजना बनाई और शिक्षण में टेक्नोलॉजी का प्रयोग कर विद्यालय में रुचि पूर्ण

माहौल बनाना शुरू किया। इसके लिए आईसीटी का उपयोग कर विद्यालय में एक नयापन देने का काम किया और अगले ही दिन विद्यालय में उपस्थित विद्यार्थियों को हमने टैबलेट के माध्यम से फिल्म 'तारे जमीन पर' दिखाई। इस दौरान यह देखने को मिला कि सभी विद्यार्थी बहुत उत्सुकता पूर्वक फिल्म देख रहे थे। फिल्म समाप्त होने के बाद हमने विद्यार्थियों की समझ जानने हेतु कुछ खुले प्रश्न किए । जैसे -



टेबलेट पर 'तारे जमीन पर' विद्यार्थी।

फिल्म 'तारे जमीन पर' कुछ सवाल -

- फिल्म में छोटा बच्चा ईशान पढ़ाई क्यों नहीं कर पाता है ?
- बच्चा ईशान याद किया हुआ क्यों भूल जाता है ?
- शिक्षकों ने ईशान के साथ कैसा व्यवहार किया ?
- ईशान के चित्रकला के शिक्षक ने उसके साथ कैसा व्यवहार किया ?
- अगर आप ईशान की जगह होते तो क्या करते हैं ? आदि।

हम आश्चर्य रूप से देख रहे थे, कि अधिकांश विद्यार्थी उत्सुकता पूर्वक प्रश्नों के उत्तर दे रहे थे। हमारा प्रयोग सफल होता दिख रहा था। तभी हमने तय कर लिया कि हम कक्षा शिक्षण में भी आईसीटी का उपयोग करेंगे और पढ़ाई को आसान बनाने के लिए, तकनीकी एवं गतिविधि आधारित शिक्षण का उपयोग करेंगे। हम प्रतिदिन घर पर पाठ्यक्रम के कंटेंट आधारित वीडियो तैयार करते अगले दिन कक्षा में उनको टेबलेट के माध्यम से वीडियो दिखाते। कहानियों को अपनी आवाज में ऑडियो और वीडियो के रूप में तैयार कर विद्यार्थियों के पास उनके पेरेंट्स के मोबाइल पर पहुँचाते।


टेबलेट पर पढ़ाई करते विद्यार्थी।

शिक्षक एवं विद्यार्थियों द्वारा निर्मित गतिविधि आधारित शिक्षण वीडियो लिंक दूसरा प्रयास -

क्र.	कंटेंट	वीडियो लिंक
1	मोहल्ला क्लास में आईटीसी का प्रयोग, स्मार्ट कक्षा शिक्षण।	https://youtu.be/3OBEmV53rcA
2	टीएलएम द्वारा गतिविधि आधारित शिक्षण एवं टेबलेट के माध्यम से डिजिटल शिक्षण।	https://youtu.be/DzNImXZ6L-o
3	लॉक डाउन के समय घर पर बच्चों द्वारा टीएलएम से गतिविधि आधारित शिक्षण।	https://youtu.be/WqFXVlSZkp4
4	लॉक डाउन में आईटीसी के उपयोग से विद्यार्थियों के लिए स्वनिर्मित शिक्षण वीडियो।	https://youtu.be/io5RRg_gBHA
5	लर्निंग आउट कम्स आधारित गतिविधि, गति के प्रकार एवं दूरियों का मापन।	https://youtu.be/xuTbdqJibDk

विद्यार्थी प्रतिदिन घर पर वीडियो देखकर अगले दिन प्रश्न मंच प्रतियोगिता के माध्यम से फीडबैक देते हैं। लेकिन यहाँ भी एक समस्या थी कि केवल 15 प्रतिशत से 20 प्रतिशत अभिभावकों के पास ही स्मार्ट फोन थे। इसके लिए हमने पालकों को अपने बच्चों को कुछ समय के लिए मोबाईल उपलब्ध करवाने के लिए समझाया। शेष छात्रों को हम अपने मोबाइल, टेबलेट आदि के माध्यम से पढ़ाई करवाने लगे। इस प्रकार शिक्षण में टेक्नोलॉजी के उपयोग से हमें भी बहुत से नए-नए विचारों पर काम करने का मौका मिला ।



टेबलेट की सहायता से पढ़ाई करते विद्यार्थी।

शिक्षक एवं विद्यार्थियों द्वारा स्वयं वीडियो तैयार करने का कौशल हासिल करना।

इसी क्रम में, पाठ्यक्रम से किसी कंटेंट को समझाने के लिए उसका वीडियो तैयार करना, फिर कक्षा में उसका प्रस्तुतीकरण करना हमारे शिक्षण में प्रमुख बदलाव था। यह प्रविधि हमारे शैक्षणिक कौशल को भी बढ़ाने में मददगार साबित हुई। हमारे विद्यार्थियों की नेतृत्व क्षमता बढ़े, उनमे प्रस्तुतीकरण कौशल का विकास हो, इसके लिए उन्हें अवसर प्रदान किए। कक्षा में एक दिन निर्धारित किया, जिसमें पूरे समय कक्षा का संचालन विद्यार्थी खुद करते हैं। हमारे द्वारा तैयार वीडियो ऑडियो आदि पर समूह में चर्चा करते हैं। विद्यार्थियों के लिए यह नया प्रयोग बहुत ही आकर्षित लगा। जब विद्यार्थी गाँव के अन्य विद्यार्थियों को स्कूल गतिविधियों की जानकारी देने लगे तो आश्चर्यजनक रूप से जहाँ विद्यालय में 30 प्रतिशत से 40 प्रतिशत उपस्थिति रहती थी, वहीं अब 90 प्रतिशत से 100 प्रतिशत उपस्थित रहने लगी ।

शिक्षक एवं विद्यार्थियों द्वारा मिलकर टी.एल.एम का निर्माण -

विद्यार्थी आईसीटी के प्रयोग के साथ-साथ टीएलएम के माध्यम से खुद करके सीखने लगे। जिससे उनका सीखने का स्तर भी बढ़ने लगा। प्रारंभ में बेसलाइन टेस्ट का परिणाम 30 प्रतिशत से 40 प्रतिशत रहता था, जो एण्डलाइन टेस्ट में परिणाम 100 प्रतिशत के लगभग प्राप्त होने लगा। रुचिपूर्ण माहौल में सीखने के अवसर मिलने से विद्यार्थी प्रसन्नतापूर्वक अन्य शैक्षणिक और सह-शैक्षणिक गतिविधियों में भी बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं ।



टी.एल.एम से सीखते विद्यार्थी।

विद्यालय में आईसीटी के प्रयोग हेतु गूगल, यू-ट्यूब, दीक्षा एप, निष्ठा प्रशिक्षण का उपयोग - स्कूल प्रधानाध्यापक के रूप में विद्यालय में आईसीटी का उपयोग कैसे किया जाए, सर्वप्रथम यह जानना जरूरी था। इसके लिए मैंने इसकी आवश्यक जानकारी गूगल एवं यूट्यूब के माध्यम से सीखने का प्रयास किया। आईसीटी की सबसे महत्त्वपूर्ण जानकारी दीक्षा एप के माध्यम से प्राप्त निष्ठा प्रशिक्षण 'शिक्षण अधिगम और मूल्यांकन में आईसीटी का समन्वय' से प्राप्त हुई। इसके माध्यम से

हमने सीखा आईसीटी के उपलब्ध संसाधनों का शिक्षण में रचनात्मक उपयोग कैसे किया जाए। हमने जाना की विद्यालय में आईसीटी के उपयोग के लिए यह जरूरी नहीं कि विद्यालय में कंप्यूटर उपलब्ध हो। मोबाइल एवं टेबलेट के उचित उपयोग से भी विद्यालय में एक ऐसा वातावरण बनाया जा सकता है जिससे शिक्षक एवं विद्यार्थी खुशी-खुशी स्वीकार कर सके, और शिक्षण में टेक्नोलॉजी का उपयोग कर सकें।

उक्त सभी काम तभी संभव हो सकेंगे जब एक प्रधानाध्यापक के पास -

- आईसीटी के उपयोग के लिए उपयुक्त सॉफ्टवेयर, एप्लीकेशन (जैसे जियो जेब्रा मेथ्स एप, मार्बल एप, पीएचईटी एप, प्राइमरी कक्षाओं के लिए जी कम्पराइज्ड गेम, टक्स पेंट, टक्स ऑफ मैथ्स सॉफ्टवेयर, EDU एक्टिव एप, आदि) एवं इंटरनेट के उपयोग की जानकारी हो।
- कक्षा में मोबाइल एवं टेबलेट के माध्यम से शिक्षण कौशल एवं आईसीटी से सीखने-सिखाने में वृद्धि के लिए जागरूक हो।
- विद्यालय में नेटवर्क ना होने की स्थिति में ऑफ लाइन शिक्षण में डिजिटल सामग्री का निर्माण एवं उपयोग कैसे किया जाए इसकी जानकारी हो ।

निम्नलिखित सभी प्रमुख एप्लीकेशन और सॉफ्टवेयर ओपन सोर्स एवं निःशुल्क हैं, जिनका उपयोग कोई भी प्रधानाध्यापक अपने विद्यालय में कर सकता है।

विद्यालय में आईसीटी के उपयोग हेतु निःशुल्क एवं उपयोगी एप्लिकेशन एवं सॉफ्टवेयर -

क्र.	एप्लीकेशन / सॉफ्टवेयर का नाम	लिंक
1	जिओ जेब्रा मैथ्स एप	https://play.google.com/store/apps/details?id=org.geogebra.android https://www.geogebra.org/
2	PHET विज्ञान के लिए	https://play.google.com/store/apps/details?id=org.kiwix.kiwixcustomphet
3	जी कम्पराइज्ड गेम प्राइमरी कक्षा के लिए	https://play.google.com/store/apps/details?id=net.gcompris.full
4	गणित एक मजा	https://play.google.com/store/apps/details?id=com.cpappstudio.mathfun
5	आर्ट एंड कल्चर	https://play.google.com/store/apps/details?id=com.google.android.apps.cultural
6	मार्बल साफ्टवेयर/ डिजिटल ग्लोब	https://g.co/kgs/YN2VKq https://play.google.com/store/apps/details?id=com.google.earth

साथी शिक्षकों का आईसीटी पर क्षमतावर्धन करना -

विद्यालय प्रमुख होने के नाते शिक्षण में आईसीटी के रचनात्मक उपयोग की जानकारी प्राप्त करने के पश्चात शिक्षकों का उत्साहवर्धन करना प्रमुख काम है। शिक्षक भी अपने मोबाइल के माध्यम से शिक्षण को प्रभावी बना सकें, इसके लिए साथी शिक्षक को निम्न जानकारी से परिचय करवाया । जिसमें कुछ कामों को प्रमुखता से किया गया -

- साथी शिक्षकों की नियमित बैठकों का आयोजन करना और उसमें आईसीटी के उपयोग पर चर्चा की गई।
- आयोजित बैठकों में आईसीटी के उपयोग से शिक्षण को कैसे रोचक बनाया जाए, इसकी समझ विकसित की गई।
- शिक्षण एप्लीकेशन एवं सॉफ्टवेयर के उपयोग की जानकारी समय - समय पर आयोजित बैठकों में दी गई।
- स्वयं के द्वारा डिजिटल शिक्षण सामग्री तैयार कर सभी के लिए उदाहरण प्रस्तुत किया।
- कक्षा में आईसीटी के उपयोग की सहायता से शिक्षण को बेहतर बनाने के लिए अवसर उपलब्ध करवाए।
- प्रतिदिन लंच टाइम और विद्यालय अवकाश के पश्चात साथी शिक्षकों के साथ अभ्यास कर, आपस मे कंटेंट का प्रस्तुतिकरण किया और आवश्यक फीडबैक प्रदान किया ।

बदलाव :

कक्षा में शिक्षक एवं विद्यार्थियों द्वारा आईसीटी का प्रयोग -

शिक्षण को रुचिकर एवं गतिविधि आधारित बनाने एवं विद्यार्थियों को आधुनिक टेक्नोलॉजी से जोड़ने के लिए विद्यार्थियों को कुछ एप्लीकेशन / सॉफ्टवेयर के उपयोग की जानकारी दी गयी थी। उदाहरण के लिए भूगोल पढ़ाने के लिए नक्शे की जगह डिजिटल शिक्षण सामग्री के रूप में एक एप्लीकेशन **'मार्बल', डिजिटल ग्लोब** आदि का उपयोग कर सकते हैं, जिसमें एक क्लिक पर विश्व के किसी भी देश की भौगोलिक, राजनीतिक, सामाजिक आदि जानकारी डिजिटल रूप में बता सकते हैं ।

इसी प्रकार **जियोजेब्रा मैथ्स ऐप** के माध्यम से गणित, विज्ञान, भूगोल आदि की जानकारी बहुत ही रोचकता पूर्वक विद्यार्थियों को दी जा सकती है। इसी प्रकार विज्ञान शिक्षण में **PHET ऐप** का उपयोग विद्यार्थियों को खुद करके सीखने की प्रवृत्ति का विकास करता है।

प्राइमरी कक्षाओं के लिए Tux of Paint एवं Tux of Maths, Edu Active आदि कुछ गतिविधि आधारित एप्लीकेशन का उपयोग सिखा सकते हैं। इनकी सहायता से विद्यार्थी बहुत ही आसानी से डिजिटल शिक्षण के माध्यम से जानकारी का उपयोग शिक्षण में कर रहे हैं।

आईसीटी के प्रयोग के दौरान कक्षा में शिक्षक की भूमिका -

कक्षा में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। क्योंकि केवल मोबाइल, टैबलेट, कम्प्यूटर, टीवी या रेडियो को चलाने मात्र से अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसी को ध्यान में रखते हुए हम साथी शिक्षक के साथ कक्षा में शिक्षक की भूमिका पर बातचीत करते हैं, और आवश्यक सुझावों के आदान-प्रदान से कक्षा में अध्यापन के दौरान शिक्षण को बेहतर एवं रोचक बनाने का प्रयास करते हैं। विद्यार्थियों की समझ को जांचने हेतु उन्हें भी मोबाइल एवं टेबलेट पर गतिविधि करने के अवसर देते हैं। कुछ विद्यार्थियों को इसमें कठिनाई भी होती है, कुछ संकोच के कारण करने में झिझकते

थे। लेकिन हमने उन्हें सबसे पहले अवसर प्रदान कर उनके प्रयासों को प्रोत्साहित किया। जिससे उनकी झिझक दूर हो और वे भी उत्साह पूर्वक आईसीटी का प्रयोग करने लगे।

समुदाय एवं पालकों को आईसीटी से परिचय करवाना एवं विद्यालय में उनकी सहभागिता को बढ़ाना -

मोबाईल से भी पढ़ाई हो सकती है, यह समुदाय को समझाना सबसे जटिल काम था। इसके लिए हमने मातृ सम्मेलन को आयोजित करने की योजना बनाई। लेकिन यह काम इतना आसान नहीं था। ग्रामीण परिवेश और राजपूत समाज का बाहुल्य गाँव होने कारण महिलाएं बहुत कम घर के बाहर निकल पाती थीं। लेकिन इस बार एक बात हमारे पक्ष में थी कि विद्यार्थी हमारे साथ थे, हमने योजना बनाकर विद्यालय में बाल मेले का आयोजन किया। कुछ एसएमसी सदस्यों के साथ मिलकर प्रत्येक विद्यार्थी के घर बाल मेले और मातृसम्मेलन की सूचना दी गई। विद्यार्थियों के माध्यम से मम्मी जी, दादी जी को बाल मेले में आने हेतु प्रेरित किया। अपने बच्चों की जिद के कारण ही माताएँ घर से निकल पाई। विद्यालय में उपस्थित माताओं को विद्यालय की गतिविधि एवं विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर की जानकारी दी। साथ ही सामाजिक कुप्रथा बाल-विवाह एवं मद्यपान आदि के नुकसान के बारे में जानकारी दी। सभी माताओं ने अपने बच्चों की पढ़ाई के सम्बन्ध में विचार सुनकर एवं उनकी प्रत्यक्ष उपलब्धि देखकर, अपने बच्चों को स्कूल में नियमित भेजने और घर पर पढ़ाई करने के लिए समय देना प्रारम्भ किया। विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति बढ़ने लगी। धीरे-धीरे अभिभावकों का विद्यालय के प्रति विश्वास भी बढ़ा। वर्तमान में विद्यालय के प्रत्येक आयोजन में अभिभावकों की सहभागिता रहती है।



माताओं को आईसीटी हेतु जागरूक करना।

कोविड 19 में किये गए विशेष प्रयास जिसने शिक्षा को रुकने नहीं दिया और पूर्व में किये गए कामों को संबल प्रदान किया।

कंसोर्टियम ग्रुप के माध्यम से विशेष प्रयास -

कोरोना के कारण हुए लॉक डाउन के समय जब समस्त विद्यालय बन्द हुए और शिक्षक भौतिक रूप से विद्यार्थियों के पास नहीं जा पाए। सभी के मन में एक ही प्रश्न था कि अब कैसे बच्चों को पढ़ाया जाए ? तब शिक्षण में सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण भूमिका आईसीटी की रही। हमारे नरसिंहगढ़ विकासखंड में शिक्षकों को शिक्षण कौशल के साथ, तकनीकी ज्ञान हो इसी

संक्रमण काल में चल रही ऑनलाइन पढ़ाई

पत्रिका न्यूज पेपर 6 जून 2020

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

बोड़ा. कोरोना संक्रमण काल में इन दिनों बच्चों की ऑनलाइन पढ़ाई चल रही है। शासकीय विद्यालय के शिक्षक ऑनलाइन क्लासेस लगा रहे हैं। शासकीय माध्यमिक विद्यालय गेहूंखेड़ी के शिक्षक मनमोहन विश्वकर्मा बच्चों की ऑन लाइन शिक्षा के लिए वीडियो तैयार किए गए



हैं, जो अभिभावकों के वाट्सएप ग्रुप पर भेजे जा रहे हैं और अभिभावकों से ऑनलाइन पत्र भेजकर बच्चों को पढने के लिए मोबाइल मुहैया करवाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। ग्रीष्मकालीन अवकाश और कोरोना के लॉक डॉउन में बच्चों को पढ़ाई के प्रति प्रेरित किया जा रहा है। शिक्षकों में हरिनारायण रुहेला, सजंय सक्सेना, रघुवीरसिंह परिहार ऐसे प्रयास में लगे हैं।

उद्देश्य से ब्लॉक अकादमिक टीम के मार्गदर्शन एवं निर्देशन में एक व्हाट्सएप ग्रुप 'कंसोर्टियम ग्रुप' बनाया । जिसमें विकासखंड के लगभग 60 शिक्षकों को जोड़ा गया। सभी शिक्षकों की जूम एप एवं ग्रुप कॉलिंग के माध्यम से ऑनलाइन वर्कशॉप्स एवं मीटिंग्स की गई। जिसमें सभी ने आपसी चर्चा के माध्यम से तय किया कि हमें समय के साथ अपडेट होने के लिए, शिक्षण में आईसीटी के प्रयोग को अपनाना चाहिए। इसके लिए अपनी क्षमताओं को बढ़ाने के लिए पहले खुद को सीखना होगा। राज्य स्तर के कई प्रमुख अधिकारियों द्वारा आईसीटी की बारीकियों से सभी शिक्षकों को अवगत कराया और शिक्षकों को प्राइमरी/माध्यमिक स्तर के छोटे-छोटे समूह बनाकर कक्षावार ऑनलाइन लेसन प्लान बनाने का कार्य करवाया। जिसका उपयोग कर सभी शिक्षकों ने अपने-अपने लेसन प्लान बनाये और वीडियो के रूप में तैयार कर छात्रों तक ऑनलाइन पहुँचाने लगे।

कक्षा शिक्षण में आईसीटी के प्रयोग का कोरोना काल मे सार्थक उपयोग की कुछ झलकियाँ -

कोरोना महामारी के कारण फैली वैश्विक महामारी से बचाव के लिए लगाए गए लॉकडाउन के कारण जब विद्यालय बंद हो गए तब हमारे द्वारा पूर्व में आईसीटी एवं गतिविधि आधारित कक्षा शिक्षण का लाभ हमें कोरोना के लॉकडाउन के समय में



घर पर मोबाईल से पढ़ाई करते विद्यार्थी।

सबसे ज्यादा प्राप्त हुआ। विद्यार्थियों से दूर रहकर भी उन्हें ऑडियो और वीडियो के माध्यम से शैक्षणिक सामग्री प्रेषित करना और उनका फीडबैक लेना, डिजिलेप लिंक के माध्यम से शिक्षण का सफल संचालन करने में बहुत आसानी हुई। ऑनलाइन शिक्षण का अनुभव ना होते हुए भी कक्षा शिक्षण में किए गए आईसीटी का प्रयोग विद्यार्थियों के लिए बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुआ।

हमने मोबाइल के माध्यम से ही विद्यार्थियों की पढ़ाई पूर्ण करवाने में आईसीटी का भरपूर उपयोग किया। अभिभावकों से बात कर विद्यार्थियों की पढ़ाई के लिए स्मार्ट फोन खरीदने का आग्रह किया। फलस्वरूप 70 प्रतिशत से ज्यादा अभिभावकों ने स्मार्ट फोन क्रय कर लिया। हमने अपने घर पर उनके लिए वीडियो, ऑडियो, पीडीएफ, फोटोग्राफ्स आदि के माध्यम से शिक्षण सामग्री तैयार कर व्हाट्सएप पर भेजना और उसका फीडबैक उसी रूप में विद्यार्थियों से लेना बहुत ही आसानी के साथ कर सके।

गतिविधि आधारित शिक्षण -

विद्यार्थी खुद करके सीखे। उनके अंदर प्रस्तुतिकरण कौशल विकसित हो, इसके अवसर प्रदान करने के लिए कठिन अवधारणाओं को सरलतम रूप से समझाने के लिए विद्यार्थियों की सहभागिता के माध्यम से टीएलएम बनाए। जिनके माध्यम से विद्यार्थी स्वयं करके सीखने लगे। टीएलएम के प्रस्तुतिकरण एवं विद्यार्थियों के ज्ञान कौशल को प्रदर्शित करने के लिए प्रतिवर्ष विद्यालय में टीएलएम मेले का आयोजन किया जाता है। जिसमें संकुल, ब्लॉक एवं जिले के सम्माननीय

अधिकारियों के बीच विद्यार्थी खुद टीएलएम से प्रस्तुतिकरण करते हैं। इससे विद्यार्थियों का आत्मविश्वास तो बढ़ता ही है, इसके साथ ही नेतृत्व क्षमता का विकास भी होता है।

विशेष उपलब्धि -

विद्यालय में किये गए नवाचार, शिक्षण में **आईसीटी** के प्रयोग, गतिविधि आधरित शिक्षण, उत्कृष्ट विद्यालय प्रबंधन विद्यार्थियों एवं अभिभावकों से सतत सम्पर्क कर शिक्षण के लिए किए गए प्रयास के फलस्वरूप राज्य स्तरीय उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान राज्यपाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान राज्यपाल पुरस्कार 2021

स्थायित्व :

- विद्यार्थियों का विद्यालय में नियमित ठहराव है।
- शैक्षणिक स्तर में वृद्धि हुई है।
- विद्यार्थी विद्यालय संचालन में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।
- विद्यार्थियों में आईसीटी के उपयोग से टेक्नोलॉजी की समझ विकसित हुई है। छात्र अपने अभिभावकों को भी आईसीटी का उपयोग सिखाने लगे हैं। परिणाम स्वरूप वर्तमान में अभिभावकों द्वारा भी विद्यार्थियों को डिजिटल पढ़ाई में सहयोग किया जा रहा है।
- गतिविधि आधारित शिक्षण में टी.एल.एम के माध्यम से स्वयं करके सीखने से विद्यार्थियों की समझ विकसित हुई।
- विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता एवं प्रस्तुतीकरण का विकास।
- अभिभावकों का विद्यालय के प्रति विश्वास बढ़ा है।

आगामी योजना :

- विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को टेक्नोलॉजी से जोड़ने हेतु कम्प्यूटर से शिक्षा देना।
- स्मार्ट क्लास के माध्यम से शिक्षण की शुरुआत करना।
- प्रत्येक विषय के कंटेंट को टी.एल.एम के माध्यम से करवाना।
- गतिविधि आधारित पाठ्योजना तैयार कर आईसीटी से जोड़ने का प्रयास करना।
- अभिभावकों को भी आईसीटी का ज्ञान हो एवं वे भी आसानी से इसका प्रयोग कर सकें इसके लिए उन्हें शिक्षित करना।
- उपलब्ध संसाधनों का बेहतर उपयोग कर सर्व-संसाधन युक्त विद्यालय बनाना ।

मनमोहन विश्वकर्मा
(माध्यमिक शिक्षक)
मोबाईल : +91 8878606397
Email : manmohanvishvakrma@gmail.com

❑ ❑ ❑

बालिका शिक्षा से सशक्तिकरण

बेटी पढ़ाओ

शासकीय माध्यमिक विद्यालय, तारारोड़ा

यू-डाईस कोड : 23370307602

- विकासखंड : होशंगाबाद
- जिला : होशंगाबाद
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 2 - विद्यार्थियों के लिए शिक्षण, अधिगम प्रक्रिया

उप डोमेन क्र. 1 - विद्यालय की समस्त प्रक्रिया में शिक्षक की सहभागिता

होशंगाबाद जिले का एक ऐसा गांव जहां पर कक्षा 1 से 8 तक बालिकाओं को विद्यालय तो भेजा जाता था परंतु गांव वाले बालिकाओं का विद्यालय के बालकों के साथ बातचीत करना पसंद नहीं करते थे। जिसके कारण विद्यालय गतिविधियों में बालिकाओं की सहभागिता नहीं रहती थी। परंतु विद्यालय के शिक्षकों के प्रयास उपरांत विद्यालय की समस्त गतिविधियों में बालिकाओं की सहभागिता होने लगी और यह किस प्रकार हुआ आगे इस कहानी को पढ़कर आप जान सकेंगे।

पृष्ठभूमि :

शासकीय माध्यमिक विद्यालय तारारोड़ा जिला मुख्यालय होशंगाबाद मध्य प्रदेश से 20 किलोमीटर की दूरी पर पूर्व-दक्षिण दिशा में केवलारी नदी के किनारे स्थित है। विद्यालय में कुल 7 कमरे हैं, जिनमें एक कमरा कार्यालय है, तीन कमरों में प्राथमिक विभाग एवं तीन कमरों में माध्यमिक विभाग की कक्षाएं संचालित की जाती हैं। माध्यमिक विभाग में 3 कमरे और 1 कमरे में कार्यालय है और प्राथमिक विभाग में भी 3 कमरे हैं। सत्र 2021-22 विद्यालय में कुल दर्ज विद्यार्थियों की संख्या 79 हैं जिनमे दर्ज बालक 43 हैं और बालिका 36 हैं। जिसमें औसत उपस्थिति - बालक 33 और बालिका 32 रहती है।

इस ग्राम की जनसंख्या लगभग 1400 है, जिसमें ओबीसी जाति के लोग 80 प्रतिशत हैं और अनुसूचित जाति जनजाति की जनसँख्या 20 प्रतिशत है। लगभग 50 प्रतिशत लोग संपन्न वर्ग से हैं और उनका मुख्य व्यवसाय कृषि आधारित है। शेष 50 प्रतिशत जनसंख्या कृषि मजदूरी पर निर्भर है।

समस्या :

- बालिकाओं की कम उपस्थिति के कारण बालकों की अपेक्षा विद्यालीन गतिविधियों में कम भागीदारी।

समस्या समाधान की प्रक्रिया :

सितंबर माह 2010 की बात है, नई प्रधानाध्यापक का स्थानांतरण शासकीय माध्यमिक विद्यालय तारारोड़ा में हुआ। अवलोकन के समय उन्होंने देखा कि विद्यालय में बालक-बालिका एक समान विद्यालयीन गतिविधियों में सहभागिता नहीं कर रहे हैं। भोजन अवकाश के समय एवं खेल के कालखंड में बालिकाएं समूह में बैठकर वार्तालाप करती हैं जबकि बालक खेलना पसंद करते हैं। कारण का पता लगाने पर यह बात सामने आई कि गाँव के लोग बालक बालिकाओं का साथ खेलना, बातचीत करना पसंद नहीं करते।

- पालक शिक्षक संघ की बैठक का आयोजन।
- प्रधानाध्यपक नेतृत्व में सहभागिता का अवसर प्राप्त हुआ ।
- समुदाय का विश्वास प्राप्त कर बालिकाओं को प्रोत्साहित करना।
- विद्यालय के क्रियाकलापों में बालिकाओं को बालकों के समान अवसर प्रदान किये गये।
- पुस्तकालय के प्रति विद्यार्थियों की रुचि जागरूक की गई।
- अकादमिक स्तर सुधार हेतु गतिविधि आधरित शिक्षण किया गया।
- शिक्षण को रोचक बनाने हेतु विद्यार्थियों को शैक्षिणिक भ्रमण पर ले जाया गया ।
- कबाड से जुगाड़।
- पालक शिक्षक संघ की बैठक का आयोजन।

प्रधानाध्यापिका ने विद्यालय में पालक शिक्षक संघ बैठक का आयोजन किया। उन्होंने बालिकाओं की विद्यालीन गतिविधियों में सहभागिता को बढ़ाने सम्बन्धी सुझाव पर चर्चा की और पालकों से निवेदन किया कि जब आप बालक बालिकाओं को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर समान रूप से दे रहे हैं तो फिर आप उन्हें विद्यालयीन गतिविधियों में समान रूप से सहभागिता का अवसर क्यों नहीं देना चाहतें?

अधिकांश पालकों द्वारा कोई प्रतिक्रिया नहीं दी गई।

- **प्रधानाध्यापक नेतृत्व में सहभागिता का अवसर प्राप्त हुआ**

  कुछ समय बाद प्रधानाध्यापिका महोदया ने राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा आयोजित 'प्रधानाध्यापक नेतृत्व क्षमता विकास प्रशिक्षण' में सहभागिता की। इस प्रशिक्षण से उन्हें अपने साथी शिक्षकों की क्षमता वृद्धि के विभिन्न तरीके सीखे। जिसका क्रियान्वयन उन्होंने अपने शाला में टीम को बेहतर कार्य करने हेतु प्रेरित करने में किया, जिसमें कई प्रयास इस प्रकार रहे जैसे- उन्होंने लैंगिक समानता, साझेदारी, विद्यालय नेतृत्व शीर्षक अंतर्गत अपने दायित्व को और अच्छे से समझाया। इस प्रशिक्षण से प्रेरणा प्राप्त कर पुनः हमने बालिकाओं के माता-पिता से गृह संपर्क किया, तथा स्कूल में एक मीटिंग रखी जिसमें मुख्यतः बालिकाओं की माताओं को भी आमंत्रित किया गया और उनसे बालिकाओं के सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक विकास की बात की गई।

- **समुदाय का विश्वास प्राप्त कर बालिकाओं को प्रोत्साहित करना**

  इस प्रकार की दो तीन बैठकों का आयोजन किया गया जिससे बहुत बदलाव देखने को मिला। जिसमें सभी शिक्षकों ने सहयोग किया। प्रधानाध्यापिका स्वयं विद्यार्थियों के साथ खेल मैदान में उनका आत्मविश्वास बढ़ाने, खेलने लगी। बालक बालिकाओं की क्रिकेट टीम, खो-खो टीम बनायी गई। पिट्ठू, चम्मच दौड़, साइकिल दौड़ आदि खेल भी खिलाए गए। समय-समय पर उत्साहवर्धन हेतु समुदाय द्वारा पुरस्कार वितरण कराया गया।



- विद्यार्थी एवं शिक्षक खेलते हुए।

- **विद्यालय के क्रियाकलापों में बालिकाओं को बालकों के समान अवसर प्रदान किए गए**

  विद्यालय के उत्सव जैसे गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, बाल दिवस, शिक्षक दिवस आदि में बालक बालिकाओं को समान रूप से सांस्कृतिक कार्यक्रम में भागीदारी दी गई और उनके द्वारा कार्यक्रम में विभिन्न गीत, कविता, भाषण, नाटक आदि का प्रस्तुतीकरण किया गया। विद्यार्थियों की उपलब्धि स्तर को बढ़ाने हेतु शैक्षणिक गतिविधियों को रोचक बनाया। विद्यार्थियों को करके सीखने के अवसर प्रदान किए गए। इस हेतु विद्यालय परिसर को सीखने-सिखाने के संसाधन के रूप में परिवर्तित किया गया।

- **पुस्तकालय के प्रति विद्यार्थियों की रुचि जागरूक की गई**

  इस हेतु पुस्तकालय में पुस्तकों की व्यवस्था की गई एवं पुस्तकालय संचालन, बाल केबिनेट के माध्यम से प्रभारी शिक्षक की देख रेख में कराया गया। प्रत्येक विद्यार्थी को पुस्तक प्राप्त करना सहज हो गया। उसे केवल पुस्तक पंजी में स्वयं का नाम, दिनांक एवं पुस्तक का नाम लिखना होता है और जब वह वापस करते हैं तब उन्हें पुस्तक वापसी की दिनांक लिखनी होती है।



पुस्तकालय का उपयोग करते विद्यार्थी।

- **अकादमिक स्तर सुधार हेतु गतिविधि आधारित शिक्षण किया गया**

  शिक्षकों द्वारा गतिविधि आधारित शिक्षण प्रारंभ किया गया। विद्यार्थी स्वयं करके अवधारणाओं की समझ विकसित कर पाने में सक्षम होने लगे जैसे वास्तविक जीवन में वृत्त की आकृति का उपयोग एवं उसका निर्माण कर पाना, वास्तविक परिवेश में विभिन्न ज्यामितिय अवधारणाओं को समझना, लेन-देन के खेल के माध्यम से बैंकों की कार्य प्रणाली प्रतिशत. ब्याज की समझ, चित्र आलेख, दंड आलेख, वृत्त आलेख की वास्तविक जीवन में उपयोगिता एवं उसे पढ़ पाना, शाला की उपस्थिति का आलेख निर्माण करना।



सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन।

शिक्षण को रोचक बनाने हेतु विद्यार्थियों को शैक्षिक भ्रमण पर ले जाया गया

इसी क्रम में विद्यार्थियों को शैक्षिक भ्रमण कराए गए। इस हेतु बालक और बालिकाओं को बाल कैबिनेट अंतर्गत जिम्मेदारियां दी गई। बाल कैबिनेट पालक शिक्षक संघ की सहमति एवं सुझाव लेकर विद्यार्थियों को माँ नर्मदा के दर्शन हेतु ले जाया गया जहां उन्होंने अपनी कॉपी में अपने सवालों को लिखा एवं विद्यालय में वापस आकर शिक्षक के साथ उन पर चर्चा की और अपनी जिज्ञासा को शांत किया। उनके द्वारा पूछे गए कुछ सवाल, मछलियों के प्रकार से सम्बंधित प्रश्न, पानी पर बाँध बनाये जाने से प्रकृति पर प्रभाव से सम्बंधित प्रश्न, जल यातायात से सम्बंधित प्रश्न आदि पर चर्चा हुई।

रेशम केंद्र भ्रमण अंतर्गत रेशम के कीड़े के जीवन चक्र को समझने का प्रयास किया गया एवं इस पर आधारित उद्योग के बारे में भी जाना। विद्यालय वापस आकर विद्यार्थियों ने रेशम के कीड़े के जीवन चक्र का प्रोजेक्ट बनाया।



रेशम के कीड़े का जीवन चक्र समझते हुए।

विद्यार्थियों को ग्राम के पास स्थित 'राईस मिल' ले जाया गया जहां विद्यार्थियों ने धान से चावल को किस प्रकार निकाला जाता है एवं इसमें किस प्रकार मशीनों की सहायता ली सकती है जाना और यह भी देखा कि किस प्रकार प्रत्येक उत्पाद को अलग अलग श्रेणियों में बाटकर उनके मूल्य का निर्धारण किया जाता है।

विद्यार्थियों ने प्राचीन शैल चित्रों के बारे में भी जाना जो कि होशंगाबाद की पहाड़ियों में स्थित है एवं उस स्थान पर शिक्षकों के साथ चर्चा कर शैल चित्रों के ऐतिहासिक एवं कलात्मक महत्व को समझा।



शैल चित्रों के सम्बन्ध में चर्चा करते विद्यार्थी।

कबाड़ से जुगाड़

हमने देखा स्कूल परिवेश के आसपास बहुत सारी अनुपयोगी वस्तुएं दिखाई देती हैं, जिससे हमारा विद्यालय प्रांगण सुंदर नहीं दिखाई देता। इसलिए हमने बच्चों से सारी वस्तुएं एकत्रित करवाई, जिससे झाड़ू, बाटल, कागज के फूल, पुरानी बेटरी, थर्मोकोल के संग्रहण से कुछ उपयोगी वस्तुओं के निर्माण का कार्य छात्र-छात्राओं को दिया गया, जिससे बच्चों के द्वारा अपनी कल्पना शीलता के आधार पर शिक्षकों के मार्गदर्शन से सुंदर वस्तुएं साज सज्जा हेतु बनाई गईं।





कबाड़ से जुगाड़ अन्तर्गत बनाई गयी वस्तुओं का प्रदर्शन करते विद्यार्थी।

जैसे फ्लावर पाट, कागज से सुंदर फूल मालाएं, सुंदर फूलदान, थर्मोकोल से घड़ी का निर्माण किया, झाड़ू से फ्लावर बनाए गए। पुराने फूल पत्तों से फाइल साज सज्जा की गई, पुराने टायर से झूले बनाए गए, बाटल से पौधों में ड्रिप सिस्टम से सिंचाई व्यवस्था हेतु तैयार किया गया, एवं खेतों से मिट्टी लाकर उनसे सुंदर खिलौने एवं मूर्ति बनाई गई।

विद्यार्थियों के उत्साहवर्धन हेतु समय-समय पर जन समुदाय की उपस्थिति में पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया एवं बालक बालिकाओं की शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं खेल की उपलब्धियां साझा की गई।

बदलाव :

- बालिकाएं विद्यालय गतिविधियों में बालकों से अधिक सक्रिय सहभागिता प्रस्तुत कर रही हैं।
- सभी विद्यार्थियों के लिए भयमुक्त वातावरण का निर्माण हुआ है और वह शिक्षकों और समुदाय दोनों के साथ भयमुक्त होकर सवाल पूछते हैं, बातचीत करते हैं।
- बालिकाओं की सक्रिय सहभागिता होने के कारण विद्यालय परिसर में उनकी उपस्थिति छात्रों से बढ़कर पूरे विद्यालय समय में पूर्ण मनोयोग से रहती है।

स्थायित्व :

विद्यालय की सम्पूर्ण गतिविधियाँ बाल केबिनेट के सदस्यों के द्वारा होती हैं जिसमें बालिकाएं एवं बालक अपनी-अपनी जिम्मेदारी साथ निभाते हैं। हर गतिविधि के लिए एक बालक एवं एक बालिका जिम्मेदार रहते हैं और वह विद्यालय के उचित वातावरण निर्माण में अपनी अहम् भूमिका निभाते हैं। बालक-बालिका दोनों ही हर गतिविधि का पूर्ण जिम्मेदारी के साथ संचालन करते हैं। समुदाय एसएमसी एवं विद्यार्थी अपनी-अपनी जिम्मेदारी से अवगत हैं और यदि किसी कारणवश कोई गतिविधि छूटती है तो वे इस हेतु शिक्षकों से सवाल एवं सहयोग करते हैं। प्रधानाध्यापक वर्तमान में सेवा निवृत हो गई हैं फिर भी विद्यालय के सभी शिक्षक भी अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए पूर्ण कर्तव्यनिष्ठा से उसका निर्वहन करते हैं।

आगामी योजना :

- ग्राम के संपन्न वर्ग के अभिभावक भी अपने बच्चों को शासकीय विद्यालय में प्रवेश दिलाएं यह प्रयास करेंगे।
- विद्यार्थियों के सामाजिक, मानसिक, शारीरिक, भावनात्मक, सांस्कृतिक विकास हेतु सिलाई, बुनाई, कढ़ाई, खेलकूद, शारीरिक पुष्टि संबंधी कार्यों में दक्षता हासिल करवाने का प्रबंध करवाएंगे।

बसंत मालवीय
(प्र. प्रधानाध्यापक)
मोबाईल : 9425079200
संकलनकर्ता
नलिनी राज
(पूर्व प्रधानाध्यापक)

❑ ❑ ❑

शिक्षा से मिली समानता

शासकीय प्राथमिक विद्यालय, रघुनाथपुरा

यू-डाईस कोड : 23300527601

- विकासखंड : खिलचीपुर
- जिला : राजगढ़
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 1 - विद्यार्थी संकेंद्रित करना

उप डोमेन क्र. 1 - बालकों की आवश्यकताओं पर ध्यान केन्द्रित करना

यह कहानी है महिला प्रधान अध्यापक के धैर्य, परिश्रम एवं प्रयासों की जिसमें उन्होंने पिछड़े वर्ग के बाहुल्य ग्राम में अभिभावकों की दकियानूसी मानसिकता बाल विवाह एवं बालिकाओं की शिक्षा के प्रति अरुचि को बदला है। इससे ग्राम में बदलाव आया है। सभी बालिकाएं नियमित शाला आकर बालकों के साथ, समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर रही हैं । ग्राम में बाल विवाह को रुकवाने में भी सहायता मिली है।

पृष्ठभूमि :

यह विद्यालय जिला मुख्यालय से 11 कि.मी. दूरी पर तथा विकासखण्ड मुख्यालय से 10 कि.मी. दूरी पर स्थित है। इस ग्राम में पिछड़ा वर्ग समुदाय के लोगों की संख्या अधिक है। यहाँ सौंधिया सामाज के सबसे अधिक लोग निवास करते हैं। वर्तमान में ग्राम रघुनाथपुरा में लगभग 55 परिवार निवास करते हैं। गाँव में अधिकांश परिवारों की आय का प्रमुख साधन खेती और मजदूरी है। प्राथमिक विद्यालय में 1 शिक्षक व 1 शिक्षिका कार्यरत हैं तथा विद्यालय में कुल बालक 35 एवं बालिका 40 दर्ज हैं।

समस्या :

- लिंग भेद एवं बाल विवाह के कारण बालिकाओं का शाला में न आना।

समस्या समाधान की प्रक्रिया :

- एसएमसी को सक्रिय बनाना
- अभिभावकों के साथ संवाद करना
- सीखने - सिखाने की प्रक्रिया में बदलाव करना
- विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना
- विद्यार्थियों के किये कामों की सराहना करना
- बाल-केबिनेट को सक्रिय करना
- पुस्तकालय का उपयोग करने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करना।

एस.एम.सी. को सक्रिय करना -

एक नेतृत्वकर्ता के रूप अपने ही किये कामों की समीक्षा करना सबसे प्रमुख काम होता है और जब यह काम विद्यालय ने किया तो यह समझ में आया कि हमारे विद्यालय की एस.एम.सी. अपने कार्यों और भूमिका से अवगत नहीं है। हालाँकि उनका प्रशिक्षण प्रत्येक वर्ष आदेशानुसार किया जाता रहा है। सर्वप्रथम हमने विद्यालय के बेहतर संचालन हेतु कुछ प्रमुख कामों को चिन्हित कर एस.एम.सी. के सदस्यों के साथ समय - समय पर बैठकों का आयोजन किया और उन्हें जवाबदेह बनाया।



पालक सम्मेलन।

यह सुनिश्चित किया कि विद्यालय में सीखने की गुणवत्ता को बनाए रखने की जिम्मेदारी किसी दूर स्थित शिक्षा कार्यालय की बजाय खुद विद्यालय एवं एस.एम.सी. की ही है और उन्हीं के द्वारा उठाई जाना चाहिए। इस तरह के मुद्दों पर होने वाले लगातार संवादों, जिसमें सभी लोग अपना मत सभी के बीच रखते हैं, इससे एस.एम.सी. सदस्य जिम्मेदारी को समझने लगे हैं। विभिन्न आयोजनों में एस.एम.सी. सदस्यों के किये गए कामों को सम्मानित करवाया जाता है। पहले एस.एम.सी. के कुछ ही सदस्य बैठक में आते थे और अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते थे परन्तु अब सभी एस.एम.सी. सदस्य अपने कार्य एवं कर्त्तव्यों के प्रति बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं।

अभिभावकों के साथ संवाद करना -

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में माता-पिता की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। समय-समय पर इसके लिए विद्यालय ने पालक मातृ सम्मेलन के आयोजन किये और इन सम्मेलनों में माताओं को जागरूक करने के लिए रिसोर्स पर्सन जैसे महिला बाल विकास अधिकारी को आमंत्रित किया। लिंग भेद, बाल विवाह आदि मुद्दों पर चर्चा की गई और इनसे होने वाले दुष्परिणामों से अवगत कराया। जागरूकता अभियान को प्रभावी बनाने के लिए बेटी बचाओ, बालिका शिक्षा, लिंगभेद आदि को नाटक, नृत्य, गीत, कहानी के माध्यम से समुदाय को जागरूक करने का प्रयास किया। अभिभावकों को समय-समय पर बच्चों के कार्यों का प्रदर्शन एवं पाठ्यक्रम का अवलोकन करने के लिए आमंत्रित किया। उपरोक्त प्रयासों से अभिभावकों की बाल विवाह, लिंगभेद, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ एवं शिक्षा का महत्व आदि के प्रति जागरूकता बढ़ी ।

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बदलाव करना -

बच्चों में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए उनके सीखने-सिखाने पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया। जायफुल लर्निंग के माध्यम से शिक्षण हो सके इसके लिए शिक्षण को बाल केन्द्रित किया। शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों की व्यक्तिगत भिन्नता को ध्यान में रखकर उनके साथ गतिविधियां करवाई गई। जैसे - सुनकर समझने वाले विद्यार्थियों के लिए कविता/कहानी सुनाकर उस पर चर्चा की जाने लगी। गतिविधियां देखकर समझने की शैली वाले विद्यार्थियों के लिए चित्र, चार्ट, आरेख आदि कार्य किये गए। विद्यार्थियों की रुचि/रूझान के आधार पर व्यक्तिगत/समूह में गृहकार्य/प्रोजेक्ट कार्य दिए गए ।



अलग - अलग स्तर के बच्चों का समूह में शिक्षण।

बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करने के लिए उन्हें रोचक पुस्तकें उपलब्ध करवाई गई। लेख/कहानी/कविता पढ़कर व्यक्तिगत, जोड़ी या समूह में उसे अपने शब्दों में सुनाना और उस पर आधारित प्रश्न बनाए गए जिस पर उनसे बातचीत की जाती थी। इस प्रक्रिया में कोई भी समस्या देकर उसका हल पाठ में ढूंढ़ने को कहते हैं। विद्यार्थियों से चार्ट, पोस्टर, सुविचार, स्थिर चलित मॉडल आदि का शिक्षण सामग्री का निर्माण भी करवाया और कौशलों के आधार पर प्रतियोगिताएं आयोजित कर विद्यार्थियों को पुरस्कृत भी किया जाता है। इन सभी कामों के प्रदर्शन के लिए प्रोजेक्ट रूम भी तैयार किया है। विद्यार्थियों को जिम्मेदारी देते हुए उसे उपयोग के लिए भी खोला जाता है। कक्षा में आपसी संवाद का वातावरण बनाने के लिए ऐसी गतिविधियां करवाई जाती हैं जिसमें विद्यार्थी अपने मित्रों के साथ जोड़ियों में सीख सकते हैं।

विद्यार्थियों को प्रोत्साहन -

इस प्रक्रिया में विद्यालय पटल पर हर दिन बेहतर प्रदर्शन करने वाले बच्चों के नाम लिखकर, प्रार्थना सभा में ताली बजाकर, फूल, पेन आदि देकर, कक्षा मॉनीटर बनाकर उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है। विद्यालय में आयोजित किये जाने वाले शैक्षिक और सह-शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन इस प्रकार से किया जाता है कि अधिक से अधिक विद्यार्थियों की सहभागिता हो

तथा पालक उन्हें देख सकें। इन कार्यक्रमों में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत भी किया जाता है। विद्यार्थियों के जीवन कौशलों के विकास के लिए जैसे- छोटे-बड़ों का सम्मान, शिष्टाचार, धन्यवाद, अभिवादन, माफी मांगना मानवीय मूल्य, असहाय की सहायता, प्राणियों के प्रति दयाभाव, ईमानदारी, सच बोलना, मिल बांट कर खाना इन गुणों के विकास के लिए कहानी, प्रसंग, विडियो क्लीपिंग जैसी गतिविधियां कराई जाती हैं। विद्यार्थियों की उपलब्धि हेतु विशेष कक्षाओं का आयोजन किया जाता है जैसे कठिन बिन्दुओं के आधार पर विद्यार्थियों के समूह बनाकर संबंधित कठिन बिन्दुओं पर तैयार वीडियो पाठ का अवलोकन करवाया जाता है । प्रयोग करना, भ्रमण, संदर्भ, सामग्री, पढ़ना, प्रोजेक्ट बनाना और बच्चों द्वारा उन्हें प्रस्तुत करना भी सीखने के महत्त्वपूर्ण पहलू हैं।

बहुकक्षा शिक्षण एवं बहुस्तरीय शिक्षण के दौरान समय अभाव के कारण हम विद्यार्थियों से क्रास चैकिंग भी करवाते हैं। इससे बच्चों में अवलोकन रीडिंग एवं पठन-पाठन की शुद्धता के परीक्षण का कौशल विकसित होता है। उसके बाद हम चैक करते हैं जिससे विद्यार्थियों में एक दूसरे से कमजोरियाँ एवं अच्छाई का भी पता चलता है और साथ ही हमारा समय भी बचता है। विद्यालय मे दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त प्रयास एवं उनके माता पिता से सम्पर्क कर उनको अपने शिक्षित बड़े भाई-बहन, माता-पिता आदि के माध्यम से अधिक प्रयास करने को कहा जाता है। सभी गतिविधियों में सभी विद्यार्थियों की सहभागिता (CWSN) ली गई। स्कूल में विद्यार्थी के लिए सुरक्षित वातावरण तैयार करने के लिए स्टाफ विद्यार्थियों से भावनात्मक दृष्टि से भी जुड़ा, ताकि हर बच्चा शिक्षकों से खुलकर बात कर सके । विद्यार्थियों का दक्षता उन्नयन परिणाम 2017-18, 2018-19, 2019-20, 2020-21 में 95 प्रतिशत रहा।

बाल केबिनेट को सक्रिय करना -

विद्यालय में बाल केबिनेट को सक्रिय करने के लिए बच्चों को उनके कामों की विस्तार से जानकारी दी गई, प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थी बहुत ही छोटे एवं मासूम होते हैं। उनका उत्साह बढ़ाने के लिए हमने प्रत्येक मंत्री की रबर सील बनवाई, बेच बनवाये, टेबल नेम प्लेट बनवाकर बाल कैबिनेट को प्रभावी रूप से सक्रिय बनाया गया। जिससे वे उत्साह पूर्वक अपना कार्य करने लगे और समय-समय पर विभिन्न आयोजनों में उनको सम्मानित भी करवाया जाता है।



बाल केबिनेट की बैठक का आयोजन।

पुस्कालय को शुरू करना -

विद्यार्थी धारा प्रवाह पढ़ें और जो भी पढ़ें उसकी उनको समझ हो इसको ध्यान में रखते हुए पुस्तकालय का भरपूर उपयोग किया। पुस्तकालय की जिम्मेदारी बाल केबिनेट के शिक्षा मंत्री को दी गई। इस कारण यहाँ शिक्षकों का समय भी बच जाता है और विद्यार्थियों में नेतृत्व के गुणों का भी विकास होता है, साथ ही विद्यालय का संचालन भी सुव्यवस्थित रहता है। पुस्तकालय की पुस्तकों में से जो शब्द पढ़ने में कठिनाई होती है उनको लिखकर लाने के कहते हैं, फिर बोर्ड पर उनका अभ्यास करवाते हैं। पुस्तक को एक-एक बच्चे को देकर गतिविधि करवाते हैं जैसे पुस्तक का रंग, आकार, पेपर

क्वालिटी, अक्षरों की बनावट, लेखक का नाम, पुस्तक का नाम, कीमत आदि। पुस्तकों के उपयोग से 95 प्रतिशत विद्यार्थी धारा प्रवाह पढ़ने लगे हैं ।

कक्षा पहली और दूसरी के विद्यार्थियों को भी पुस्तकालय से बरखा सिरीज वाली पुस्तकें दी जाती हैं जिससे विद्यार्थी चित्र देखकर अपनी समझ विकसित कर सकें ।

नवाचार - बेहतर उपस्थिति के नये प्रयोग

(1) स्पीकर एवं व्यायाम के साथ प्रार्थना।

(2) बच्चों के जन्मदिन मनाना।

(3) विद्यार्थियों को ही महापुरूष बनाकर महापुरूषों की जयंती मनाना।

(4) आसपास के वातावरण से जोड़कर शिक्षा ।

(5) सामाजिक त्यौहार मनाने से विद्यार्थियों को विद्यालय की ओर आकर्षित करना।

विगत चार वर्षों से कुछ बच्चे पलायन पर चले जाते थे उनके लिए हमने उनके माता-पिता को समझाया कि शिक्षण सामग्री की व्यवस्था हम करेगें। आप इनको उनकी दादी के पास छोड़ जाओ बाकी का सारा ध्यान हम रख लेगें। इस प्रकार कई विद्यार्थियों को हमने ड्राप आउट होने से बचा लिया ।





कोविड 19 के दौरान - हमारा घर हमारा विद्यालय -

कोविड 19 के दौरान सारे विद्यालय बंद हो गये थे तब हमारा घर हमारा विद्यालय कार्यक्रम के अंतर्गत प्रयास किए। हमने रेडियो स्कूल, डीजीलेप, साप्ताहिक टेस्ट, माता-पिता, समुदाय, वरिष्ठ विद्यार्थियों के सहयोग से विद्यालय के समस्त विद्यार्थियों के अध्ययन सुचारू रूप से बनाये रखा। इसका परिणाम यह रहा कि कोरोना काल 2020-21 में भी हमारी शाला का दक्षता उन्नयन 95 प्रतिशत से उपर रहा।

स्थिरता :

- बालिकाओं के बाल विवाह में कमी आई है। माताएं स्वयं बालिकाओं के कम उम्र में विवाह का विरोध करती है।
- बालिकाएं भी बालकों की तरह पूरा दिन विद्यालय में उपस्थित रहती हैं एवं सभी विद्यालय गतिविधियों में सामान्य रूप से बालकों के साथ भाग लेती हैं।

बदलाव :

- विद्यार्थियों की दर्ज संख्या सन् 2016-17 में 37, सन् 2020-21 में 75 रही। उपस्थिति में 95 प्रतिशत वृद्धि हुई है।
- बच्चों में तर्क शक्ति, कल्पना शक्ति का विकास हुआ है।
- विद्यार्थियों से प्राप्त लर्निंग आउटकम्स से समुदाय की सोच में सकारात्मक बदलाव।
- बालिकाओं की शिक्षा सतत् रूप से जारी है।

उपलब्धियां :

- राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल के मंच पर विद्यालय सिद्धी प्रस्तुतीकरण हेतु हमारे विद्यालय का चयन प्रस्तुतीकरण का अवसर।
- अन्य ब्लाक एवं आसपास के विद्यालयों के शिक्षकों का भ्रमण हमारे विद्यालय में करवाया जाता है।
- STEAM कान्क्लेव में राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल में सहभागिता का अवसर।
- महिला बाल विकास अधिकारी श्रीमती चन्द्रसेना भिडे मेडम द्वारा बल्ब, ट्यूबलाइट एवं राशि रू. 10000/- का चैक प्राप्त हुआ।
- तात्कालिक कलेक्टर श्री कर्मवीर शर्मा द्वारा विद्यार्थियों के लिए पर्याप्त फर्नीचर प्राप्त हुए ।
- समुदाय के सहयोग से बच्चों को मोहनपुरा डेम का भ्रमण का अवसर।
- हमारे विद्यालय के विद्यार्थियों का मॉडल स्कूल में चयन।
- हमारे गांव एवं आसपास के गांव के सभी बच्चों ने प्रायवेट स्कूल छोड़कर सरकारी हमारे विद्यालय में दाखिला लिया। और तो और उन्होंने अपने परिवार के अन्य बच्चों का भी दाखिला हमारे विद्यालय में करवाया है।


म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद्, भोपाल

राजगढ़ विज्ञान मेला

दिनांक : 02 से 05 फरवरी, 2018

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि

श्री / श्रीमति / कु. / डॉ. ममता शर्मा

विद्यालय / महाविद्यालय / विभाग / संस्था प्राथ. विद्यालय कुम रजनाखुरा / खिलचीपुर

ने टी. एल. एम. में भाग लिया एवं चौथा स्थान प्राप्त किया।

हम इनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।

डॉ. नरेन्द्र सिंहरे
परि. प्रधान वैज्ञानिक एवं संयोजक
राजगढ़ विज्ञान मेला

डॉ. आर. के. आर्य
मुख्य वैज्ञानिक एवं समन्वयक
राजगढ़ विज्ञान मेला

प्रमाण पत्र


राज्य शिक्षा केंद्र, भोपाल

शाला-सिद्धि "हमारी शाला ऐसी हो"
"पैपियन शालाओं के अनुभव"

प्रशस्ति-पत्र

राज्य शिक्षा केंद्र पैपियन शाला शासकीय प्राथमिक विद्यालय रूरा नाथ पुरा

विकासखण्ड खिलचीपुर जिला राजगढ़ की

शाला-सिद्धि - "हमारी शाला ऐसी हो" कार्यक्रम अंतर्गत किए गए उत्कृष्ट कार्यों की सराहना करते हुए शाला-प्रमुख, सभी शिक्षकों, शाला प्रबंधन समिति, बाल-कैबिनेट की प्रशंसा करता है।

(आईएस सिसिया जे.पी.)
संचालक
राज्य शिक्षा केन्द्र, मध्यप्रदेश

प्रमाण पत्र

आगामी योजना :

- भावनात्मक सुरक्षा हेतु चिकित्सकों और एन.जी.ओ. (गैर सरकारी संगठनों) से शिक्षकों और विद्यार्थियों को यौन शोषण, शारीरिक शोषण और मादक तत्वों के सेवन के लक्षणों की पहचान करने लिए प्रशिक्षण का आयोजन करना ।
- संस्थान में लैंगिक अपराधों का संरक्षण अधिनियम और संबंधित प्रकाशन संकलित करना और शिक्षकों को उसका अध्ययन करने के लिए प्रेरित करना।
- आवश्यकता की पूर्ति के लिए विद्यालय उपहार योजना का प्रचार-प्रसार करना और उसका लाभ उठाना ।
- विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर मे निरन्तर सुधार करना ।
- 100% STEAM शिक्षा लागू करना। STEAM शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए अतिरिक्त प्रयास करेंगें एवं पाठ्यक्रम की विषयवस्तु को सिखाने के लिए TLM का निर्माण भी STEAM आधारित करना

ममता शर्मा
(प्रधानाध्यापक)
मोबाईल : +917987855548
Email : sharmamamta7575@gmail.com

❑ ❑ ❑

एसएमसी की सहभागिता से बदलाव

समुदाय के सहयोग से बढ़ा नामांकन

शासकीय उत्कृष्ट माध्यमिक शाला नावघाट, हटा

यू-डाईस कोड : 23120404104

- विकासखंड : हटा
- जिला : दमोह
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 4 - अधिगम के लिए समाज व विद्यालय का सहसंबंध

उप डोमेन क्र. 1 - समाज एवं विद्यालय प्रबंधन समिति की सहभागिता

नावों के घाट से प्रसिद्ध नावघाट शासकीय उत्कृष्ट माध्यमिक शाला है, जहां पर समुदाय के सहयोग से नामांकन बढ़ा है। विद्यालय में वर्ष 2014 से 2015 में दर्ज नामांकन 138 था। जो कि वर्ष 2020-2021 में बढ़कर 330 हो गया है। विद्यालय भवन की कमी के कारण अभिभावकों की निरंतर प्रवेश की मांग अनुसार पूर्ति करने में असमर्थ हैं। यह ब्लाक स्तर पर एक मात्र अंग्रेजी माध्यम का विद्यालय है।

पृष्ठभूमि :

सुनार नदी के किनारे स्थित नावों के घाट पर होने के कारण विद्यालय का नाम 'नावघाट' रखा गया। विकासखंड मुख्यालय हटा में स्थित विद्यालय की जिले से दूरी 40 किलोमीटर है। यहाँ पर एक डाकघर, पुलिस थाना एवं अस्पताल है। यहाँ पर लोग दैनिक मजदूरी पर निर्भर हैं। यहाँ पर मुख्यतः कछवाहा, हिन्दू एवं जैन संप्रदाय के लोग निवासरत हैं। बुंदेली क्षेत्र हटा में विद्यालय, विकासखंड का एकमात्र अंग्रेजी माध्यम का विद्यालय है जिसमें विभिन्न जाति, संप्रदाय, संस्कृति वर्ग के बालक एवं बालिकाएं अध्ययन करते हैं। यहाँ पर 17 अशासकीय एवं चार शासकीय विद्यालय स्थित हैं।

समस्या :

- विद्यालय में विद्यार्थियों का नामांकन कम होना एक प्रमुख समस्या थी।

  शासकीय विद्यालय होने के कारण नवीन प्रवेश ही नहीं हो पा रहे थे। शहर में स्थित होना भी एक ध्यान देने योग्य तथ्य हैं। अभिभावकों की शासकीय विद्यालयों के प्रति उदासीन सोच भी एक कारण है। साथ ही साथ शासकीय विद्यालयों का अशासकीय विद्यालयों की तरह सुव्यवस्थित, सुसज्जित अधोसंरचना और आकर्षक वेशभूषा से परिपूर्ण ना होना।

समस्या समाधान की प्रक्रिया :

विद्यालय में गिरती नामांकन की चिंता को लेकर प्रधानाध्यापक द्वारा शिक्षकों, अभिभावकों, एस एम सी, बाल कैबिनेट बैठक का आयोजन किया गया। सर्वसम्मति से गिरते नामांकन के कारणों पर चर्चा की गई, जिसके कारण विद्यार्थी शासकीय विद्यालय के स्थान पर अशासकीय विद्यालयों में प्रवेश ले रहे हैं एवं नवीन प्रवेश भी नहीं ले रहे हैं। उपर्युक्त समस्या समाधान हेतु सर्वसम्मति से संकल्प लिया गया।



एसएमसी की बैठक।

- जिसके समाधान के लिए एसएमसी द्वारा पूर्व प्रचलित गणवेश को परिवर्तित कर आकर्षक नवीन गणवेश को प्रस्तावित कर सर्वसम्मति से लागू करने का निर्णय लिया गया। जिससे आकर्षक पोशाक के साथ टाई, बेल्ट, बेच, जूते, मोजे, ब्लेजर अनिवार्य किया गया। जिसकी पीटीएम में स्वीकृति मिली।
- विद्यालय में सीमित ग्रांट के कारण, सीमित संसाधन होने से शिक्षकों एवं एस.एम.सी पालकों के सहयोग से ओएनजीसी द्वारा विद्यार्थियों के लिए फर्नीचर, प्रोजेक्टर, एसबीआई बैंक द्वारा सुरक्षित जल हेतु आरो फिल्टर एवं कंप्यूटर प्रिंटर तथा अभिभावकों द्वारा शिक्षण कक्षा में हवा हेतु पंखों को प्रदान किया गया। समुदाय के सहयोग से कक्षा शिक्षण सुगम एवं आनंददायक बना।



प्रोजेक्टर के माध्यम से शिक्षण।



समुदाय से प्राप्त आरओ द्वारा शुद्ध पेयजल।

- प्रार्थना सभा को संगीतमय प्रार्थना के अभ्यास से आकर्षक बनाया गया।
- विद्यालय में प्रमुख दिवसों जैसे- गणतंत्र दिवस, स्थापना दिवस इत्यादी पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों को प्रारंभ किया गया।
- विद्यालय में गणित ओलंपियाड, साइंस ओलंपियाड, हिंदी ओलंपियाड, कालिदास संस्कृत प्रतियोगिता, मोगली उत्सव, राष्ट्रीय बाल रंग महोत्सव, इंस्पायर अवार्ड, नेशनल मींस कम मेरिट इत्यादि गतिविधियों का संचालन प्रारंभ किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने राज्य स्तर तक प्रतिनिधित्व किया।



संगीतमय प्रार्थना का अभ्यास करते हुए विद्यार्थी।



राज्य स्तर ओलम्पियाड प्रतियोगी का सम्मान।

- मुख्य द्वार को आकर्षक रंगों द्वारा सुसज्जित किया गया तथा दीवारों एवं कक्षाओं को विभिन रंगों से पोतकर कोटेशन लिखे गए।
- कक्षा शिक्षण को अब रुचिकर गतिविधियों के माध्यम से कराया जा रहा है जिससे कक्षा में विद्यार्थियों की उपस्थिति सदैव बनी रहती है।

उपर्युक्त समस्त प्रयासों एवं उपलब्धियों को समाचार पत्रों के माध्यम से प्रसारित एवं प्रचारित किया गया।

बदलाव :

- समाचार पत्रों एवं पालकों के माध्यम से विद्यालय की उपलब्धियों की जानकारी समुदाय में खुशबू की तरह फैली और ऐसी फैली कि नामांकन 3 वर्षों में 138 से विद्यालय की अधिकतम क्षमता 330 तक हुआ। इसके बाद तो क्षमता से अधिक नामांकन की स्थिति बनी। आज स्थिति यह है कि विद्यालय स्थान अभाव के कारण और अधिक प्रवेश देने में असमर्थ है।
- समुदाय में विद्यालय में नामांकन को लेकर रुचि बढ़ी है।

नामांकन की बढ़ती स्थिति को देखते हुए शासन से भवन की मांग की गई है। भवन को ऊपर स्टोरी निर्माण हेतु विद्यालय एसएमसी द्वारा आवेदन दिया गया है। विद्यालय संभाग स्तर पर सबसे आगे है। राज्य में भी सबसे आगे प्रथम स्थान पर आने के लिए प्रयासरत एवं प्रतिबद्ध है। अभी यह पड़ाव है, मंजिल नहीं है। प्रयास जारी है।

गंगा की तरंगों की तरह कल-कल करती हुई सुनार नदी की लहरों को निहारता यह 327 नामांकन (वर्ष 2020-2021) वाला विद्यालय समुदाय एवं एसएमसी के साथ उत्कृष्ट शिक्षण में सतत आगे बढ़ रहा है। अब विद्यालय नामांकन के लिए मोहताज नहीं है। यही विद्यालय में नामांकन के बढ़ते कदम की सफलता की कहानी है।

स्थायित्व :

- उपरोक्त किये गए प्रयासों के प्रतिफल निरंतर बने हुए हैं।
- नामांकन स्थिर बना हुआ है।
- वर्ष -प्रतिवर्ष विद्यालय में नामांकन की माँग बढ़ रही है।

निष्कर्ष :

विद्यालय परिवार एवं समुदाय के सहयोग से विद्यालय नित नए कीर्तिमान गढ़ रहा है। विद्यालय में होने वाले कार्यक्रमों में समुदाय के लोग भी बढ़-चढ़कर हिस्सेदारी लेते हैं। साथ ही साथ आवश्यक सहयोग भी प्रदान करने को तत्पर रहते हैं।

आगामी योजना :

- नामांकन मांग पूर्ति के लिए शासन से भवन बनवाना।
- समुदाय के सहयोग से शिक्षण गतिविधियों को रुचिकर बनाना।
- पुस्तकालय की स्थापना करना।

रामस्वरूप चौरसिया
(प्रधानाध्यापक)
मोबाईल : 9755403444

❑ ❑ ❑

विद्यालय में सी डब्लूएसएन विद्यार्थियों का समावेशन

दिव्यांग विद्यार्थियों का समावेशन

शासकीय माध्यमिक विद्यालय क्रमांक 3, देवास

यू-डाईस कोड : 23230136505

- विकासखंड : देवास
- जिला : देवास
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 3 - विद्यार्थी संकेंद्रित करना

उप डोमेन क्र. 4 - विद्यार्थियों की प्रतियोगिताओं में सहभागिता

दिव्यांग बच्चे शिक्षा की मुख्य धारा से दूर थे। उनकी समस्याओं का समाधान कर उन्हें विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में रुचि उत्पन्न हुई और राष्ट्रीय मीन्स कम मेरिट परीक्षा में सहभागिता के माध्यम से उनका चयन हुआ।

पृष्ठभूमि :

शासकीय माध्यमिक विद्यालय क्रमांक - 3 देवास जिला मुख्यालय पर देवास, शहर के पूर्वी छोर पर स्थित है। यह विद्यालय वर्ष 1960 में स्थापित हुआ। आजादी के पश्चात् शहर की किसी शासकीय भवन की पहली ऐसी बिल्डिंग बनी थी, जिसमें सीमेंट क्रांकीट का उपयोग किया गया, इसी कारण शहर वासी इस विद्यालय को नई बिल्डिंग के नाम से पुकारते हैं। वर्ष 2008 में इसमें विद्यार्थियों की दर्ज संख्या मात्र 48 थी। वर्ष 2008 में प्रधानाध्यापक के रूप में विद्यालय का प्रभार लेने के बाद अपनी दिव्यांगता को पीछे छोड़ते हुए विद्यालय स्टॉफ को साथ लेते हुए विद्यार्थी संख्या में वृद्धि का प्रयास किया जाता रहा। परिणाम स्वरूप वर्ष 2012 तक विद्यालय में कक्षा 6 से 8 तक दर्ज विद्यार्थी संख्या 48 से बढकर 112 तक पहुंच गई।

सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत अगस्त 2012 में आवासीय बालक छात्रावास शासकीय मा.वि. क्रमांक - 1, आलोट पायगा देवास में प्रारंभ किया गया। शहरी गरीब, प्लेटफॉर्म चाइल्ड, स्ट्रीट चाइल्ड, पन्नी बीनने वाले, बिना मां बाप के बच्चे, एकल अभिभावक जैसे बालकों के लिए एक 100 सीटर छात्रावास प्रारंभ किया गया। अन्य छात्रावासों की अपेक्षा इस छात्रावास की विशेषता थी कि इसमें कक्षा 1 से 8 तक के विद्यार्थी को प्रवेश दिया गया है।

समस्या :

अक्टूबर 2015 में दिव्यांग विद्यार्थी का छात्रावास प्रारंभ हुआ। इस छात्रावास में तीन श्रेणी के विद्यार्थी मूकबधिर, दृष्टिहीन और मंदबुद्धि विद्यार्थी को रखने की शुरुआत हुई। दिव्यांग विद्यार्थियों की निम्नांकित समस्याएं चिन्हित की गई।

- दिव्यांग बच्चों का शिक्षा की मुख्य धारा में समावेशन करना।
- दिव्यांग बच्चों की उपयुक्त तकनीक (Appropriate teachnology) को चिन्हिंत कर सहायक उपकरण (Assistive devices) सुनिश्चित करना।
- कक्षा स्तर अनुरूप पाठ्यक्रम को दिव्यांग बच्चों के अनुरूप अनूकूलित (परिवर्तित) करना।

समस्या समाधान की प्रक्रिया :

विद्यालय में असामान्य विद्यार्थी के साथ सामान्य विद्यार्थी को बिठाकर अध्यापन कार्य कराया जाना प्रारंभ किया गया। इन विद्यार्थी के आने से प्रारंभ में विद्यालय के अन्य विद्यार्थियों में भय उत्पन्न हुआ। उन्होंने अपने अभिभावकों को इस प्रकार बताया कि उनके विद्यालय में पागल विद्यार्थियों को प्रवेश दिया गया है। इस बात की जानकारी जब विद्यालय स्टाफ को प्राप्त हुई तो उन्होंने विद्यार्थी को समझाना प्रारंभ किया। उन्हें विश्वास दिलाया कि यह विद्यार्थी आपको कोई हानि नहीं पहुंचाएंगे। आप इन्हें अपने मित्रवत व्यवहार से अपने साथ बैठाएं, अगर कोई समस्या आएगी तो उसे हल किया जाएगा। अगर इनका कोई व्यवहार आपको अच्छा नहीं लगता है तो हम इन्हें समझाने का प्रयास करेंगे। इस प्रकार इनके साथ हमने कार्य प्रारंभ किया।

धीरे - धीरे सभी विद्यार्थियों में सहयोग की भावना पनपने लगी। शिक्षक ने भी रणनीति के तौर पर दिव्यांग विद्यार्थी को स्थान बदल-बदलकर बैठाना शुरू किया। जिससे वह सभी के साथ घुल मिल जाएं।

इन विद्यार्थी के साथ कार्य करने में कई समस्याएं भी आती थीं। सामान्य विद्यार्थी व दिव्यांग विद्यार्थी के बीच में सामंजस्य बिठाना व कई बार दिव्यांग विद्यार्थी, विशेषकर मूक-बधिर विद्यार्थी का व्यवहार समझ से परे होता था। मूक-बधिर विद्यार्थी को समझ में आ रहा है या नहीं इस को परखना मुश्किल होता है। शिक्षक साथियों को मंदबुद्धि विद्यार्थी को बार-बार कक्षा

में बिठाने में समस्याएं उत्पन्न होती थी। मूक-बधिर विद्यार्थी को क्या याद है, क्या याद नहीं इसके लिए बार-बार नोट-बुक पर लिखकर पूछना पड़ता था। इनके अंदर किस प्रकार की प्रतिभा छुपी हुई है, उसे कैसे बाहर निकाला जाए इस पर मंथन किया गया। जिससे धीरे-धीरे यह सभी विद्यार्थी शिक्षकों से जुड़ते चले गए। मानसिक रूप से शिक्षकों एवं विद्यार्थी में धीरे-धीरे इन विद्यार्थी से लगाव बढ़ता चला गया।

भवन अनुरक्षण एवं अधिग्रहण -

विद्यार्थियों के लिए, विद्यालय भवन के चार पुराने कमरों, शाला परिसर तथा विद्यालय से लगा हुआ लोक निर्माण विभाग के पुराना जीर्ण शीर्ण हॉल का रिनोवेशन करवाया गया। उसे तात्कालीन मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत देवास और शिक्षा विभाग म.प्र.शासन के माध्यम से विद्यालय को सौंपा (अधिग्रहण) गया।



लोकनिर्माण विभाग के हॉल की पूर्व स्थिती ।



रिनोवेशन के पश्चात हॉल की स्थिति।

प्रार्थना सभा का आयोजन -

प्रार्थना सभा में सबसे पहले 2016 में माइक एवं साउंड सिस्टम की व्यवस्था की गई। इसके पश्चात एक ढोलक की व्यवस्था की गई। 2 दृष्टिहीन बच्चे बहुत अच्छा गाते थे। यह दोनों दृष्टिहीन बच्चे अजय पाल तथा कृष्ण पाल उस समय विद्यालय में अध्ययनरत थे तथा दोनों बहुत अच्छा गाते थे। कृष्णपाल बहुत अच्छी ढोलक बजा लेता था। इन विद्यार्थियों को आगे बढ़ाते हुए हमारे द्वारा इन्हें प्रार्थना सभा में मंच पर प्रतिदिन बुलाया जाने लगा। दोनों भाइयों की प्रैक्टिस को देखते हुए धीरे-धीरे हारमोनियम कांगो एवं अन्य ढोलक तथा साथ में झांझ,मंजीरे की व्यवस्था की गई। इनके साथ सामान्य विद्यार्थियों को भी बैठाकर प्रैक्टिस करवाई जाने लगी। संगीत शिक्षक की व्यवस्था छात्रावास द्वारा कर दी गई थी। छात्रावास से नियुक्त संगीत शिक्षक के प्रतिदिन संगीत सिखाने से विद्यार्थी पूरी लय एवम ताल से संगीतमय प्रार्थना



दिव्यांग विद्यार्थी के नेतृत्व में शाला की प्रार्थना सभा का आयोजन।



कतारबद्ध होकर संगीतमय प्रार्थना करते समस्त विद्यार्थी।

करने लगे, इसके साथ देशभक्ति गीत, कहानी, कविता को भी प्रार्थना सभा में जोड़ा गया। समय अनुकूल बच्चों से सामान्य ज्ञान भी मंच पर पूछा जाने लगा व धीरे-धीरे मौखिक गणित व अन्य विषय अनुकूल गतिविधियां भी प्रार्थना सभा में की जाने लगी। इससे विद्यार्थियों में अधिक रुचि बढ़ी, मंच पर संचालन भी विद्यार्थियों के द्वारा ही करवाया गया। विद्यार्थियों में मौखिक गणित एवं सामान्य ज्ञान पूछने से विद्यार्थियों की रुचि भी बढ़ी तथा विद्यार्थी नियमित रूप से 10 से 15 मिनट खड़े रहकर प्रार्थना सभा में जवाब देने लगे। विद्यार्थियों की बढ़ती हुई रुचि को देखकर प्रार्थना सभा में यह सारी गतिविधियां वर्तमान में भी संचालित हो रही है, विद्यार्थी इसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने लगे। इससे एक अच्छी परिस्थिति निर्मित हो रही है। विद्यालय के आसपास का समुदाय जो देखता है, वह भी समय-समय पर हमें मार्गदर्शन देता है।

दिव्यांग विद्यार्थी की उपयुक्त तकनीक (Appropriate teachnology) -

दिव्यांग विद्यार्थी के क्षेत्र में कार्य करने वाले स्वयंसेवी संस्थाओं को भी जोड़ा गया। मोबाइल स्रोत सलाहकार को बुलाकर उनकी आवश्यकताओं को पता लगाया। छात्रावास में रहने वाले विशेष आवश्यकताओं वाले विषय शिक्षक एवं साइन लैंग्वेज पढ़ाने वाले शिक्षकों की सहायता भी ली गई। शिक्षकों का विशेष आवश्यकताओं वाले विद्यार्थी को पढ़ाने सम्बन्धी प्रशिक्षण आयोजित करवाया गया। इससे एक नई उम्मीद जागृत हुई तथा शिक्षक धीरे-धीरे इन विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए और अधिक सोचने लगे।



दीवार पर चित्रकला करते हुए दिव्यांग विद्यार्थी।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में समावेशन -

धीरे-धीरे शिक्षकों के बढ़ते लगाव व इन विद्यार्थियों का शिक्षकों से लगाव से शिक्षकों ने दिव्यांग विद्यार्थी के साथ सामान्य विद्यार्थी को भी प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे राष्ट्रीय मींस कम मेरिट परीक्षा, मॉडल स्कूल चयन परीक्षा, उत्कृष्ट विद्यालय चयन परीक्षा की तैयारी, जो कक्षा आठवीं के विद्यार्थी करते थे इन विद्यार्थी को भी उसमे सम्मिलित करना शुरू किया। इस प्रकार राष्ट्रीय मींस कम मेरिट परीक्षा में वर्ष 2016 में 2 विद्यार्थी का चयन हुआ, वर्ष 2017 में 3 विद्यार्थी का चयन हुआ, वर्ष 2018 में 5 विद्यार्थी का चयन हुआ तथा वर्ष 2019 में 19 विद्यार्थी का चयन हुआ। वर्ष 2018 के राष्ट्रीय मींस कम मेरिट

परीक्षा में दो मूक-बधिर विद्यार्थी अमन और सूरज के चयन ने तो जैसे अन्य विद्यार्थी में इस परीक्षा की तैयारी हेतु एक मानसिक बल प्रदान किया। इन विद्यार्थियों को मिलने वाले मीडिया कवरेज, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में न्यूज़ आने से मूक-बधिर विद्यार्थियों के साथ ही साथ अन्य विद्यार्थियों ने भी इस परीक्षा की तैयारी जून-जुलाई 2019 से ही प्रारंभ कर दी।



- **राष्ट्रीय मीन्स कम मेरिट परीक्षा 2019 में उत्तीर्ण विद्यार्थी।**

बदलाव :

विद्यालय में समाधान की प्रक्रिया के उपरांत निम्नांकित बदलाव परिलक्षित हुए -

- राष्ट्रीय मीन्स कम मेरिट परीक्षा में दिव्यांगों का चयन।
- विद्यालय की प्रार्थना सभा का दिव्यांग विद्यार्थियों द्वारा नेतृत्व।
- चित्र कला में दिव्यांग विद्यार्थी बने सभी विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायक।

स्थायित्व :

- विद्यार्थियों में प्रवेश परीक्षा राष्ट्रीय मींस कम मेरिट के लिए रुझान है।
- विद्यार्थी नियमित रूप से चित्र कला एवं प्रार्थना सभा में भाग लेते हैं।

आगामी योजना :

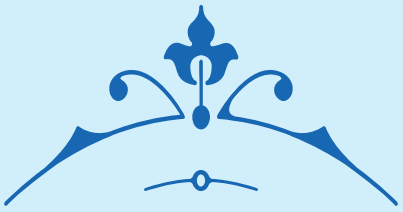
- विद्यार्थियों को स्वंय सेवी संस्थाओं के माध्यम से मोबाईल डिवाईस (Mobile Device) उपलब्ध कराना एवं इनके उपयोग के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था करना।
- विज्ञान विषय में विद्यार्थियों की विशेष रुचि जागृत करने के लिए विज्ञान कॉर्नर की स्थापना करना एवं इंस्पायर अवार्ड के लिए अच्छे मॉडल बनाने के लिए प्रेरित करना।

विद्यालय में होने वाली विभिन्न गतिविधियों को देखने के लिए यू-ट्यूब चैनल पर MS No. 3 School Dewas M.P. को देखे ।

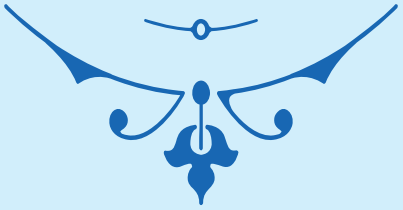
URL- https://www.youtube.com/results?search_query=ms+nox+school+dewas

सुरेश कुमार ठाकुर
(प्रधानाध्यापक)
मोबाईल : 9907829624
Email : sthakur0147@gmail.com

❑ ❑ ❑



नवाचार



म्यूजियम एवं अन्य नवाचारी शिक्षण

शासकीय माध्यमिक शाला, फूडरा

यू-डाईस कोड : 23330102604

- विकासखंड : आष्टा
- जिला : सीहोर
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 1 – विद्यालय नेतृत्व का अभ्यास एवं दृष्टिकोण

उप डोमेन क्र. 3 – विद्यालय में नवाचारों का प्रयोग

विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए शिक्षक विद्यालयों में हरसंभव प्रयास करते हैं। ऐसे ही एक शिक्षक की कहानी हम आगे पढ़ने जा रहे हैं जिन्होंने एक बहुत ही अनोखा प्रयोग अपने विद्यालय में एक संग्रहालय स्थापित कर किया। जिससे न सिर्फ बच्चों में अपनी संस्कृति की तरफ झुकाव बढ़ा बल्कि उनमें विभिन्न अवधारणाओं की भी समझ गहरी हुई।

पृष्ठभूमि :

मैं जिस विद्यालय के नवाचार की कहानी लिख रहा हूँ वह मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से राजकीय मार्ग, स्टेट हाईवे इन्दौर पर स्थित मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग के होटल की उत्तर दिशा में 2.5 किलोमीटर पर फूडरा नामक ग्राम में स्थित है। यह ग्रामीण क्षेत्र है। विद्यालय में कक्षा 1 से 8 तक वर्तमान में 245 विद्यार्थी नामांकित हैं तथा 8 शिक्षक कार्यरत हैं। शाला में प्रत्येक कक्षा के लिए कक्ष हैं। शाला की स्थापना सन 1955 की है। इसमें कई पेड़ पौधे हैं। कुछ पेड़ों की आयु 50-60 वर्ष की हो चुकी है। शाला बाउण्ड्री वाल से पूरा क्षेत्र सुरक्षित है।

सामाजिक दृष्टि से इस ग्राम में कृषि कार्य एवं पशुपालन किया जाता है। गाँव की जनसंख्या लगभग 2000 है। शिक्षा के क्षेत्र में देखें तो यह एक पिछड़ा गाँव है, इसलिए लोग खेती, मजदूरी का कार्य करते हैं। कुछ ही लोग सरकारी नौकरी में हैं। यहाँ भाषा हिन्दी खड़ी बोली है, जिसे मालवी भाषा भी कहा जाता है। इस गांव में हिन्दू व मुस्लिम धर्म के लोग निवास करते हैं, जो आपस में प्रेम व सौहार्द्र भाव से एक दूसरे के सुख-दुख में एक साथ रहते हैं । किसी भी धर्म का त्यौहार साथ मिलकर प्रेम सद्भावना के साथ मनाते हुए एक दूसरे के धर्म का सम्मान करते हुए एकता की मिसाल इस गांव में देखी जा सकती है। यहां मुख्य त्यौहार होली, ईद, दीवाली, दशहरा आदि हैं।

पुन : मैं आपको उस विद्यालय में ले चलता हूँ एवं विभिन्न प्रकार की होने वाली गतिविधियों से परिचित करवाता हूँ। विद्यालय में बच्चों की बाल सभा, खेलकूद, चित्रकला, पर्यावरण प्रदर्शनी आदि गतिविधियाँ प्रतिदिन करवायी जाती हैं। यहाँ के पालक कम पढ़े लिखे होकर भी अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरूक हैं, वे हमेशा विद्यालय विकास हेतु तत्पर रहते हैं। जन सहयोग से पालकों द्वारा शाला में बच्चों को बैठने के लिए फर्नीचर भी उपलब्ध करवाया है एवं स्वच्छ पीने के पानी हेतु ट्यूबवेल लगवाने में भी सहयोग दिया गया, जिसमें पानी की मोटर भी लगी है।

समस्या :

- शालेय गतिविधियों में विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति को स्थान नहीं।

समस्या समाधान की प्रक्रिया :

अक्सर शाला में देखा जाता है कि सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में बोलने का अवसर शिक्षकों के पास सबसे अधिक होता है। शिक्षक कक्षा के अंदर अपनी सत्ता को पूरी तरह बनाए रखने का प्रयास करते हैं और बच्चों द्वारा की गई गलतियों को स्वयं ही सही कर देते हैं। लेकिन आजकल शिक्षा की रचनावादी प्रक्रिया में सीखने- सिखाने की प्रक्रिया और अभ्यास पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है न की गलतियों को सुधारने पर और यह कार्य मांग करता है कक्षा में खुले संवाद की। इसी आशा के साथ मैंने इन प्रक्रियाओं को अपनी शाला में लागू करने का सोचा। जब इस तरह की पहल मैंने अपनी कक्षा में की तो खुद की आँखों के सामने अपनी सिखाने की प्रक्रिया की कमी आ गई। मैंने पाया की सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों की सहभागिता, सवाल करने के अवसर, चर्चा करने के अवसर, उस प्रक्रिया द्वारा खुद कुछ समझ बनाने के अवसर बहुत कम हैं। इन्हीं सभी प्रक्रियाओं में शामिल रहते हुए बच्चों ने एक चुप्पी साध ली है। अब वे शिक्षक का कुछ बताने या कुछ सिखा देने के लिए इंतजार करते हैं। लेकिन इसके चलते कक्षा में उनकी सहभागिता निम्न है। इसी कमी को पूरा करने के लिए मैंने दो रणनीतियां बनाई। पहली थी बच्चों के बाल-कैबिनेट को सशक्त करना और दूसरा शाला में एक म्यूजियम /संग्रहालय विकसित करना।

बाल कैबिनेट को सशक्त करने के लिए सबसे पहले मैंने विद्यार्थियों को बड़े-बड़े महापुरूषों की जीवनी के बारे में बताया एवं गांव की चौपाल, एस.एम.सी. की बैठक व पंचायत की ग्रामसभा आदि के बारे में बताया एवं विद्यार्थियों को चित्रों के माध्यम से दिखाया। फिर शाला बाल केबिनेट व बालसभा में पहले उन बच्चों को बोलने के लिए खड़ा किया जो थोड़ा बहुत बोल लेते थे। ऐसे बच्चों को टॉफी, चॉकलेट का पुरस्कार देकर उसकी तारीफ की जिससे बच्चों में बोलने का उत्साह पैदा हुआ। बच्चे जब धीरे-धीरे बोलने लगे व उनकी झिझक दूर होने लगी तब मैंने बच्चों को लोकतांत्रिक प्रक्रिया में नेताजी द्वारा विधानसभा, लोकसभा में बोले जाने वाले चित्र दिखाकर बाल केबिनेट की बैठक करने पर बच्चों को तैयार किया। जिसमें बच्चों ने बहुत ही सुन्दर चरित्र चित्रण किया।

बाल केबिनेट की बैठक का आयोजन करने हेतु मैंने शाला प्रधान से अनुमति लेकर संकुल स्तर के जनशिक्षक एवं खण्ड स्तर से बी.ए.सी. आदि अधिकारियों को भी बैठक में आमंत्रित किया। इस प्रकार बोलने वाली समस्या जो बच्चों में थी उससे उनको ऊपर उठाया।

इसी कड़ी में मैंने एक दूसरा उपाय ढूंढ़ा कि बच्चों को पुरानी वस्तुओं के नाम व उनके उपयोग के बारे में कैसे जानकारी हो । इसके लिए मैंने शाला भवन के एक कक्ष में ग्राम से व आसपास के लोगों से पुरानी वस्तुओं को खोज कर एकत्र किया जिनका उपयोग आज के समय में लगभग बंद हो गया है। जिनके बारे में बच्चे बिलकुल भी नही जानते है। उन वस्तुओं के नाम लिखकर तथा उनके उपयोग के बारे में बुजुर्ग लोगों से पूछकर लिखा कि ये वस्तुएं पुराने समय में इस प्रकार काम आती थी। जैसे- पत्थर की चक्की, चिमनी, पेवली, बोल्का, कृषि से संबंधित हथियार व उपकरण। इन सभी को एक स्थानीय संग्रहालय का रूप देकर शाला में संरक्षित किया हुआ है। इस नवाचार में न केवल विद्यार्थियों से वस्तुओं के उपयोग पर बातचीत हुई, बल्कि उन वस्तुओं के विभिन्न आयामों को भी छुआ गया। जैसे : वह वस्तु किस चीज से बनाई गई है, उसमें इस्तेमाल होने वाले सिद्धांत, उसका आर्थिक मूल्य आदि। कहने का आशय यह है कि संग्रहालय का उपयोग करते हुए विभिन्न शिक्षण बिन्दुओं को छुआ गया।



संग्रहालय का चित्र।

इस अभिनव नवाचार की खबर जब एस.डी.एम. महोदया आष्टा को लगी तो स्वयं आकर संग्रहालय का निरीक्षण भी किया। आज मेरे छात्र इस संग्रहालय के माध्यम से पुरानी वस्तुओं के नाम व उनके उपयोग के बारे में अच्छे से जानने लगे है।

बदलाव :

इन गतिविधियों को करवाने से बच्चों में निम्न स्थिर बदलाव देखने में आए -

- बच्चे अब स्वतः शाला की विभिन्न गतिविधियों में जैसे बालसभा, खेलकूद कक्षा में अपनी बात बोलना, खुद को किसी के भी सामने अभिव्यक्त कर पाना आदि अच्छे से करने लगे।
- संग्रहालय के नवाचार से न केवल बच्चों ने पुराने समय में इस्तेमाल होने वाली वस्तुओं के बारे में जाना और अभिव्यक्त किया, बल्कि धीरे-धीरे वह नवाचार पाठ्यक्रम की विभिन्न अवधारणाओं को समझाने में भी काम आने लगा।

इस प्रकार इन नवाचारों से बच्चों को फायदा होने के साथ-साथ शाला को भी जो लाभ हुआ वह यह कि अशासकीय शालाओं से पालक अपने बच्चों को शासकीय शाला में दर्ज करवाने लगे तथा जो बच्चे पूर्व से दर्ज थे उनकी उपस्थिति भी बढ़ी एवं उनका शाला में ठहराव के साथ-साथ शाला के प्रति उनका आकर्षण बढ़ा। इन सब नवाचारों से मेरी शाला में वर्तमान में 250 बच्चे दर्ज है।

आगामी योजना :

- संग्रहालय को विभिन्न विषयों से जोड़कर पढ़ाने की योजना है।
- बच्चों को भविष्य में संगीत शिक्षा देने पर कार्य योजना बनाने पर विचार प्रस्तावित है।

रामचरण मालवीय
(प्रधानाध्यापक)
मोबाईल : 9425689057
संकलनकर्ता
कल्याणसिंह परमार
(उच्च श्रेणी शिक्षक)
मोबाईल : 9827358427

❑ ❑ ❑

शून्य निवेश पर आधारित, नवाचार के अंतर्गत

शासकीय प्राथमिक विद्यालय, नांदासुरा

यू-डाईस कोड : 23220714701

- विकासखंड : शुजालपुर
- जिला : शाजापुर
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 3 - विद्यार्थी संकेन्द्रित करना

उप डोमेन क्र. 3 - विद्यार्थियों की अधिगम उपलब्धि

इस कहानी में शिक्षक ने बच्चों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए बैग लेस स्कूल की परिकल्पना करते हुए नवाचार किया है। जिससे बच्चों की अकादमिक गुणवत्ता में काफी वृद्धि हुई है। इस नवाचार की आसपास सभी जगह एवं राष्ट्रीय स्तर पर भी सराहना की गई है।

पृष्ठभूमि :

यह गांव शुजालपुर शहर से 7 कि.मी. दूर स्थित है। गांव पूर्ण ग्रामीण परिस्थितियों में रचा बसा है। ग्राम नांदासुरा में कृषक और कृषक मजदूर निवास करते हैं। गांव में सामान्य वर्ग, पिछड़ा वर्ग, अ. जाति के लोग ही निवास करते हैं। गांव पूर्णतः हिन्दू परंपरा और संस्कारों से सुजज्जित है। यहां मालवी भाषा का प्रयोग किया जाता है। ग्राम के विद्यालय द्वारा आसपास एवं गांव में रहने वाले सभी सामाजिक लोगों से सम्पर्क स्थापित कर उनका सहयोग प्राप्त किया जाता है। विद्यालय द्वारा आयोजित सांस्कृतिक गतिविधियों में उनको आमंत्रण देना व सहयोग प्राप्त करना एवं विद्यालय संबंधी शासन की योजनाओं की जानकारी देना और उसका लाभ दिलवाना। शासन की योजनाओं में सामाजिक लोगों को सहयोग के लिए प्रेरित करना। समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति कृषि तथा कृषि मजदूरी पर आधारित है। गाँव के 50 प्रतिशत व्यक्तियों की आय कृषि से तथा 50 प्रतिशत व्यक्तियों की आय कृषि मजदूरी से है। कृषक वर्ग की आय 5 लाख वार्षिक से कम तथा कृषक मजदूर की आय 1 लाख से कम है। ग्राम में शासकीय प्राथमिक विद्यालय के अतिरिक्त कोई दूसरा निजी व शासकीय संस्थान नहीं है यहां शुजालपुर शहरी क्षेत्र के निवासियों के लिए पीने के पानी के सरंक्षण हेतु डेम बना हुआ है। जो उसका परिचायक है। और साथ ही अब बैगलेस स्कूल भी उसमें जुडता हुआ दिखाई दे रहा है ।

मेरी नियुक्ति इस शाला में दिनांक 06/09/2007 को हुई। मेरे द्वारा 07/09/2007 को शाला में पदभार ग्रहण किया गया। शाला की व्यवस्थाओं को समझने में मुझे दो चार महीनों का समय लगा। उस समय शाला में एक भी बच्चा शाला गणवेश में नहीं आता था। 1-2 बच्चे ही शाला में स्नान कर व्यवस्थित आते थे। बाकी सब विद्यार्थी ग्रामीण परिवेश एवं परिस्थिति से प्रभावित थे। शिक्षा का स्तर विद्यालय में सभी विषयों में शून्य पर था। स्थिति यह थी कि पांचवी के किसी भी बच्चे को 100 तक की गिनती भी नहीं आती थी और हिंदी में किसी को पूर्ण हिंदी वर्णमाला के पूरे क्रम से वर्ण भी नहीं आते थे। मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि कहां से पढ़ाना प्रारंभ करूं और क्या पढ़ाऊँ कैसे पढ़ाऊँ। मेरे द्वारा शाला में पढ़ाया जाता था। परंतु समझ नहीं आता था कि ऐसा मैं क्या बच्चों को सिखा दूं कि बच्चा शिक्षा संबंधी सब सीख जाए। मेरे द्वारा इस विषय पर हमारे शाला प्रभारी से भी विचार विमर्श किया गया। मैनें सर से पूछा कि ऐसा क्या करें जिससे बच्चे सब सीख जाए ? उन्होंने कहा बच्चों को पढ़ाओ। बात वहीं आ गई क्या पढ़ाऊँ कैसे पढ़ाऊँ कहां से पढ़ाऊँ कुछ समझ में नहीं आ रहा था। मुझे प्रायमरी के बच्चों को पढ़ाने का बिल्कुल भी अनुभव नहीं था। हमारे शाला प्रभारी मध्याह्न भोजन एवं शासन की व्यवस्थाओं के कार्यों की जानकारी बनाने में लगे रहते थे। और समय निकालकर रेडियो से लर्न बाय फन एवं झिलमिल को जरूर सुनाते व समझाते थे। परंतु किसी भी विषय का मूल आधारित ज्ञान नहीं दिया जाता था। मेरे द्वारा समय-समय पर जो समझ में आता उसे बुलाता जाता और पढ़ाता जाता। उससे हमें यह लाभ हुआ कि बच्चों को टूटी-फूटी ही सही पर हिंदी वर्णमाला व गिनती का अभ्यास दिखाई देने लगा था। सत्र 2008 में दक्षता संवर्धन कार्यक्रम आया, जो मेरे लिए बच्चों को शिक्षा देने में वरदान साबित हुआ। इसमें जो 5 स्तर को दिया गया था। उनके शब्दों को रटाने की अपेक्षा उन शब्दों को वास्तविक रूप से पढ़ाने की पद्धति पर ध्यान दिया। जिसमें मुझे सफलता मिली। यही मेरी मजबूती में सहायक सिद्ध हुई। और मैंने कक्षा दूसरी के कुछ बच्चों को उनकी योग्यता अनुसार अपने -अपने स्तर से हिंदी पढ़ना सिखा लिया। जिससे मेरा आत्मविश्वास धीरे-धीरे हिंदी पढ़ाना सिखाने में बढ़ता गया। और मैं अपने प्रयास में सफल रहा और एक दो बच्चों को हिंदी पढ़ना सिखाकर हमने कुछ बच्चों को स्तर 2 से 3 पर ला दिया।

सत्र 2009-2010 में मेरे द्वारा सिखाने हेतु जो पद्धति पूर्व में अपनाई गई थी। उसे इसी सत्र में विद्यालय प्रारंभ होते ही आरंभ कर दिया गया और विद्यार्थी भी शिक्षा की योग्यता अपने में बढ़ती देख स्कूल में आने लगे। इसी के साथ हमारे द्वारा विद्यालय में सभी विद्यार्थियों से शाला की गणवेश के लिए बोला जाता और उनके पालकों को भी बार-बार बोलते रहते थे। शनैः शनैः हमें उसमें सफलता मिली और 2014-2015 सत्र में हमने गणवेश एक रूपता को प्राप्त कर लिया था। इसी प्रकार हमें कुछ सफलताएं सत्र 2010-11 में, कुछ सफलता 2011-12 में, कुछ सफलता 2012-13 में और कुछ सफलता 2013-2014 में

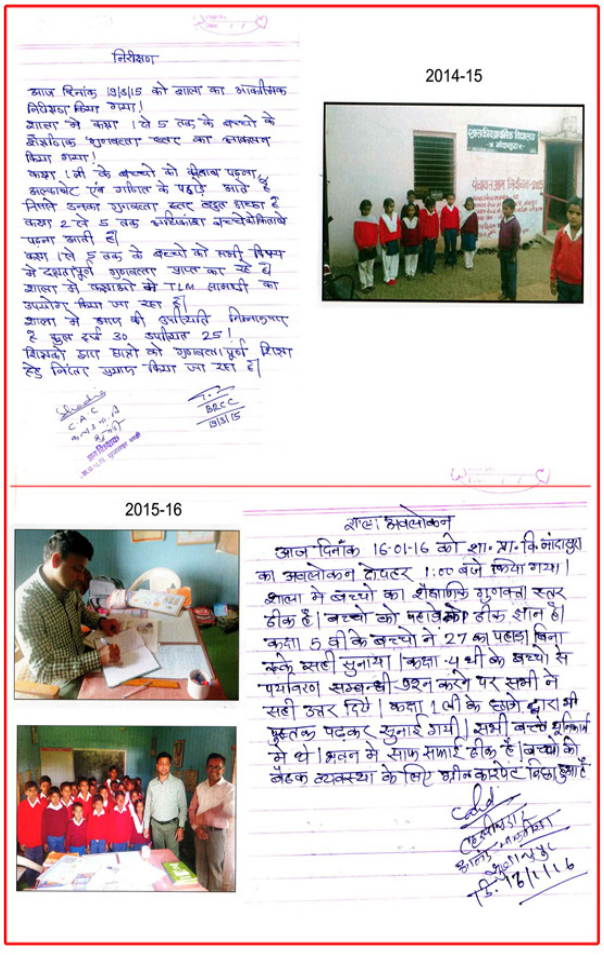
मिली और कुछ सफलता 2014-2015 में मिली। जिसका कई बार विभाग व अन्य विभागीय अधिकारियों द्वारा भी निरीक्षण किया गया और सुंदर टीप भी अंकित कर प्रमाणित किया गया।

हमारे विद्यालय में हिन्दी की पुस्तक पढ़ाने के लिये एक विशेष नवाचार को प्रयोग में लाया गया। जिससे हमारे विद्यालय की पुस्तक पढ़ने संबंधी नींव मजबूत हुई। जिसका सार्थक परिणाम हमें धीरे-धीरे प्राप्त हुआ।

सत्र 2014-15 में शुजालपुर ब्लॉक के बी.आर.सी. महोदय द्वारा शाला के आकस्मिक निरीक्षण में बच्चों की शिक्षा गुणवत्ता का मूल्यांकन सराहा गया, जो दैनिक भास्कर समाचार पत्र में भी प्रकाशित किया गया। जिसकी टीप विद्यालय पंजी पर बी.आर.सी. महोदय द्वारा अंकित की गयी। इस संबंध में प्रमाण संलग्न है।

सत्र 2015-16 के जनवरी माह में शुजालपुर तहसीलदार महोदय ने शाला का आकस्मिक निरीक्षण किया, जिसमें शालेय व्यवस्था एवं शिक्षा गुणवत्ता का मूल्यांकन कर विद्यालय का मान बढ़ाया और बच्चों द्वारा प्रश्नों के जवाब दिए गए। तहसीलदार महोदय बच्चों के उत्तरों से पूर्णतः संतुष्ट होकर प्रसन्न हुए और कहा कि इस खबर को समाचार पत्र में प्रकाशित होना चाहिए और शाला के बच्चों के साथ फोटो खिंचवाकर अपनी प्रसन्नता दर्शाते हुए सहमति प्रदान की एवं शाला निरीक्षण पंजी पर अपनी सुंदर टीप अंकित की। तत्संबंधी प्रमाण संलग्न है।

सत्र 2016-17 जनवरी माह में हमारे विद्यालय के शत-प्रतिशत् बच्चों ने हिन्दी पढ़ने व अन्य विषयों की दक्षता को प्राप्त कर लिया था। मीडिया द्वारा समाचार पत्रों पर एवं चैनलों पर स्कूल की विशेषताओं को दिखाया गया, जिसका उद्देश्य था शासकीय विद्यालयों की छवि में सुधार हेतु एक प्रयास। इसी के साथ बैगलेस नवाचार की घोषणा, जिसकी खबर को भी मीडिया द्वारा प्राथमिकता देते हुए दिखाया गया, जो 10 जनवरी 2017 को चार से पॉच चैनलों पर प्रसारित किया गया।


निरीक्षण

आज दिनांक 13/8/15 को शाला का आकस्मिक निरीक्षण किया गया।
शाला में कक्षा 1 से 5 वीं के बच्चों के शैक्षणिक गुणवत्ता स्तर का अवलोकन किया गया।
कक्षा 1 ली के बच्चों को मौखिक पढ़ाया, अक्षरमाला एवं गणित के पहाड़े आते हैं। जिससे उनका गुणवत्ता स्तर अच्छा है।
कक्षा 2 से 5 वीं कम्प्यूटराईज्ड बच्चोंमेंकितनेपढ़ना आती है।
कक्षा 1 से 5 वीं के बच्चों को सभी विषय में दक्षता पूर्ण गुणवत्ता प्राप्त कर रहे हैं।
शाला में स्मार्ट क्लासरूम के माध्यम से TLM सामग्री का उपयोग किया जा रहा है।
शाला में कुल 10 उपस्थिति निम्नानुसार है कुल संख्या 30 उपस्थित 25।
शिक्षकों द्वारा साफो को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा हेतु निरंतर प्रयास किया जा रहा है।

2014-15

2015-16

शाला अवलोकन

आज दिनांक 16-01-16 को शा.प्रा.कि.मांदाखुर्द का अवलोकन दोपहर 1:00 बजे किया गया।
शाला में बच्चों का शैक्षणिक गुणवत्ता स्तर ठीक है। बच्चों को महाड़ों का ज्ञान है।
कक्षा 5 वी के बच्चों ने 27 का पहाड़ा बिना रूके सही सुनाया। कक्षा 4 थी के बच्चों से पर्यावरण सम्बन्धी प्रश्न करने पर सभी ने सही उत्तर दिये। कक्षा 1 ली के छात्रों द्वारा भी फुसल पटकर सुनाई गयी। सभी बच्चे मुस्कान में थे। भवन में साफ सफाई है। बच्चों के बैठक व्यवस्था के लिए ग्रीन कारपेट बिछा हुआ है।


विद्यार्थियों ने दिए अधिकारियों के सवालों के जवाब

विद्यालय का निरीक्षण करते अधिकारी।

शुजालपुर। ढोगपार्य अभियान अंतर्गत शासकीय विद्यालयों का निरीक्षण अधिकारियों द्वारा किया जा रहा है। ग्राम नांदासुरा के प्रति का निरीक्षण करने पहुंचे अधिकारी को बच्चों ने सरलता से प्रश्नों के उत्तर देकर अचंभित कर दिया।
शाला का निरीक्षण करने पहुंचे तहसीलदार आनंद मालवीय ने विद्यालय की साफ-सफाई व कमरे के फर्श पर कॉरपेट बिछा देखा तो व्यवस्था से संतुष्ट नजर आए। उन्होंने बच्चों की गुणवत्ता परखने के लिए बच्चों से सवाल किए।
बच्चों द्वारा उनके सवालों का संतोषजनक जवाब देने पर उन्होंने विद्यालय के शिक्षकों की प्रशंसा की। विद्यालय प्रभारी वैभव तिवारी ने बताया बच्चों ने मध्या- भोजन से पूर्व हाथ धोने व भोजन मंत्र का उच्चारण किया तो तहसीलदार ने कहा कि यह तो निजी विद्यालयों में भी नहीं होता होगा।

तहसीलदार ने स्कूल का निरीक्षण किया

ग्राम नांदासुरा में स्कूल का निरीक्षण करने के बाद बच्चों के साथ तहसीलदार।

मालव संवाददाता | शुजालपुर

शिक्षक वैभव तिवारी को जानकारी थी और न शिक्षक राजकुंवर पंवार को। बच्चे इतना की तरह अपने अनुशासन में एक जैसी ड्रेस पहनकर आए थे। बच्चे जिस प्रकार से किसी निजी स्कूल में पढ़ाई होती है उसी तरह से पढ़ रहे थे। इस शिक्षक वैभव तिवारी ने तहसीलदार मालवीय को जानकारी दी। उन्होंने स्कूल शिक्षकों को ये देखने के लिए भी संतोष जताया।

दैनिक भास्कर उज्जैन 19/01/16

हुआखुर. शाला में छात्रों के साथ तहसीलदार।

तहसीलदार ने निरीक्षण कर शाला की व्यवस्था को सराहा

शुजालपुर @ प्रतिनिधि

तहसीलदार आनंद मालवीय ने विकासखंड शुजालपुर अंतर्गत शासकीय प्राथमिक विद्यालय नांदासुरा का अवलोकन किया। इस दौरान शाला परिसर की स्वच्छता तथा आंतरिक व्यवस्था में विद्यार्थियों को खाना गणवेश की एक रूपता देख तहसीलदार ने सराहा। बच्चों की बैठक व्यवस्था में ग्रीन कारपेट को बिछा देख, इसे शासनपुर जिले में शासकीय प्राथमिक विद्यालय नांदासुरा की शालाओं के लिए अनुकरणीय पहल बताया। तहसीलदार द्वारा शाला के छात्रों की सैद्धांतिक गुणवत्ता स्तर को भी परखा। इस दौरान कक्षा 5 वी के विद्यार्थियों से गणित विषय से संबंधित प्रश्न करते हुए बच्चों को पहाड़े में प्राप्त ज्ञान के आधार पर 27, 25 एवं 23 का पहाड़ा पूछने पर विद्यार्थियों द्वारा बिना रूके पहाड़ो को सुनाया गया एवं कक्षा 4 के विद्यार्थियों से पर्यावरण विषय के बारे में पूछे गए प्रश्नों के सही जवाब दिए। कक्षा पहली के छात्र खेरवाल बागरी को सही प्रकार से पुस्तक को पढ़ता कहा कि सभी शालाओं में ऐसे प्रयास किए जाए तो निश्चित ही निजी शिक्षण संस्थानों से हमारे शासकीय विद्यालय बेहतर दिखाई देंगे।

19/1/16 तहसीलदार ने किया शाला का औचक निरीक्षण

शुजालपुर (प्रदेश प्रवाह)। गत दिवस शासकीय प्राथमिक विद्यालय नांदासुरा का अवलोकन शुजालपुर तहसीलदार आनंद मालवीया द्वारा किया गया। शाला में पदस्थ दोनों शिक्षकों में प्रभारी वैभव तिवारी अपने कार्यस्थल पर एवं दूसरे शिक्षक रमेशचन्द परमार पर एक दिवसीय प्रशिक्षण में शुजालपुर उपस्थित थे। सर्वप्रथम तहसीलदार द्वारा शाला परिसर की साफ-सफाई, विद्यार्थियों को शाला गणवेश की एक रूपता, बच्चों की बैठक व्यवस्था में ग्रीन कारपेट को बिछा देख कर कहा कि अच्छा प्रयास है। तदुपरांत तहसीलदार द्वारा कक्षा 5 वी के विद्यार्थियों से गणित विषय से संबंधित प्रश्न करते हुए बच्चों को पहाड़ो में प्राप्त ज्ञान के आधार पर 27, 25 एवं 23 का पहाड़ा पूछने पर विद्यार्थियों द्वारा बिना रूके पहाड़ो को सुनाया गया एवं कक्षा 4 के विद्यार्थियों से पर्यावरण विषय के बारे में प्रश्न पूछे गये। विद्यार्थियों द्वारा प्रश्नों का सही जवाब दिया गया। तहसीलदार द्वारा मध्याह्न भोजन की गुणवत्ता का अवलोकन किया गया जिसे भोजन की श्रेणी का दर्जा देकर अपनी सहमति प्रदान की एवं विद्यार्थियों द्वारा भोजन पूर्व हाथ धुलाई को देखकर मन ही मन विचार किया फिर भोजन गृहण पूर्व छात्रों द्वारा संस्कृत के भोजन मंत्र को उच्चस्वर की मधुर ध्वनि को सुनने के बाद कहा कि यहां पर सभी कार्य होते हुए दिखाई एवं सुनाई दे रहे हैं तहसीलदार द्वारा कहा गया कि निश्चित ही आपकी शाला श्रेष्ठतम शालाओं में से एक है। तदुपरान्त तहसीलदार द्वारा ग्रामीणजनों के साथ अपने कार्य विशेष को लेकर एक बैठक सम्पन्न हुई।



बैगलेस स्कूल नवाचार की घोषणा

दैनिक भास्कर 11/01/2017 शुजालपुर. काल

पहले साल में कक्षा 5 तक का ज्ञान देता है प्राथमिक स्कूल, अब बैगलेस बनाने की तैयारी

नांदासुरा स्कूल के शिक्षक पहली कक्षा के बच्चों को देते हैं अंग्रेजी और संस्कृत का मौखिक ज्ञान

इसलिए खास है ये सरकारी शाला

विशेष विधि से शिक्षा देकर बस्तों का बोझ कर रहे कम

बैगलेस होने की ओर अग्रसर शासकीय विद्यालय

70 प्रश बच्चे नहीं लाते स्कूल में बैग

प्राइवेट स्कूल को मात कर रहे सरकारी स्कूल के बच्चे



मीडिया के माध्यम से सरकारी विद्यालयों की छवि में सुधार हेतु प्रयास एवं नवाचार

vaibhav tiwari सरकारी bagless school

प्रभारी , वैभव तिवारी 9926060617 PS...

www.youtube.com

https://www.youtube.com/channel/UCNruxsnlwtPxc9Hy0MCZVjA 11:19 am

India ka bag less school

www.youtube.com

India ka bag less school: http://youtu.be/tqzlo_umz6w 1:43 PM

Nandasura Teh Shujalpur Dist Shajapur Govt. Begless School

Video from rohitdeshpande

www.youtube.com

https://youtu.be/zMQnzs8BLIU 1:44 PM

Govt Bag less school of Madhya pradesh

By Vaibhav tiwari mahughat dist shajapur Upload by Rohit Deshpande

www.youtube.com

Govt Bag less school of Madhya pradesh: http://youtu.be/SwHTzPaGsoA 1:44 PM

First bagless govt. School of India Mahughat Dist Shajapur

Guide by Mr Vaibhav Tiwari Sir

www.youtube.com

First bagless govt. School of India Mahughat Dist...: http://youtu.be/ipwl0O0o0AM 1:44 PM

KHABAR ZARA HAT KE - SHUJALPUR - BAIGLESS SCHOOL(बैगलेस स्कूल)

Bansal News : BAIGLESS SCHOOL(बैगलेस स्कूल)

www.youtube.com

KHABAR ZARA HAT KE - SHUJALPUR - BAIGLESS SCHOOL(...: http://youtu.be/dvv8UlIuOc8 1:51 PM

MP Ka Bagless School (MP का बैगलेस स्कूल)

Bansal News - MP Ka Bagless School (MP का बैगलेस स्कूल)

www.youtube.com

MP Ka Bagless School (MP का बैगलेस स्कूल): http://youtu.be/OeXB9WvUqUo 1:52 PM

बैगलेस स्कूल, यूट्यूब पर देखा जा सकता है।

इसके बाद भी हमारे पास विद्यालय संबंधी आवश्यक निर्देशों का पालन करने में उत्पन्न समस्याएं थीं, जैसे -

1. होमवर्क पूरा न करने के कारण अच्छे बच्चे का नियमित स्कूल नहीं आना।
2. घर से इस विषय बिंदु को याद करके आना, नहीं याद करने पर नियमित विद्यालय नहीं आना।
3. बच्चों की पुस्तकों को छोटे भाई -बहन द्वारा छीन लेना, फाड़ देना, गुम जाना, स्वयं के द्वारा गुमा देना, छिपाकर रख देना इत्यादि, के कारण नियमित विद्यालय न आना।
4. विद्यार्थी को इधर-उधर घूमता देखकर उसे बुलाने पर उसका कहना कि बस्ता घर पर रखा है, मैं लेकर आता हूँ, फिर विद्यालय लौटकर नहीं आना।
5. बच्चा घर पर कोई पुस्तक भूल गया, तो उसे लेने घर जाना, लेकिन वापस लौटकर न आना।
6. विद्यालय में विद्यमान वे समस्त नकारात्मकताओं को कैसे समाप्त कर, सभी विद्यालयों की छवि को सुधारा जा सके।
7. नन्हे, मुन्ने बच्चों के कंधों का बोझ कैसे खत्म हो?
8. सामान्य ज्ञान को कैसे याद कराया जाए, और कहाँ से प्रारंभ कराया जाए?
9. ग्रामीण परिवेश एवं परिवार में शिक्षा संबंधी वातावरण न होने के कारण बच्चे का घर से याद करके न लाना।

शासकीय प्राथमिक विद्यालय, नांदासुरा में पदस्थ कथाकार की नियुक्ति दिनांक 06/09/2007 से विद्यालय में शिक्षकों

की संख्या दो ही रही है एवं विद्यार्थियों की संख्या विगत 10 वर्षों के अंतराल में 26 से 32 तक रही है, उससे कम नहीं हुई है। अन्य विद्यालयों की अपेक्षा छात्रों की संख्या में ठहराव रहा है।

हमारे द्वारा बैगलेस नवाचार से इन समस्याओं का अंत शनैः शनैः अनुभव किया गया और बैगलेस नवाचार से हम दोनों शिक्षकों का, हमारे विद्यालय का, ग्राम नांदासुरा का, जनपद शुजालपुर का, जिला शाजापुर का शिक्षा के क्षेत्र में नाम प्रसिद्ध हुआ।

बैगलेस नवाचार को इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा चार से पॉच न्यूज चैनलों पर प्रसारित किया जाना, समाचार पत्रों में खबरों का प्रकाशित होना, शासकीय एवं अशासकीय विभागों द्वारा देखा जाना व समझा जाना तथा यथायोग्य अधिकारियों द्वारा सहयोग प्रदान करना। मीडिया में प्रसारित होने, समाचार पत्रों में खबरों का प्रकाशन होने से गांव के वरिष्ठजनों द्वारा, पालकों द्वारा, पंचायत द्वारा गांव की प्रसिद्धि होने पर दोनों शिक्षकों की सराहना करते हुए गणतंत्र दिवस 26 जनवरी 2017 को पंचायत ने व गांव के वरिष्ठजनों ने हम दोनों शिक्षकों का ग्राम नांदासुरा के निवासीगण के समक्ष सम्मान किया। विभागीय उत्कृष्ट कार्य के लिए विभाग द्वारा शिक्षक वैभव तिवारी के नाम की अनुशंसा की गयी एवं बैगलेस नवाचार के लिए 26 जनवरी 2017 पर एस.डी.एम. साहब द्वारा ब्लॉक स्तर पर सम्मानित किया गया।



26 जनवरी पर पंचायत एवं ग्रामीण वरिष्टजनों द्वारा स्वागत

ग्रामीणों ने किया शिक्षकों का सम्मान 29/01/17

शुजालपुर। ग्राम पंचायत नांदासुरा के ग्रामीण वरिष्ठजनों एवं ग्राम पंचायत द्वारा शा.प्रा.वि. नांदासुरा के प्रभारी वैभव तिवारी सहायक अध्यापक एवं रमेशचंद्र परमार सहायक शिक्षक का शाल-श्रीफल एवं तिलक लगाकर सम्मान किया गया। लक्ष्मीनारायण परमार, पृथ्वी सिंह परमार, गोरधनसिंह परमार, महेंद्र परमार, जीवनसिंह परमार, भरत परमार, सुनील परमार अध्यक्ष दिनेश बागरी मौजूद थे। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता रचना परमार एवं सहायिका शीला मालवीय का भी सम्मान किया गया।

patrika.com

पत्रिका . उज्जैन . बुधवार . 01.02.2017

ग्राम नांदासुरा में शिक्षकों का सम्मान किया

शुजालपुर. ग्रापं नांदासुरा के ग्रामीण, वरिष्ठजनों एवं पंचायत ने शासकीय प्रावि नांदासुरा के प्रभारी वैभव तिवारी सहायक अध्यापक एवं रमेशचंद्र परमार सहायक शिक्षक का शॉल-श्रीफल एवं तिलक लगाकर सम्मान किया।

ग्रामीणों ने शिक्षकों की कर्तव्य निष्ठता की सराहना करते हुए किए जा रहे प्रयासों को साधुवाद दिया। लक्ष्मीनारायण परमार, पृथ्वीसिंह परमार, गोरधनसिंह परमार, महेंद्र परमार, जीवनसिंह परमार मौजूद थे। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता रचना परमार व सहायिका शीला मालवीय का भी सम्मान किया गया।



शा. प्रा. वि. नांदासुरा, शुजालपुर

गणतंत्र दिवस 2017 के मुख्य कार्यक्रम में उत्कृष्ट कार्य एवं विभागीय नवाचार के लिए शुजालपुर विधान सभा क्षेत्र के विधायक एवं जनपद अध्यक्ष एवं नगर पालिका अध्यक्ष प्रथम अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश महोदय (I ADJ) एवं अनुभागीय अधिकारी अनुभाग शुजालपुर (SDM) द्वारा प्रशस्ति पत्र देते हुए एवं वैभव तिवारी द्वारा प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए

गणतंत्र दिवस समारोह

शुजालपुर, जिला - शाजापुर (म.प्र.)

वर्ष - 20.~~16~~-17

प्रशंसा - पत्र

श्री/श्रीमति/कुमारी वैभव तिवारी (सह. अध्यापक)

आत्मज/आत्मजा श्री शिवनारायण जी विभाग/विद्यालय शा. प्रा. वि. नांदासुरा

ने नवाचार गतिविधि में भाग लेकर उत्कृष्ट कार्य स्थान प्राप्त किया।

गणतंत्र दिवस 2017 के अवसर पर सम्मानित किया गया।

अनुविभागीय अधिकारी
(राजस्व) शुजालपुर

यह समय हमारी मेहनत व प्रयासों के द्वारा दिखाई देने वाली शाला में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में शिक्षा गुणवत्ता की सफलता का द्योतक था।

26 जनवरी 2017 को श्रीमान एस.डी.एम. डॉ. गिरीश कुमार मिश्रा साहब एवं पंचायत द्वारा किए गए सम्मान से हम दोनों शिक्षक मन में आनंदित और प्रसन्नचित्त थे और हमने महसूस किया कि वे शिक्षक गलत हैं, जो यह कहते हैं कि शिक्षकों का सम्मान नहीं होता।

हम दोनों शिक्षकों का यह मानना है कि अपने कर्त्तव्य स्थल पर यदि शिक्षक ईमानदारी से अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करता है, तो निश्चित ही उसे आज भी वही सम्मान मिलता है, जो किसी समय मिलता था। जैसे कि मुझे दस वर्ष की अवधि में और हमारे साथी की अतिशेष शिक्षक के तहत हुई युक्ति युक्तकरण के अंतर्गत 2015-16 मे आगमन हुआ और शाला में दो वर्ष की अवधि में ही सम्मान प्राप्त हुआ है, जिसकी खबर समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई।

बदलाव :

- बैगलेस नवाचार से महत्वपूर्ण बदलाव यह हुआ कि गृह कार्य के कारण जो बच्चे स्कूल नहीं आते थे वे आने लगे। जैसे -

  (अ) हमारे विद्यालय का एक समझदार बच्चा जो गृहकार्य में लिखकर लाने को दिया जाता था वह उसे किसी कारण वश नहीं लिखने के कारण नियमित स्कूल नहीं आता था । बैगलेस नवाचार से उसकी गृहकार्य संबधी समस्या समाप्त हो गयी। वह नियमित विद्यालय आने लगा।

  (ब) विद्यालय में ही गृहकार्य एवं स्मरण कराने से अन्य बच्चे लाभान्वित हुए और साथ ही वह विद्यार्थी भी हमारे विद्यालय का सबसे उत्कृष्ट और सक्रिय विद्यार्थी बन गया।

  (स) शनै : शनै : स्मरण होने पर उसमें आत्मविश्वास की वृद्धि हुई और वह कभी-कभी होमवर्क करके लाने लगा।

- नवाचार से विद्यार्थियों के प्रति समस्त प्रकार की जवाबदारी हमारी हो गई।
- विद्यार्थियों में स्मरण कौशल का विकास होना। जैसे हमारे साथी शिक्षक श्री रमेशचन्द्र परमार सर द्वारा शार्टकट पद्धति के नवाचार से प्रश्नों के उत्तरों को याद कराया गया। जिससे हमारे विद्यालय के बड़े बच्चों के साथ छोटे बच्चों को कुछ विषय बिन्दुओं के प्रश्नों के उत्तर याद हो गये।
- माता पिता का चिन्ता मुक्त होना।
- विद्यार्थियों का भय मुक्त होना व मनोरंजन युक्त शिक्षा प्राप्त होना।
- अनुभव के आधार पर हम किसी भी विद्यार्थियों को विषय से संबंधित किसी भी ज्ञान को विद्यालय में ही सिखाने एवं याद कराने की और अधिक योग्यता रखते हैं।
- हम शिक्षक साथियों में भी आत्मविश्वास की वृद्धि होना।
- माता पिता द्वारा बच्चों का नियमित विद्यालय पहुँचाना।

10 जनवरी 2017 को हमारे द्वारा बैगलेस नवाचार की घोषणा के उपरांत विद्यालय का वातावरण सुरम्य हो गया और वहॉ पर अधिक से अधिक कार्य करने का भाव जागृत हो गया। बैगलेस स्कूल होने से स्मरण, लेखनकार्य, गृहकार्य, विद्यालय में ही पूर्ण होने लगे तो, सभी विद्यार्थी नियमित विद्यालय में आने लगे। इससे हमारी जवाबदारी और बढ़ गयी। हमने बैठकर विचार किया कि बच्चों को विषय संबंधी पाठ आधारित ज्ञान कैसे कराएं ? विचार विमर्श किया गया कि चारों विषयों की उत्तर पुस्तिकाएं बनवाकर उनमें प्रश्न, उत्तर लिखवाएं। फिर मन में प्रश्न आया कि लिखवा देंगे तो बच्चा याद कैसे करेगा, क्योंकि उसकी उत्तर पुस्तिकाएं विद्यालय में ही रखी रहेंगी। विचार विमर्श उपरांत हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि विषय की कॉपियों को बनवाने और लिखवाने में समय बर्बाद न किया जाए, इस हेतु विषय आधारित आवश्यक पाठ्य बिंदुओं को विद्यालय में ही सिखाया जाए, इसके लिए हमने शाला समय में स्मरण कालांश का एक घंटे का समय

निर्धारित किया कि उसमें सिर्फ स्मरण कराने का ही कार्य किया जाएगा। हमने उन बिंदुओं को चुना, जो विद्यार्थी को कक्षा 10वीं तक उपयोग में आए। नवाचार के पहले हमारे द्वारा जिस विधि से स्मरण कराया जाता था, उस विधि से ही विद्यार्थियों को स्मरण कराया गया। सर्वप्रथम हमने हिन्दी विषय के उन आवश्यक बिंदुओं को लिखा, जो कभी नहीं बदलते, अर्थात् व्याकरण संबंधी प्रश्न, जैसे -

1. संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण की परिभाषा,
2. विलोम शब्द,
3. पर्यायवाची शब्द, एक शब्द के चार, चार व पाँच-पाँच शब्द,
4. अनेक शब्दों के एक शब्द,
5. मुहावरे एवं उनका अर्थ,
6. छुट्टी के लिए आवेदन,
7. गाय का निबंध,
8. विद्यालय पर निबंध,
9. कविता की चार पंक्तियाँ,
10. एक वचन से बहुवचन शब्द आदि के फोल्डर संलग्न है।

इसी प्रकार सभी विषयों के चुने गए विषय बिंदुओं के प्रश्न को स्मरण कराया जाता है।

हमारे द्वारा बच्चों को विद्यालय में स्मरण कराने की विधि पर काम किया गया। किसी भी विषय बिंदु को याद कराना है, तो हम उनके कठिन शब्दों को बोल-बोलकर अभ्यास कराते। पहले हम सही उच्चारण के साथ बोलते और उसके बाद विद्यार्थियों से एक साथ बुलवाते, जो बच्चा सही बोलता, वह एक बार में ही सही बोल देता, कुछ बच्चे दो-तीन बार में सही बोलते, कुछ आठ-दस बार में सही बोलते और कुछ बच्चों पर विशेष ध्यान देकर बुलवाना पड़ता है, तब वह सही व शुद्ध उच्चारण करते। इस प्रकार हमारे चयनित बिंदु के कठिन शब्दों का उच्चारण सरल हो गया। फिर हम छोटे- छोटे वाक्य एक साथ बोलकर सुनाते और विद्यार्थियों से उसका अनुकरण करने को कहते। बच्चा बहुत आसानी से एक, दो, तीन बार में ही वह वाक्य बोल देता। जो बच्चा बोलना सीख जाता, उसी को कक्षा में खड़ा कराकर उस वाक्य को बोलने को कहते और अन्य बच्चों से उसका अनुकरण करवाते। इससे उसका बोलने का अभ्यास, साहस और आत्मविश्वास बढ़ता है। अन्य बच्चों का भी अभ्यास होता है। इस विधि से लगभग 80 प्रतिशत वाक्य उसी समय स्मरण हो जाता है। उसके अगले वाक्य को इसी तरह सिखाते, फिर दोनों वाक्य एक साथ बुलवाते। दोनों वाक्य विद्यार्थी एक साथ बोलने लगते, इसी प्रकार तीसरा वाक्य, चौथा वाक्य याद कराते और विद्यार्थी पूरा उत्तर सीख जाते।

इसी प्रकार हमने संपूर्ण विषय के प्रमुख बिंदुओं के प्रश्नों के उत्तरों को शनैः शनैः विद्यार्थियों को मौखिक याद करा दिया, मानो जैसे हमें विद्यार्थियों को सिखाने का ब्रह्मास्त्र मिल गया हो ।

विद्यार्थियों को प्रश्नों के उत्तर स्मरण कैसे रहें ? स्मरण कालांश में हम प्रतिदिन पूर्व में याद कराए गए प्रश्नों के उत्तरों का वाचन कराते, इसके बाद दूसरे विषय बिंदु का स्मरण कराते । जो प्रश्नों को हम सिखाते, उसे ही घर से लिखकर लाने को होमवर्क में देते।

18 फरवरी 2017 को मिलबाँचें कार्यक्रम के अंतर्गत डॉ गिरीश कुमार मिश्रा, आई.ए.एस., अनुविभागीय अधिकारी, शुजालपुर द्वारा बैगलेस स्कूल नवाचार से संबंधित सूचना मिलने पर शाला का आकस्मिक निरीक्षण किया गया, जिसमें बच्चों की शिक्षा गुणवत्ता को जांचा गया तथा बैगलेस नवाचार संबंधी प्रश्नों को पूछकर प्रसन्नता व्यक्त की और सुंदर टीप अंकित की। एक घंटे से अधिक का समय हमारी शाला में दिया । बैगलेस नवाचार अत्यंत सराहनीय है, जो बच्चों के शैक्षणिक स्तर को देखकर पता चलता है। उक्त नवाचार से विद्यालय एवं शिक्षकों की जवाबदेही विद्यार्थियों के विकास पर पूर्णरूपेण सिद्ध होती है।

प्राथमिक विद्यालय में यह व्यवस्था आगे सभी प्रायमरी स्कूलों में लागू कराए जाने संबंधी संदेश वरिष्ट कार्यालय भेजे जाने की टीप अंकित की एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। जो हमारी शाला की बहुत बड़ी शान रही और हमारे बच्चों का मनोबल बहुत अधिक बढ़ गया। विद्यालय की शिक्षा गुणवत्ता से प्रसन्न होकर हमारे विद्यालय को एक डेस्कटॉप कम्प्यूटर देने की घोषणा की।

डॉ. गिरीश कुमार मिश्रा, अनुविभागीय अधिकारी, शुजालपुर द्वारा दिनांक 26.04.2017 को बैगलेस स्कूल, नांदासुरा को बैगलेस स्कूल नवाचार का प्रमाण पत्र एवं शाला को डेस्कटॉप कम्प्यूटर प्रदान किया गया, जिसकी खबर सभी समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई।

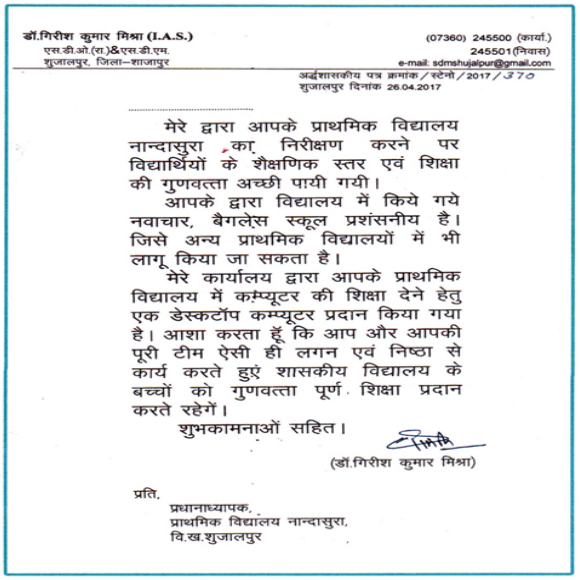
एस.डी.एम.साहब से प्राप्त कम्प्यूटर की शिक्षा के लिये 16 जून 2017 को शुजालपुर क्षेत्र के विधायक श्री जसवंतसिंह जी हाड़ा द्वारा ई-कक्षा का शुभारंभ किया गया। ग्रामीणजनों द्वारा विधायक साहब के स्वागत प्रवेश उत्सव, पुस्तक वितरण कर ग्राम नान्दासुरा के समस्त बच्चों का एवं ग्राम के सभी पुरूष वर्ग के साथ सहभोज का आयोजन कराया गया ।


ग्रा॰ प्रा॰वि॰ नांदासुरा, शुजालपुर

मिलबांचे कार्यक्रम 18/02/17 को अतिथि श्री गिरीश कुमार मिश्रा जी S.D.M अनुभाग-शुजालपुर द्वारा विद्यार्थियों की शिक्षा गुणवत्ता का मूल्यांकन करते हुए।

ग्रा॰ प्रा॰वि॰ नांदासुरा, शुजालपुर

मिलबांचे कार्यक्रम 18/02/17 को शिक्षा गुणवत्ता से प्रसन्न होकर विद्यार्थियों के शुजालपुर अनुभागीय अधिकारी S.D.M श्री गिरीश कुमार मिश्रा जी



डॉ.गिरीश कुमार मिश्रा (I.A.S.)
एस.डी.ओ.(रा.)&एस.डी.एम.
शुजालपुर, जिला—शाजापुर

(07360) 245500 (कार्या.)
245501(निवास)
e-mail: sdmshujalpur@gmail.com

अर्द्धशासकीय पत्र क्रमांक/स्टेनो/2017/370
शुजालपुर दिनांक 26.04.2017

मेरे द्वारा आपके प्राथमिक विद्यालय नान्दासुरा का निरीक्षण करने पर विद्यार्थियों के शैक्षणिक स्तर एवं शिक्षा की गुणवत्ता अच्छी पायी गयी।

आपके द्वारा विद्यालय में किये गये नवाचार, बैगलेस स्कूल प्रशंसनीय है। जिसे अन्य प्राथमिक विद्यालयों में भी लागू किया जा सकता है।

मेरे कार्यालय द्वारा आपके प्राथमिक विद्यालय में कम्प्यूटर की शिक्षा देने हेतु एक डेस्कटॉप कम्प्यूटर प्रदान किया गया है। आशा करता हूँ कि आप और आपकी पूरी टीम ऐसी ही लगन एवं निष्ठा से कार्य करते हुएं शासकीय विद्यालय के बच्चों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करते रहेगें।

शुभकामनाओं सहित।

(डॉ.गिरीश कुमार मिश्रा)

प्रति,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय नान्दासुरा,
वि.ख.शुजालपुर



विद्यालय को भेंट किया कम्प्यूटर

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

शुजालपुर एसडीएम शुजालपुर डॉ गिरीशकुमार मिश्रा ने एक कार्यक्रम में प्राथमिक विद्यालय नांदासुरा को कम्प्यूटर भेट किया। साथ ही शाला के शिक्षक वैभव तिवारी व रमेशचन्द्र परमार के कार्यो की सरहाना की।

उल्लेखनीय हैकि इस प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों ने अपनी मेहनत से दर्ज छात्रों को अच्छी शैक्षणिक गुणवत्ता दी। इस विद्यालय की कक्षा पहली के छात्रों को 5वी कक्षा के बच्चों की तरह शैक्षणिक ज्ञान हो चुका है। किताबी पाठ्यक्रम को समझाने के लिए शिक्षकों ने टीएलएम सामग्री का उपयोग किया। शासकीय विद्यालय का निरीक्षण पूर्व में एसडीएम द्वारा किया गया था, इस दौरान बच्चों के शैक्षणिक स्तर व शिक्षा की गुणवत्ता को देखकर एसडीएम ने भी सराहा था और अब प्रशस्वी पत्र देकर कहा कि विद्यालय में किए गए नवाचाय बेगलेस स्कूल प्रशसनिय है।

शुजालपुर. प्रशस्वी पत्र भेट करते एसडीएम।

पत्रिका 28/04/2017

S.D.M शुजालपुर, प्रा. वि. नांदासुरा को कम्प्यूटर देते हुये।



अनुविभागीय अधिकारी शुजालपुर (एस.डी.एम.) डॉ.श्री गिरीश कुमार मिश्राजी एवं (C.E.O.) जनपद पंचायत शुजालपुर श्री अमित जी व्यास द्वारा शासकीय प्राथमिक विद्यालय नान्दासुरा को कम्प्यूटर एवं प्रशस्ति पत्र गैट सज - 2017

शाला का प्रवेश उत्सव, पुस्तक वितरण, ईकक्ष का उद्घाटन, एवं कम्प्यूटर का शुभारंभ,



दैनिक भास्कर 27/04/2017 शुजालपुर : काल

बैगलेस स्कूल को मिला कम्प्यूटर सेट अब प्राथमिक शाला के विद्यार्थी सीखेंगे

बच्चों को आधुनिक शिक्षा वाला प्रदेश का पहला सरकारी स्कूल बनेगा प्राथि नांदासुरा

भास्कर संवाददाता | शुजालपुर

निरीक्षण में उम्मीद से बेहतर मिले शुजालपुर के नांदासुरा गांव के सरकारी प्राथमिक स्कूल में अब बच्चे जल्द ही कम्प्यूटर भी सीखते नजर आएंगे।

बैगलेस शिक्षा को बढ़ावा देकर पढ़ाई व होमवर्क स्कूल में ही कराने से चर्चा में आए इस सरकारी स्कूल के बच्चों को कम्प्यूटर ज्ञान में दक्ष करने एसडीएम गिरीश मिश्रा ने सिस्टम देने के साथ ही शासन को शिक्षा व्यवस्था बनाने का सुझावात्मक पात्र भी लिखा है।

शुजालपुर विकासखंड में नांदासुरा गांव में खेतों के बीच बने प्राथमिक सरकारी स्कूल में दो शिक्षकों की मेहनत का असर अब दिखने लगा है। यहां के बच्चों के आदर्श शैक्षणिक स्तर को भांपकर ने 11 जनवरी को प्रकाशित किया था। यहां का हर विद्यार्थी साल भर 90 फीसदी उपस्थिति रखने के साथ ही कक्षा पहली में कक्षा पांचवी तक का सिलेबस पढ़ कर सिलसिला बना हुआ है। बच्चे नियमित अध्ययन सहित होमवर्क भी स्कूल में ही खत्म कर तनाव रहित रह कर पढ़ाई कर रहे हैं। बुधवार को शिक्षकों को विद्यार्थियों की एक्स्ट्रा परफार्मेंस को और अधिक विकसित करने कम्प्यूटर सेट जनपद सीईओ अमित व्यास व एसडीएम डॉ. गिरीश मिश्रा ने प्रदान किया। शाला के शिक्षक वैभव तिवारी, रमेशचंद्र परमार ने बताया कि कम्प्यूटर का नॉलेज ज्ञान देकर हर विद्यार्थी को इस स्तर में पूरी तरह दक्ष कर दिया जाएगा। एसडीएम गिरीश मिश्रा ने बताया कि इस शाला का स्तर अन्य स्कूलों के लिए प्रेरक है व उन्हें प्रसन्नता है कि प्राथमिक शाला के विद्यार्थी कम्प्यूटर सीख दूसरों के लिए प्रेरणा बनेंगे।



एसडीएम गिरीश मिश्रा व जनप्र सीईओ अमित व्यास कम्प्यूटर सेट देते हुए।

इसलिए खास हैं ये सरकारी शाला

स्कूल में पढ़ाने व सिलेबसी पाठ्यक्रम को समझाने के लिए टीएलएम सामग्री (टीचिंग-लर्निंग मैटर) का उपयोग किया जाता है। इसमें आकृति व चित्रों से चित्रावली के जरिए पटल पर लकड़ी स्क्वारी फलकर अध्ययन किया जाता है। साथ में पहल- पहुंच-वार्तालाप की आकृति के जरिए भी चित्रों में शैक्षणिक सामग्री तुलना है।

पहली के बच्चे को कक्षा पांचवी तक सिलेबस याद

स्कूल में शिक्षा के स्तर की बात की जाए तो यहां के बच्चे अन्य सरकारी स्कूलों से कई बेहतर हैं। पहली कक्षा के बच्चों को पांचवी में बच्चों के समान 12 तक पहाड़े, अंग्रेजी व हिन्दी वार्तालाप, शरीर के हर अंग के अंग्रेजी नाम, लंचपूल में मिलजुलकर, पंचतत्व से अधिक शब्दों के हिंदी-अंग्रेजी कोलों भाषा में पर्यायवाची व विपरीतार्थी शब्द, अक्षरज्ञान के लिए अंग्रेजी में आर्टिकल, अंग्रेजी में पूरे परिचारिका व मैगजीनिक परिचर्या, छंदे आदत्त गीत मौखिक जानते हैं। 20 फरवरी को एसडीएम गिरीश मिश्रा ने अचानक वहीं शाला के बाद यहां पहुंचकर निरीक्षण में शाला की दक्षता को देख कम्प्यूटर सेट देने का फैसला किया था।

बैगलेस पढ़ाई

नांदासुरा विद्यालय में ई-कक्ष का शुभारंभ



16 जून 2017 चौथा खंभा फेयर मोशन से

ई-कक्ष का उद्घाटन

उज्जैन, रविवार 18.06.2017 sunday पत्रिका 20

आधुनिक शिक्षा में सहायक रहेगा कम्प्यूटर

नांदासुरा प्राथमिक विद्यालय में ई-कक्ष का शुभारंभ





विधायक महोदय द्वारा मंच को संबोधित करते हुए।

ई-कक्ष का उद्घाटन





कम्प्यूटर का श्री गणेश करते हुए साथ संकुल प्राचार्या

स्कूल का बहारी दृश्य



"पंचायत एवं समुदाय के सहयोग से"

शाला में "ई-कक्ष उद्घाटन", प्रवेश उत्सव, विधायक एवं ग्राम के वरिष्ठ एवं ग्राम के सभी बच्चे तथा हर घर से एक जन का सहभोज आयोजन

सहभोज आयोजन प्रवेश उत्सव 16 जून 2018



शा.प्रा.वि.नांदासुरा बैगलेस स्कूल

सहभोज आयोजन प्रवेश उत्सव 2018



विद्यालय की समय सारणी :

बच्चों के उपस्थित होने पर शालेय दैनिक गतिविधि जैसे-वंदे मातरम् गीत, राष्ट्रीय गान, बच्चों द्वारा शिक्षक अभिवादन, शिक्षक द्वारा बच्चों का सम्मान, गुड हेबिट गतिविधि, सामूहिक प्रार्थना, योग, संस्कृत श्लोक पाठ, एक प्रेरणा गीत दो दिन तक बुलवाना, जिससे बच्चों को याद हो जाए। हमें हमारे हर प्रयास में सफलता मिली। इस विद्यालयीन कालांश से हमें स्मरण कौशल का तरीका मिल गया और विद्यार्थियों में स्मरण कौशल का विकास हो गया। हमें हम पर विश्वास हो गया, कि अब हम किसी भी विषय बिंदु को सीखा सकते हैं।

इस स्मरण कालांश ने हमें और हमारे विद्यार्थियों को मजबूत बनाया। इसी के साथ विद्यालय की समूल चिंताओं जैसे शासन के निर्देशों के कारण उत्पन्न होने वाली छोटी-छोटी ग्रामीण परिवेश व्यवहार संबंधी समस्याओं का अंत हो गया। हम अपना कार्य स्वतंत्र तरीके से करने लगे, क्योंकि हमारे विद्यार्थियों को विषय बिंदु याद भी थे और वे लिखना भी जानते हैं। इस विधि से हमारे शिक्षक साथी द्वारा सामान्य ज्ञान के प्रश्नों को याद कराया गया। इसके लिए भी उन्होंने प्रश्नों के उत्तरों को शार्ट कट पद्धति निर्मित कर याद कराया।

पुस्तक वाचन एवं लेखन, विश्रांति, गणितीय संक्रियाएँ एवं वाचन कालांश आवश्यकतानुसार।

इस प्रकार यह बैगलेस स्कूल, बैगलेस नवाचार से सार्थक बदलाव के रूप में निरंतर गतिमान है, जिसे शाला समय में कभी भी अवलोकन कर देखा जा सकता है। इससे हमारी शाला सभी आयामों को अपने में समाहित करती हुई चैम्पियन शाला के साथ शिक्षा समृद्ध शाला भी हो गयी। यह उपलब्धि मात्र हम दो शिक्षकों के परिश्रम से प्राप्त हुई है। यदि शाला में इससे अधिक शिक्षक पदस्थ हों, निश्चित ही शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों से बहुत अच्छे परिणामों को प्राप्त किया जा सकता है । बैगलेस विद्यालय के अंतर्गत हमारे विद्यार्थियों को कितना याद है, उसे देखने के लिए आप हमारी यू ट्यूब चैनल को देख सकते हैं, जिसका नाम वैभव तिवारी सरकारी बैगलेस स्कूल है।

बैगलेस स्कूल क्या है ? नवाचार किसे कहते है? बैगलेस नवाचार से लाभ व परिणाम प्राप्त हुए है, बैगलेस स्कूल में कैसे पढ़ाया जाता है और किस प्रकार से संचालन होता है?

बच्चों के पालक द्वारा, गांव के वरिष्ठ एवं बुद्धिमानों द्वारा शहरी क्षेत्र के शिक्षा के क्षेत्र में रुचि रखने वाले जिज्ञासु लोगों द्वारा, और पत्रकार, मीडिया द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर प्रश्नों के उत्तरों से समझें।

1) बैगलेस स्कूल करने के बाद हमारे विद्यार्थियों की बस्तों और पाठ्य पुस्तकों के बोझ से मुक्ति हो गयी है।

2) विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति में वृद्धि हुई है।

3) विद्यार्थियों की शिक्षा गुणवत्ता में परिवर्तन आया है। इसे संलग्न डायग्राम देखकर समझ सकते हैं।

बैगलेस स्कूल में विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने का सबसे सशक्त माध्यम टी.एल.एम है। और बैगलेस विद्यालय में किसी भी पाठ्यक्रम को पढ़ाया जा सकता है। उसके लिये विशेष पाठ्यक्रम की आवश्यकता नहीं है। समस्त पाठ्यक्रम विद्यालय में ही उपस्थित रहता है ।

किसी भी प्रकार की शंका समाधान हेतु आप सब हमारे विद्यालय में प्रत्यक्ष रूप से अवलोकन हेतु एवं मार्गदर्शन देने हेतु सादर आमंत्रित है।

अनुभव :

- हम अपने तीन वर्षों के अनुभव के आधार पर कह सकते हैं कि बैगलेस स्कूल नवाचार विधा शिक्षा गुणवत्ता को बड़ाने वाली सभी समस्या रूपी नकारात्मकताओं का उत्तर है, जवाब है, हल है, पद्धति है, नवाचार है।
- हमारे विगत वर्षों एवं नवाचार के अनुभवों के साथ आज हम इस बात को विश्वास के साथ कहते हैं कि किसी भी विद्यालय का महानायक शिक्षक ही होता है और वह नायक का निर्माण करता है।

विशेष :

हमारे द्वारा उपर्युक्त वर्णित उपलब्धियॉ और बच्चों द्वारा उत्कृष्ट परिणाम का आधार है -

1) हमारे द्वारा निर्मित की गई हिन्दी की पुस्तक को पढ़ाने की सरलतम विधि की पुस्तक का नाम सरल हिन्दी वाचिका ग्रंथ है, जो 10 वर्षों के अनुभव एवं प्रयोग पर आधारित है, का रजिस्ट्रर्ड कॉपिराईट डायरी नं.14266/2019CO/L है।

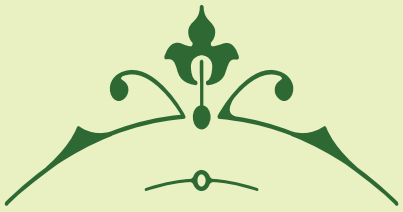
2) हमारे द्वारा मानव संशाधन विकास मंत्रालय दिल्ली को बैगलेस नवाचार संबंधी प्रस्ताव भेजा गया था। MHRD द्वारा वह प्रस्ताव NCERT को अग्रिम कार्यवाही हेतु भेजा गया । उक्त संबंधि कार्यवाही की सूचना हमारे ई-मेल पर 21 फरवरी 2019 को भेजी गई । प्राप्त ई-मेल की प्रति संलग्न है।

आगामी योजना :

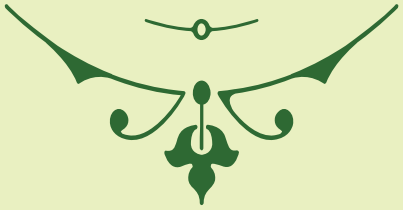
अब हम इन दोनों शोध के प्राप्त परिणामों और अनुभवों का लाभ सभी विद्यालयों ओर विद्यार्थियों को देना चाहते हैं। इसका एक मात्र उद्देश्य है शासकीय विद्यालयों की छवि में सुधार। इस आधार पर हम सैकड़ों सरकारी स्कूलों के हजारों बच्चों को लाभान्वित करने को तैयार हैं। इसकी सम्पूर्ण रूपरेखा हमारे द्वारा तैयार कर ली गई है जिसे हम क्रियान्वयन करने के लिये तैयार हैं।

वैभव तिवारी
(शिक्षक)

❑ ❑ ❑



आस पास की खोज योजना अंतर्गत शिक्षण



आसपास की खोज द्वारा शिक्षण में सुधार

शासकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय, बजरंगगढ़

यू-डाईस कोड : 23070612504

- विकासखंड : गुना
- जिला : गुना
- राज्य : मध्यप्रदेश



डोमेन क्र. 2 - विद्यार्थियों के लिए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया

उप डोमेन क्र. 2 - शिक्षण में नवाचार एवं खोज विधि

इस कहानी में खोज यात्रा के माध्यम से बालिकाओं के शिक्षण में सकारात्मक बदलाव हुआ है। बालिकाएं विद्यालय की गतिविधियों में स्वयं सक्रिय होकर सहभागिता करने लगी है।

पृष्ठभूमि :

शासकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय, बजरंगगढ़ की स्थापना सन 1954 में कन्या प्राथमिक विद्यालय के रूप में हुई थी। जिसे शिक्षा विभाग द्वारा अपग्रेड कर माध्यमिक शाला प्रारंभ की गयी।

यह विद्यालय बजरंगगढ़ ग्राम में स्थित है जो कि प्राचीन राजाओं की रियासत वाला इलाका रहा है। रियासत के समय में जिला मुख्यालय यहीं से संचालित किया जाता था। यहाँ एक किला भी है जो यहाँ के इतिहास की कहानी का प्रमुख सूत्रधार है। इस किले के साथ यहाँ कुछ प्राचीन मंदिर जैसे बीसभुजा माता मंदिर, जैन आदि दिगम्बर मंदिर, गणेश मंदिर, रानी महल, सूबात महल आदि प्रसिद्ध स्थल मौजूद हैं।

बजरंगगढ़ जिला मुख्यालय, गुना से सिरोंज मार्ग पर करीब 8 किमी की दूरी पर स्थित है। पहाड़ियों से घिरे इस गाँव में सुंदर बाग और पर्याप्त हरियाली उपलब्ध है। विद्यालय परिसर गाँव के मध्य लगने वाले प्रमुख बाजार में ही स्थित है। जिससे आवागमन आसान है और आसपास के गाँव से भी बच्चे पढ़ने आते हैं। विद्यार्थियों में मुख्यतः अनुसूचित जाति एवं जनजाति, भील, सहरिया, सपेरा समुदाय का प्रतिनिधित्व अधिक है।



समस्या :

- विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति और नामांकन का कम होना।
- शिक्षण प्रक्रियाओं का पारम्परिक होना।

समस्या समाधान की प्रक्रिया :

2019 में विद्यालय के सभी शिक्षकों ने, विद्यार्थियों के शैक्षणिक क्षेत्र में सुधार हेतु, आपसी विचार विमर्श द्वारा कुछ चुनौतियों को रेखांकित किया जैसे नामांकन का कम होना, कम दैनिक उपस्थिति, अधोसंरचनात्मक विकास, शिक्षकों के प्रयासों में सक्रियता, एवं शिक्षण के लिए आनंददायक माहौल का निर्माण आदि। चर्चा द्वारा शिक्षकों को यह महसूस हुआ कि इन प्रमुख चुनौतियों के कारण ही विद्यार्थी शिक्षण में रुचि नहीं ले रहे हैं जो कि मुख्यतः कम उपस्थिति और कम नामांकन के रूप में उभर रहा है। अतः विद्यालय स्टाफ ने यह सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि सभी मिलकर इन चुनौतियों से निपटने के प्रयास करेंगे।

विद्यालय स्टॉफ के द्वारा यह अवलोकन किया गया कि उनके विद्यालय में समय से आ जाने से विद्यालय में काफी कुछ सुधार हो सकते हैं अतः सकारात्मक नजरिये के साथ रोजाना समय पर विद्यालय आना और उसका सभी के द्वारा पालन किया जाना सुनिश्चित किया गया। समय से पूर्व आ कर विद्यालय भवन की जाँच, असेम्बली की तैयारी, कक्षा शिक्षण की योजना और उस दिन करने वाले कुछ कार्यों की सूची जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य करने लगे जिसका परिणाम ये हुआ कि उनका विद्यालय के दौरान का समय बचने लगा जिसका उपयोग विद्यार्थियों के शिक्षण में होने लगा।

विद्यालय स्टॉफ का ही एक सुझाव और आया कि विद्यालय को सुंदर और स्वच्छ होना अति आवश्यक है तभी विद्यार्थियों को अपने विद्यालय के प्रति अपनत्व आएगा। जिसके लिए विद्यालय को स्वच्छ बनाने के लिए पहले पुताई करवाई और तत्पश्चात उसमे कुछ रोचक पेन्टिंग कराई गई ताकि विद्यार्थी 'विद्यालय भवन का सहायक शिक्षण सामग्री के रूप में प्रयोग' कर सकें एवं पर्याप्त बैठक व्यवस्था के लिए रंगीन कार्पेट मंगाया गया।

विद्यालय में पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए लाइब्रेरी को सक्रिय किया गया जिसमें पुस्तकों के रख रखाव में बदलाव किये गये। नई किताबें उपलब्ध कराई गई और मुख्य रूप से लाइब्रेरी के लिए एक कालखंड को लगाया जाने लगा इससे विद्यार्थी उसमें रुचि लेने लगे और उन्हें पढ़ने लगे।

विद्यालय स्तर पर तैयारी के बाद अब आवश्यकता थी पालकों से सतत संपर्क बनाने की। अतः सभी शिक्षकों ने तय किया कि वह अभिभावकों के घर जाकर पालकों से संवाद करेंगे और बालिकाओं के शिक्षण के महत्व से उन्हें अवगत कराएंगे। इस संपर्क के दौरान स्कूल स्टाफ का पालकों से अच्छे सम्बन्ध स्थापित हो पाया। इस प्रयास से शिक्षकों और अभिभावकों के बीच विश्वास पैदा हुआ और वही विद्यार्थियों के नियमित स्कूल पहुँचने का प्रेरणा बना।

अब सब बच्चे स्कूल पहुँचने लगे थे। चुनौती थी उनके साथ सार्थक शिक्षण के प्रयासों की। सभी शिक्षक अपने विषय में पूरी तैयारी से शिक्षण कार्य करा रहे थे। इस बीच हमने तय किया कि हम पारंपरिक शिक्षण पद्धति से हट कर कुछ नई शिक्षण प्रक्रियाओं को अपनाएँगे। हमारे इस विचार को मूर्त रूप देने में विभाग द्वारा प्रस्तावित 'आसपास की खोज' ने हमें बच्चों के साथ काम करने की दिशा दी।

विद्यालय स्टाफ, गाँव के ऐसे स्थानों की सूची तैयार की जहां बच्चों को भ्रमण कराया जा सके। सभी शिक्षकों ने भ्रमण की व्यवस्था और सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखकर इस कार्य को साप्ताहिक रूप से करने पर सहमति जताई। पहले क्रम में 'आसपास की खोज' के तहत गाँव के सभी ऐतिहासिक स्थलों की भ्रमण यात्रा की योजना बनाई गई।

विद्यार्थियों द्वारा इस कड़ी में गाँव में स्थित किला, मंदिर और सहरिया, भील एवं अन्य समुदाय की बस्तियों का भ्रमण किया। इस भ्रमण के दौरान बच्चों ने जानकारियां एकत्रित की, चर्चाएं हुई और उसके बाद उन जानकारियों का दस्तावेजीकरण कराया गया।





बदलाव :

- इस पूरे कार्य में विद्यालय परिवार को परिजनों/समुदाय का सकारात्मक सहयोग मिला जिससे हम इस कार्य को कर पाए। विद्यालय और समुदाय के बीच बना यह संबंध आगामी दिनों में भी जारी रहेगा। जिससे शिक्षण स्कूल और परिवेश अथवा विद्यार्थियों के जीवन से जुड़ पाएगा।

- 'आस-पास की खोज' के तहत की गई शिक्षण प्रक्रियाओं से शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों ने सीखा है। इस समझ के माध्यम से शिक्षक विद्यालय में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को और बेहतर बना पाएंगे।
- इस कार्य से समुदाय में बड़े विश्वास से परिजन बच्चों को नियमित स्कूल भेज रहे हैं।
- इस प्रक्रिया से बच्चे भी शिक्षण में रुचि लेने लगे हैं और रुचि से विद्यालय आने लगे हैं।
- पूरी प्रक्रिया से बने सकारात्मक माहौल से समुदाय में विश्वास बड़ा और अब नामांकन में सकारात्मक वृद्धि हुई है।

विद्यार्थियों के नामांकन की स्थिति का आंकड़ा -

- सत्र - 2019-20 = 147
- सत्र - 2020-21 = 202
- सत्र - 2021-22 = 236

स्थायित्व :

- इस प्रकार की खोज यात्रा से जो ज्ञान सृजित होता है और छात्र स्वयं सुनकर, देखकर और कर के ज्ञान का सृजन करता है इसलिए इस प्रकार गृहण ज्ञान चिर स्थायी होता है।
- ग्वालियर-झाँसी आदि का इतिहास वे स्वयं से किताबो और इन्टरनेट के माध्यम से जानने और समझने लगे।

आगामी योजना :

'आसपास की खोज' द्वारा किए गए शिक्षण की प्रक्रिया को अंतरविषयी बनाना। ऐसी गतिविधियां निर्मित करना जिससे गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान की समझ जीवन से जुड़ती दिखाई दे जिससे बच्चों के लिए उन अवधारणाओं को समझना आसान बने।

प्रशान्त श्रीवास्तव
(प्र. प्रधानाध्यापक)
मोबाईल : 9755203637

❑ ❑ ❑



संचालक राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल मध्यप्रदेश श्री धनराजू एस द्वारा फ्लिपबुक निर्माण दल एवं शिक्षकों के साथ उनके द्वारा किये गए प्रयासों पर बातचीत करते हुए।



फ्लिपबुक निर्माण दल, राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल मध्यप्रदेश

स्कूल लीडरशिप अकादमी
मध्यप्रदेश

यूनिसेफ
मध्यप्रदेश